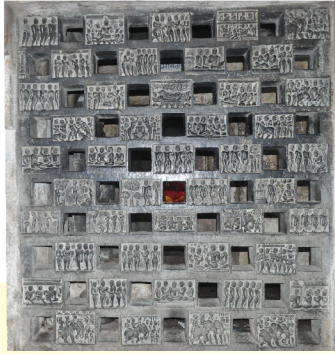




श्रुतकेवली भद्रबाहुस्वामी और सम्राट चन्द्रगुप्त का शिलालेख (चन्द्रगिरि पर्वत-श्रवणबेलगोला)

चन्द्रगिरि पर्वत (चिक्काबेट्टा/कटावप्र/तीर्थगिरि/ऋषिगिरि) नामों से जाना जाता है। यह जैन मतावलम्बियों का दक्षिण में सबसे प्राचीन तीर्थ स्थान है।

छोटे-छोटे झरोकों में सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य के जीवन के प्रसंगों को उत्कीर्ण कर संजोया गया है। जो भद्रबाहु मुनि के साथ यहां तक आये थे।

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि. वार तिथि नक्षत्र (नवम्बर 2017 मार्गशीर्ष कृष्ण)

16	गुरुवार	त्रयोदशी	चित्रा
17	शुक्रवार	चतुर्दशी	स्वाति
18	शनिवार	अमावस्या	विशाखा
(मार्गशीर्ष शुक्ल)			
19	रविवार	प्रतिपदा	अनुराधा
20	सोमवार	द्वितीया	ज्येष्ठा
21	मंगलवार	तृतीया	मूल
22	बुधवार	चतुर्थी	पूर्वाषाढ
23	गुरुवार	पंचमी	पूर्वाषाढ
24	शुक्रवार	षष्ठी	उत्तराषाढ
25	शनिवार	सप्तमी	श्रवण
26	रविवार	सप्तमी	धनिष्ठा
27	सोमवार	अष्टमी	शतभिषा
28	मंगलवार	नवमी	पूर्वाभाद्रपद
29	बुधवार	दशमी	उत्तराभाद्रपद
30	गुरुवार	एकादशी/द्वादशी	रेवती

(दिसम्बर 2017)

1	शुक्रवार	त्रयोदशी	अश्विनी
2	शनिवार	चतुर्दशी	मृगशी
3	रविवार	पूर्णिमा	कृतिका/रोहिणी
(पौष कृष्ण)			
4	सोमवार	प्रतिपदा	मृगशिरा
5	मंगलवार	द्वितीया	आर्द्रा
6	बुधवार	तृतीया/चतुर्थी	पुनर्वसु
7	गुरुवार	पंचमी	पुष्य
8	शुक्रवार	षष्ठी	आश्लेषा
9	शनिवार	सप्तमी	मघा
10	रविवार	अष्टमी	पूर्वा फाल्गुनी
11	सोमवार	नवमी	उत्तरा फाल्गुनी
12	मंगलवार	दशमी	हस्त
13	बुधवार	एकादशी	चित्रा
14	गुरुवार	द्वादशी	स्वाति
15	शुक्रवार	त्रयोदशी	विशाखा

तीर्थकर कल्याणक

- 19 नवम्बर : भगवान पुष्पदंत जन्म तप कल्याणक
- 29 नवम्बर : भगवान अरनाथ तप कल्याणक
- 30 नवम्बर : भगवान मल्लिनाथ जन्म तप कल्याणक
- 30 नवम्बर : भगवान नमिनाथ ज्ञान कल्याणक
- 2 दिसम्बर : भगवान अरनाथ जन्म कल्याणक
- 3 दिसम्बर : भगवान् संभवनाथ तप कल्याणक
- 5 दिसम्बर : भगवान् मल्लिनाथ ज्ञान कल्याणक
- 13 दिसम्बर : भगवान चन्द्रप्रभ जन्म-तप कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

- 21 नवम्बर : मुकावली व्रत
- 3 दिसम्बर : रोहिणी व्रत

शुभ मुहूर्त

- दुकान प्रारंभ : नवम्बर-16, 23, 29, 30, दिस.-1, 4, 13
- विवाह मुहूर्त : नवम्बर-23, 24, 28, 29, दिसम्बर-4
- गृहारंभ मुहूर्त : नवम्बर-27, 29, 30, दिस.-1, 3, 4, 6
- वाहन क्रय : नव.-16, 24, 26, 27, 29, दिस.-3, 4, 7, 13
- शिलान्यास : नवम्बर-27, 29, 30, दिस.-1, 3, 6
- मशीनरी : नवम्बर-16, 20, 30, दिस.-1, 6, 7, 13
- विद्या आरंभ मुहूर्त : नव.-23, 24, 29, 30, दिस.-6, 13
- चौपटी खरीदने का मुहूर्त : नवम्बर-17, दिसम्बर-7, 8

सर्वार्थसिद्धि

- 24 नवम्बर : 10/04 बजे से 25-12/49 बजे तक।
- 28 नवम्बर : 17/22 बजे से 30/53 बजे तक।
- 30 नवम्बर : 06/54 बजे से 30/54 बजे तक।
- 01 दिसम्बर : 06/54 बजे से 14/29 बजे तक।
- 04 दिसम्बर : 06/56 बजे से 27/21 बजे तक।
- 07 दिसम्बर : 06/58 बजे से 19/55 बजे तक।
- 10 दिसम्बर : 17/36 बजे से 31/01 बजे तक।
- 15 दिसम्बर : 25/31 बजे से 31/04 बजे तक।



सामाजिक
राष्ट्रीय
शैक्षणिक
विशेषांक



संस्कार सागर

• वर्ष : 19 • अंक : 223 • नवम्बर 2017

• वीर नि.संवत 2545 • विक्रम सं. 2074 • शक सं. 1939

लेख

- पशुबलि क्यों 9
- मरणशील मिट्टी की देह में आत्मा की ज्योति जलायें 12
- भारतीयता का प्रतीक : मूकमाटी 15
- आचार्य विद्यासागर साहित्य का शैक्षणिक क्षेत्र में योगदान 20
- कुरल काव्य में वर्णित शिक्षा तत्त्व 32
- मूकमाटी में निहित राष्ट्र-भाषा और स्वदेश प्रेम 38
- आचार्य विद्यासागर महाराज के साहित्य में चेतना 46
- सर्वाधिक दीक्षा प्रदाता: आचार्यश्री विद्यासागर 52
- जैनाचार्य श्रीमद् विजयवल्लभसूरीश्वरजी 68
- हर रोज अपने जीवन को नया अर्थ दे 74
- भारतीय साहित्य की अनुपम कृति : मूकमाटी 82

बाल कहानी

- पर्यावरण रक्षक अहिंसा 90

कविता

- प्रजातंत्र में वंशवाद 17
- धर्म ध्वजा फहरायें 19
- गुरुवर महान 29
- स्वर्णमयी भारत 30
- जय बोलो विद्यासागरजी की 91

कहानी

- अमरुद 76

नियमित स्तंभ

- पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 10
- चलो देखें यात्रा : 18 • आगम दर्शन : 28 • पुराण प्रेरणा : 50 • माथा पच्ची : 50 • कैरियर गाइड : 51
- दुनिया भर की बातें : 64 • इसे भी जानिये : 72 • दिशाबोध : 73 •
- आओ सीखें : जैन न्याय : 84 • हमारे गौरव : 88 • संस्कार गीत व बाल कविता : 89 •
- बाल संस्कार डेस्क : 90 • हास्य तरंग : 92 • समाचार : 92

प्रतियोगिताएं

:अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा : 95 : वर्ग पहेली : 97

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री
विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक

ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर-89895 05108

प्रबंध संपादक

ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़-94251 41697

कार्यकारी संपादक

ब्र. सुदेश जैन कोटिया इन्दौर-9826548159

सलाहकार संपादक

श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर-95425053111

पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस-9575634441

डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली-9818855130

महिला संपादक

डॉ. ज्योति जैन, खतौली-94128 89449

ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर-8989845294

अतिथि सम्पादक

डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर-97938 21108

अभिनंदन सांघेलीय, पाटन-9425863244

डॉ. पंकज जैन, भोपाल-9584201103

विनीत जैन प्राचार्य, सादूमल-9721419696

अक्षय अलया, ललितपुर - 9453031432

संयोजना

इंजी. अभिषेक जैन 'रिक्', इन्दौर-9827282170

प्रकाशक

श्री दिगंबर जैन युवक संघ,

इन्दौर (म.प्र.)

आंतरिक सज्जा : नीरज गुप्ता, इन्दौर 97542 40305

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का

बाकी सदस्यता शुल्क

जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की
स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग
करें। बकाया राशि में त्रुटि हो तो सुधार हेतु
हमें सूचित करें।

सदस्यता शुल्क

-आजीवन : **2100/-** (15 साल)

परम संरक्षक : **15000/-**

अपने शहर के

• स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (संस्कार सागर)

खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)

• भारतीय स्टेट बैंक (ब्र. जिनेश मलैया)

खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)

• ओरिएण्टल बैंक ऑफ कामर्स

खाता क्र. 07882151004198 (IFSC : ORBC0100788)

• आईडीबीआई बैंक (श्री दिगंबर जैन युवक संघ)

खाता क्र. 155104000037022

• आईसीआईसीआय बैंक (श्री दिगंबर जैन युवक संघ)

खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर
हमारे कार्यालय को सूचित कर सकते हैं।

कार्यालय

संस्कार सागर

श्री दिगंबर जैन पंचबालयति मंदिर,

सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड, इन्दौर-10

फोन नं. : 0731-2571851, 4003506

मो. : 89895-05108, 8717924109

website : www.sanskarsagar.org

e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

- ◆ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- ◆ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
- ◆ कथा-साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होते हैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
- ◆ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

- श्री दिगंबर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड, इन्दौर-10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी-1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

• सम्पादक महोदय, विगत
अंक संस्कार सागर अक्टूबर माह
में ऐलक सिद्धांतसागर द्वारा
सृजित कहानी हरपीज पढ़ी।
कहानी का शीर्षक देखकर ऐसा
नहीं लगा कि यह कहानी पूज्य

गुरुदेव पर केन्द्रित है उनके जीवन में आयी सबसे
बड़ी विपत्ति का आँखों देखा क्रमबद्ध बताया गया
है। कथावस्तु में नाटकीयता का समावेश पाठक की
रुचि को संवर्धित करती है। आचार्यश्री पर केन्द्रित
कहानी पढ़कर मेरा तन-मन स्फूर्ति मान हो जाता
है। आचार्य विद्यासागर जैसे चतुर्थ कालीन सम ऋषि
पर जो कलम चल जाती है मैं उसे धन्य मानता हूँ।
कहानी सोदेश्यीकरण और मानवीकरण करना
ऐलकश्री के लेखन की अपनी खूबी है जिसे पाठक
अच्छे से आत्मसात् करके संस्कार निर्माण की दिशा
में कदम बढ़ा देता। - डॉ. ज्योतिबाबू जैन, उदयपुर
(राज.)

• सम्पादक महोदय, विगत दिनों बेंगलुरु के पास
रामनगर में एनसीसी केम्प के छात्र तालाब में नहाने
और छात्र सेल्फी लेने में व्यस्त रहे जबकि एक छात्र
तालाब में डूबता रहा और अन्य छात्र सेल्फी लेते
रहे, और डूबने वाले छात्र की मौत हो गई। आये दिन
अलग-अलग सेल्फी के कारण दर्दनाक हादसे होते
रहते हैं। डूबते को न बचाते हुए सेल्फी में मशगूल
होना क्या अपराध नहीं है, तो भी इसे सेल्फी के
शौक को समझदारी तो नहीं माना जा सकता है।
भारत में सेल्फी की बीमारी महामारी का रूप ले रही
है। इस खतरनाक खेल के प्रति जागरूकता लाने की
पहली पाठशाला परिवार से अच्छा और कोई नहीं
हो सकता है। अभिभावक अपने बच्चों को ज्ञान दे
सकते हैं और संस्कार सागर पत्रिका भी सेल्फी के
खतरों के प्रति जागरूकता ला सकता है। ताकि सेल्फी
की लत भविष्य में किसी की जान पर भारी न पड़ने
पाए। - श्रीमती माधुरी जैन, सिरोंज

• सम्पादक महोदय, रेयान स्कूल के टायलेट में

पाती
पाठकों
की....



बालक प्रद्युम्न सिंह का शव
मिला। सारे देश का खून उबल
गया। मामला सुप्रीम कोर्ट तक
पहुँचा। अभिभावक गणों में खौफ
पैदा हुआ। प्रश्न असुरक्षित बचपन
को सुरक्षित कैसे बनाया जाये ?

स्कूलों में व्यवस्था सुधारने के नाम पर बहस चल
पड़ी। सीबीएसई तक आहत पहुँची। पर चने की
आवश्यकता है जब भी बच्चों के साथ दुष्कर्म व्यवहार
हुआ है उसमें नजदीकी लोग ही शामिल पाये गये
हैं। सब चीजों का बोझ शिक्षक पर डालना भी
अनुचित है। प्रबंधन प्रायः स्कूल से नदरत रहता
है। प्रबंधन को बच्चों की सुरक्षा की जिम्मेदारी उठाना
पड़ेगी तथा अभिभावकों को भी जागरूक होना
पड़ेगा। छोटी-छोटी बात पर कार्रवाई करना पड़ेगी
तथा सीबीएसई को गाईड बनाकर फीडबैक हर वर्ष
लेना होगा तब कहीं जाकर समस्या का समाधान
होगा और बचपन सुरक्षित होगा। श्रीमती रानु जैन,
दिल्ली

• सम्पादक महोदय, भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र
मोदी ने अपने जन्मदिन के अवसर पर सरदार सरोवर
बांध को राष्ट्र के लिए समर्पित किया। इस बांध का
शिलान्यास 1961 में हुआ और 1988 में
आवश्यक पर्यावरण संबंधी मंजूरी राजीव गांधी
सरकार ने दी। 56 वर्ष की लम्बी अवधि के बाद
सरदार सरोवर परियोजना को राष्ट्र के लिए समर्पित
किया जा सका। विस्थापितों के पक्ष में सुप्रीम
कोर्ट ने हस्तक्षेप किया सरदार सरोवर की अब
ऊँचाई 138.68 मीटर तक बढ़ाई जा चुकी है।
47 लाख 30 हजार एकड़ फीट पानी जमा हो
सकेगा। मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान और महाराष्ट्र
को इस परियोजना का लाभ मिलेगा। हालांकि
विस्थापन से जुड़े सवाल अब भी पूरे नहीं हुये। मानव
अधिकार की दृष्टि से यह परियोजना कितनी उपयुक्त
रहेगी यह कहना अभी जल्दबाजी होगी। - अंशुल
पाराशर, लटेरी

भक्ति तरंग

आयो शरण तिहारे



जाऊँ कहाँ तज शरण तिहारे ॥टेक ॥
चूक अनादि तनी या हमरी,
माफ करो करुणा गुन धारे ॥1॥
डूबन हो भवसागर में अब,
तुम बिन को मुह वार निकारे ॥2॥
तुम सम देव अवर नाहिं कोई,
तातैं हम यह हाथ पसारे ॥3॥
मो-सम अधम अनेक उधारे,
वरनत है श्रुत शास्त्र अपारैं ॥4॥
दौलत को भवपार करो अब,
आयो है शरणागत थारे ॥5॥

अर्थ - हे प्रभु ! मैं आपकी शरण को छोड़कर कहाँ जाऊँ ? मैं अब तक आपकी शरण में नहीं आया। अनादिकाल से मेरी यह ही चूक रही है। हे करुणा गुण के धारक ! इसके लिए मुझे क्षमा करो।

मैं भव सागर में संसार में डूब रहा हूँ, आपके अतिरिक्त कौन है जो मुझे इससे बाहर निकाल सके।

आपके समान अन्य कोई देव नहीं है, जिसके आगे हम हाथ पसारकर याचना कर सके।

आपने मेरे समान अनेक पापियों को पार उतार दिया है, गुरु और शास्त्र इसका वर्णन करते हैं।

दौलतराम कहते हैं कि मुझे भी अब भव से, संसार से, जन्म-मरण की भटकन से पार लगाइए, मुक्त कीजिए। मैं अब आपकी शरण में आया हूँ।



मौत का खेल

वर्तमान में संत शिरोमणि राष्ट्र आचार्य विद्यासागर जी की 50 वीं दीक्षा वर्ष चल रहा है उन्होंने कहा भारत बोलो इंडिया नहीं तथा पश्चात्य देशों के हम पिछलग्गू ना बनें; क्योंकि जो पिछलग्गू बन कर रहते हैं, वे पीछे रह जाते हैं, छोटी सोच वाला और पैरों में मोच वाला कभी आगे बढ़ नहीं पाता। हिन्दी भाषा को राष्ट्रीय भाषा की ओर ले जाने वाले पहले जैन संत उनकी वाणी में जादू तो है ही साथ ही राष्ट्र समाज में क्रांति लाने की ललक है। वे भले ही अपने नाम के आगे पीछे क्रांतिकारी शब्द नहीं लगाते किन्तु क्रांतिकारी सोच के साथ युवा वर्ग को बेरोजगारी से बचाने के साथ-साथ देशभक्त, ईमानदार, बहादुर, जिम्मेदार, युवा बनाने के सपना जरूर देखते हैं। उनके अंदर युवा वर्ग, किशोर वर्ग को ऐसी प्रेरणा संस्कार देने की चाहत है कि जिससे वह जीने की और मरने की कला सीख जाये। बहुमूल्य जिन्दगी कैसे जीना चाहिए की स्पष्ट योजना बना सके।

वर्तमान में खेल के उद्देश्य, मायने ही बदलते जा रहे हैं। खेल का प्राण शारीरिक विकास दूर खड़ा अपने को अलग-थलग महसूस कर रहा है। खेल उद्देश्य में मात्र मनोरंजक तत्व प्रमुखता से आगे रखा जा रहा है। निर्णय क्षमता, भावात्मक विकास, ज्ञान, अर्जन, मानसिक विकास जैसे खेल के मूलभूत लक्ष्यों को आज पूर्णरूप से बाहर निकाला जा रहा है, खेल-खेल में सीखने-सिखाने की प्रवृत्ति को गौण किया जा रहा है। पारस्परिक खेल कबड्डी, खो-खो, हॉकी, फुटबाल, बॉलीबाल खेल से अब हमारा किशोर वर्ग अपरिचित सा होता जा रहा है। ये मैदानी खेल सीमित होते जा रहे हैं। मैत्री, प्रेम, करुणा, की सद्भावना को विकसित करने वाले बौद्धिक खेलों से अब किशोर वर्ग का दूर का भी नाता नहीं रहा है। वे सिर्फ व्हाट्स-

अप, फेस-बुक और वीडियो गेम से ही चिपके रहते हैं। और अंत में खतरनाक खेलों से जुड़ जाते हैं परिणाम कुछ भी हो, वे लक्ष्य से भटक जाते हैं।

वीडियो गेम की पृष्ठ भूमि ही हिंसात्मक रही है कई वर्षों से चल रहे ये सिर्फ मानीटर/स्क्रीन के खेलों में उलझा हुआ युवा किशोर वर्ग अपनी प्रतिभा निखारने की अपेक्षा मात्र क्षणिक आनंद और मनोरंजन में अपना अमूल्य समय खो देता है, हमारी भावी पीढ़ी को ज्ञात नहीं है कि उसके जीवन का लक्ष्य क्या मात्र मनोरंजन में ही डूब जाता है अथवा उसे आगे बढ़कर देश, समाज, परिवार के प्रति कुछ दायित्व को निभाना है। व्यक्तिगत जीवन में शांति, आनंद और सुख पाने के लिए आध्यात्मिक दृष्टिकोण भी समझना होंगे, खेल का लक्ष्य मात्र विजय प्राप्त करना नहीं है अपितु असफलता में आनंद मनाना है। निराश होकर जीवन समाप्त करने की बात सोचना खेल के साथ बेईमानी है। 'खेल' का अर्थ 'असफलता के बाद सतत् प्रयास करते हुए सफलता अर्जित करना है।' बॉस्केटबाल के मशहूर खिलाड़ी माइकल जार्डन ने कहा कि मैं बार-बार असफल हुआ हूँ, इसलिए आज मैं सफल हूँ।

शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक विकास के लक्ष्य से संरचित खेलों में प्रतिभा निखारने के बहुत अवसर हैं परन्तु आज युवा वर्ग किशोर वर्ग मात्र मोबाइल से चिपकना चाह रहा है और खतरनाक मौत के सौदागर खेल ब्लू-व्हेल जैसे खेलों से जुड़कर मात्र जुनूनी बन रहा है। हिंसक, क्रूर, संवेदना शून्य होकर कायराना हरकत कर रहा है। राष्ट्र की अमूल्य धरोहर हमारा युवा वर्ग होता है। विश्व की समस्त क्रांतियां युवा ने ही संचालित की हैं। किसी विदेशी शक्ति ने ब्लू-व्हेल गेम को भारत में भेजकर हमारी युवा शक्ति को कमजोर करने का प्रयास किया है।

इस षडयंत्र को समझने की जरूरत है। आत्महत्या की प्रेरणा देने वाला खेल कभी भी कल्याणकारी नहीं हो सकता है, युवा संपदा को सुरक्षित करने के लिए सभी वर्ग को जागरूक होना पड़ेगा और विकृति फैलाकर युवा शक्ति पर प्रहार करने वाले षडयंत्र का भंडाफोड़ करना होगा ब्लू-व्हेल जैसे मौत के खेल से अपने किशोर और युवा वर्ग को दूर रखना होगा।

पशुबलि क्यों

• मेनका संजय गांधी •

कुछ महीनों पहले मैंने एक फिल्म देखी जिसमें दिखाया गया था कि गोरों का एक समुदाय है जो काफी अच्छा और कानून पालन करने वाले लोगों का है। लेकिन उन्हें साल में एक बार दीवानगी की हर्ष पार करने का हक है। उनको किसी भी अश्वेत को जान से मार डालने की कानून छूट मिली हुई है। फिल्म में ऐसे परिवार की कहानी दिखाई गई है, जो कि किसी अश्वेत की जान बचाता है तो कैसे पड़ोसी उसे अपना शिकार बनाते हैं। भारत में बकरीद पर कानूनी छूट है कि बकरी या किसी अन्य जानवर को मारा जा सकता है। सरकार या पुलिस को इससे कोई सरोकार नहीं है। लोग पश्चिमी बंगाल और केरल में गाय को भी मारते हैं। हैदराबाद, केरल, तमिलनाडु, दिल्ली और मेरठ में ऊंटों व भैसों को मारा जाता है जो वैध है। बकरी को जान से मारने को लेकर भी कई कानून हैं, लेकिन किसी को परवाह नहीं है। इन जानवरों का खून बहकर नदी के पानी में मिल जाता है। कुछ इलाके ऐसे हैं, जहां कच्चे मांस से पूरे इलाके में दुर्गन्ध फैल जाती है। समाज में हर तरह की क्रूर और अनावश्यक जीव हिंसा का विरोध समय-समय पर होता आया है चाहे वह किसी भी समुदाय से जुड़ी हो। देश में कई जगहों पर नई फसल की कटाई के दिन मकर संक्रान्ति को पशु बलि की परपाटी रही है। कर्नाटक में एक

कुप्रथा के तहत कई लोमड़ियों का शिकार किया जाता है। गायों को पीट-पीट कर बहते पानी में दौड़ाया जाता है। उसमें देखा गया है कि पक्षी के शिकारी हजारों बुलबुलों को पकड़कर ग्रामीणों को बेच देते हैं। जो उन्हें एक पिंजरे में कैद करके रखते हैं और ये बुलबुलें पिंजरे में जब तक लड़ती हैं, जब तक कि इनमें से किसी एक की मौत न हो जाए। आंध्रप्रदेश में लाखों मुर्गों को अंधेरे पिंजरे में रख उन्हें चोट पहुँचाने का खेल, गोवा में बुल फाइट, महाराष्ट्र में गाय व घोड़ों को दौड़ाने के खेल क्रूरता की पराकाष्ठा के उदाहरण हैं। इन खेलों के दौरान कभी-कभी तो इंसानों की भी मौत हो जाती है। हालांकि इनमें से कई खेलों पर अब कानूनी रोक है, लेकिन कुछ राजनेता निजी हितों के चलते इनकी पैरवी करते नजर आते हैं। गुजरात में सात दिन के पतंग महोत्सव के दौरान तीन लाख से ज्यादा पक्षी मारे जाते हैं। चाइनीज मांझे पर रोक के बावजूद इसका इस्तेमाल पक्षियों के लिये सब जगह घातक साबित हो रहा है। जली कटू भी इसी क्रूरता का एक और उदाहरण है जिस पर सर्वोच्च न्यायालय ने गत वर्ष ही रोक लगाई है। दरअसल किसी भी धर्म में ऐसी क्रूर हिंसा का उल्लेख नहीं मिलता। लेकिन निजी स्वार्थों के चलते सभी अपनी संस्कृति का हवाला देते नजर आते हैं।



अंयम स्वास्थ्य योग

मैथी सम्पूर्ण भारत में उत्पन्न होती है। इसके हरे कोमल पत्ते सब्जी के रूप में बहुत उपयोगी है एवं बीज मसाले के रूप में एवं औषधि रूप में उपयोग जाए जाते हैं।

पर्याय नाम- संस्कृत-मेथिका, मेथी, दीपनी, बहुपत्रिका, कुच्चिका, पीत बीजा।

हिन्दी, बंगालीस, गुजराती, पंजाबी, राजस्थान-मेथी, मेंथी दाना

कन्नड़ - मेथिका मेन्ते

तामिल - बेन्दाम, मेन्ती, कुरा

फारसी - तुख्में शम्लीत

अंग्रेजी - फेनू ग्रीक Fenul Greek

लेटिन - ट्रिगोनेला फोइनम, ग्रीमक Trigonella Foenum Graecum Linn

रासायनिक संगठन - मैथी दाना (बीज) में कषाय द्रव्य (Tannin) शर्करा रहित पीत रंज द्रव्य एवं वसामय तेल 6% रात एवं लुआव 28% एल्ब्युमिन 21 % कोलीन एवं मेथीन (Trigonella) एवं 25% मास्वराम्ल होता है। इसका रासायनिक संगठन कांड लिवर आइल के समान होता है इसमें शरीर में शीघ्र अभिशोषित होने योग्य काफी प्रमाण में सैन्डिक स्वरूप का लौह भी होता है। बीजों को जलाने से 7% राख मिलती है इसमें 1/4 फास्फोरस एसिड होता है, बीजों में 6% तेल होता है।

गुणधर्म - तिक्त कटु रस, उष्णवीर्य एवं विषाक कटु होने से कफ वात शामक है। अतः

तुलसी

• श्रीमती आशा जैन, इन्दौर •

वात प्रकृति एवं कफ प्रकृति वालों के लिए हितकारी है। मैथी पाचन संस्थान पर विशेष प्रभाव डालती है। मैथी का सेवन करने पर लाल स्त्राव (Salvia) अधिक होता है। यह अमाशय, यकृत, आंत रक्तमिशरण एवं वातनाडियों पर उत्तेजक असर दिखलाता है। अमाशय रस स्त्राव बढ़ता है। जिससे अमाशय मंथन क्रिया में तेजी आती है जिससे आंत को यकृत पित्त अधिक मिलता है इससे आम का पाचन होता है। आमका पाचन अच्छा होने से आहार रस सबल बनता है एवं रक्तादि धातुएं बलवान बनती है धातु में के भीतर की पाचन क्रिया तेज होने से उसमें लीन विष एवं मल जल जाता है। इस तरह से भोजन में मैथी का प्रयोग आम वात आदि का पाचन कर शरीर को निरोग एवं सबल बनाती है।

औषधीय प्रयोग -

1. यह गर्भाशय को उत्तेजना प्रदान करती है अनार्तव (मासिक धर्म का न आना या कम आना) में इसका काढ़ा पिलाते हैं एवं कटिस्नान भी कराते हैं। जिन महिलाओं की वात कफ प्रकृति है एवं मासिक धर्म समय पर नहीं आता है या बहुत कम आता है। उनके लिए मैथीदाना चूर्ण या मैथी को उबालकर उसका पानी 4-4 चम्मच सुबह शाम लेने से लाभ होता है।

2. आमवात के कारण घुटनों का दर्द, कमर का दर्द, हाथ पैर एवं पैर की एड़ी का दर्द संधिवात आदि रोगों में मैथी का चूर्ण 1-1 चम्मच सुबह

शाम लेने से लाभ होता है। सभी तरह के दर्द में मैथीदाना लाभप्रद है।

3. मैथी के नियमित प्रयोग से फेफड़ों में एवं छाती में जमा हुआ कफ निकल जाता है। इसमें श्वास कास आदि वात, कफ, गठिया रोग एवं संधिवात में लाभप्रद है।

4. चार मैथीदाना चूर्ण 1-1 चम्मच सुबह शाम पानी या छाछ के साथ सेवन करने से लाभ होता है।

5. हृदय की निर्बलता एवं जीर्ण आमवात में मैथी चूर्ण एवं सोंठ चूर्ण मिलाकर 1-1 चम्मच सुबह शाम सेवन लाभ होता है या गुड़ मिलाकर इसकी छोटी-छोटी गोलियाँ बनाकर रख लें। सुबह-शाम 2-2 गोली सेवन करें।

6. आंत की निर्बलता के कारण मलावरोध होता है या कभी कब्ज एवं कभी दस्त होता है तो मैथीचूर्ण 1/2 चम्मच सुबह शाम प्रतिदिन लें। प्रयोग 1 माह तक लगातार करें लाभ होगा।

7. मैथीदाने नियमित सेवन से यकृत को भी बल मिलता है एवं आहार का पाचन सही होता है। इस समय हलका सुपाच्य भोजन करना चाहिए। घी, शक्कर आदि कम लें।

8. मूत्राशय की कमजोरी से मूत्र धारण शक्ति कम हो जाती है। जिससे बार-बार पेशाब होती है। 1/2 मैथीदाना सुबह-शाम 1 मास तक सेवन करने से लाभ होता है। या मैथी के पत्तों का रस में मिश्री मिलाकर सेवन करें।

9. सतिका रोग में लड्डू अति हितकर है। इससे कमर दर्द हाथ, पैरों का दर्द पेट में भारीपन, वायु विकार, अग्निमाद्य भूख कम लगना या

पाचन सही न होना श्वेत प्रदर आदि में लाभ होता है।

10. प्रसूति के बाद मैथीदानों के सेवन से गर्भाशय संकोच अच्छा होता है। एवं श्वेत प्रदर आदि की शिकायत नहीं होती है।

11. गर्भाशय शिथिल होने से जल सहशय पतला स्त्राव योनि कार्य होता रहता है। गर्भाशय से संबंधित सभी रोगों में मैथीदाना चूर्ण गुड़ मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है।

12. बार-बार सर्दी जुकाम एवं श्वास रोग होने पर जीर्ण कफ युक्त कास में मैथीदाना 1/2 चम्मच सुबह शाम लेने से लाभ होता है। फेफड़ों में जमे हुए कफ को बाहर निकालती है।

13. मैथीदाना एवं अलसी को पीसकर लेप करने से बदन की गांठ बैठ जाती है एवं शोभ (सूजन) वाले स्थान पर लगाने से सूजन कम हो जाता है।

14. जीर्ण आमातिसार में मैथी के पत्तों का रस चम्मच में शक्कर मिलाकर शर्बत बना कर पिलायें। या मैथीदाने का चूर्ण जीराचूर्ण एवं सेंधा नमक मिलाकर छाछ के साथ सेवन करने से लाभ होता है। यह प्रयोग आमातिसार एवं संग्रहणी रोग में अति लाभप्रद है।

15. मैथी के पत्ते शीतल पित्तशामक पाचन, आनुलोमिक और शोथहन है।

16. पित्त प्रकृति के लोगों के कब्ज में मैथी का साग खिलाने से दस्त साफ होता है।

17. व्रणशोथ में पत्ती के लेप से दांत और सूजन कम होती हैं।

18. पित्त ज्वर में पत्ती का रस देते हैं।

मरणशील मिट्टी की देह में आत्मा की ज्योति जलायें

• डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर •

पर्व हमारी संस्कृति के पोषक हैं, जीवन शक्ति है। दीपावली भारतीयों का एक बड़ा ही महत्वपूर्ण पर्व है। हिन्दू और जैन परंपरा में दीपावली का खासा महत्व है।

दीपक की भांति मनुष्य की देह भी मिट्टी ही है, किन्तु उसकी आत्मा मिट्टी की नहीं है। वह तो इस मिट्टी के दीपक में जलने वाली अमृत ज्योति है। हालांकि मनुष्य लोभ, मोह, मद, अहंकार की मोटी परतों से दबा-ढंका अपने स्वरूप को भूला बैठा है, वह स्वयं को मात्र मिट्टी की देह समझ बैठा है और मिट्टी की दस देह का श्रृंगार करने में इतना अलमस्त हो गया है कि आत्मज्योति का चिरंतन सच अंधकार में कहीं खो गया है। दीपक की मिट्टी में ज्योति जब तक न उतरे, वह अपनी सचाई से वाक्फिर नहीं हो सकता। जैसे कि हम अपने वास्तविक स्वरूप से दूर-दूरतम रहने के कारण इंद्रियों से निर्मित देह में विचरण करने लगते हैं और इस भ्रम को सच मान लेते हैं। भ्रम का यह आवरण हमें सघन अंधकार में जीने को विवश करता है। इससे जिंदगी की घुटन और छटपटाहट फिर से तीव्र और घनी हो जाती है।

आज चारों ओर का वातावरण भयावह है और हरेक व्यक्ति आगे बढ़ने की होड़ में अपनों को ही पछाड़ना चाहता है। आज

महाभ्रष्टाचारी, रिश्वतखोरी, आतंकवादी क्रियाशील हैं। इनकी करतूत और कारनामों से अतीत के सारे आतंककमतर नजर आते हैं क्या हमने कभी अपने उन भाइयों की ओर तनिक भी ध्यान देने का प्रयास किया है जिनको दो वक्त की रोटी भी सुकून से नहीं मिल पा रही है। परिवार आर्थिकतंगी का शिकार है। हम लाखों करोड़ों रूपयों को पटाखों के चलाने में व्यर्थ ही खो देते हैं, जिससे हमारा पर्यावरण भी प्रदूषित तो होता ही है साथ ही अनेक घटनाएं जान-माल की हानि भी देखी जाती हैं। क्या हमने कभी दीपावली पर यह संकल्प लेने का मन बनाया है क्या अंधकार में जीने वाले उन लोगों के प्रति सहयोग करने की भावना भायी है? क्या जो हम पटाखों में लाखों रुपये व्यर्थ वर्बाद करते हैं वह धन अपने बेसहारा, असहाय और गरीब भाइयों की जिंदगी में नया सवेरा भरने में नहीं लगा सकते? आज हम पुण्योदय से आर्थिक रूप से मजबूत हैं, तो इसका मतलब यह तो नहीं कि हमारा जो भाई पापोदय से आज आर्थिक संकट के कारण दुख में है हम उसकी



सहायता नहीं कर सकते? आज बड़ी बिड़म्बना है कि हम अपने ही लोगों को आगे बढ़ता नहीं देख सकते

**बड़े अजीब से आजकल
इस दुनिया के मेले हैं।
दिखती तो भीड़ है,
पर चलते सब अकेले हैं।**

जीवन एवं समाज के इस अवसाद और अंधेरे को सदा-सर्वदा के लिए दूर करने के लिए दीपक के सच की अनुभूति का गहरा अनुभव आवश्यक है।

दीपावली पर दीपक जलाते समय दीपक के सच को समझना आवश्यक है। अन्यथा दीपावली की प्रकाशपूर्ण रात्रि के पश्चात् केवल बुझे हुए मिट्टी के दीपक हाथों में रह जाएंगे। आकाशीय अमृत-आलोक खो जाएगा। दीपक का सच उसके स्वरूप में है। दीपक मरणशील मिट्टी का होकर भी इस ज्योति का अवतरण कर धारण करने का सबल माध्यम है। दीपक जलता है, आलोक बिखेरता है और तत्पश्चात् अपनी मरणशील मिट्टी में समा जाता है। मोल है जलते हुए प्रदीप्त दीपक का, मोल बुझे दीपकों का नहीं होता। **दीपक** का तात्पर्य है- अपनी वर्तिका में अग्नि को धारण कर प्रकाश बिखेरना। यह घटना असाधारण है और असाधारण है तिल-तिल जलने-गलने का वह संकल्प, जो उसकी मरणशीलता में अमृत घोलता

है। इस मिट्टी की ज्योति तो अमृतमय आकाश की है। जो धरती का है, वह धरती पर ठहरा है, लेकिन उर्ध्वगामी ज्योति तो निरंतर आकाश की ओर भागी जा रही है।

जब तक अंतर गगन में दीपक का प्रेम, कृष्णा, दया, सेवा, सहयोग एवं परोपकारिता वाला प्रकाश जगमगाएगा नहीं, मानवता के इस अंध एवं काले तमस को दूर नहीं किया जा सकता है। जब तक मन स्वप्न गगन में स्वच्छ विचारों की रोशनी नहीं उठेगी, हृदय के धवल आकाश में भावनाओं का निर्मल प्रकाश नहीं फूटेगा, वैमनस्यता, अमानवीयता जैसी अहंकारी प्रक्रिया थमेगी नहीं। जिस दिन मानव के अंतर को दीपोत्सव पर्व की एककोमल, जगमगाती रोशनी छू लेगी, उसी दिन से जीवन की कुहासा निराशा छंटने लगेगी और जीवन आलोक का नया प्रतीक, पर्याय बन जाएगा। इस आलोक में ही जीवन का लक्ष्य दृष्टिगोचर हो सकता है और इस लक्षित लक्ष्य का सघन मर्म समझ में आ सकता है।

दीपावली पर जलने वाले दीपकों की संख्या एक-दो नहीं, हजारों होती है, परंतु इससे बाहर का अंधकार मिटता है, अंतर का अंधकार तो यथावत् बना रहता है। अच्छा हो कि इस दीपावली में दीपक के सच की इस अनुभूति के साथ हम एक दीपक जलाएं, ताकि इस मरणशील मिट्टी की देह में आत्मा की ज्योति मुस्करा सके।

मिट्टी के दीपक में मनुष्य की जिंदगी का बुनियादी सच समाया है। ऐसा सच जो हमारा अपना है। ऐसा सच जिसमें हमारा अनुभव पल-पल धड़कता है। यह सच ही हमारी धरोहर एवं थाती है, जो कहता है कि तुम स्वयं ज्योति स्वरूप हो, आत्मस्वरूप हो। अपने अंदर की ओर झांको! अंतर्गता करो! अंदर में ही सब कुछ समाया हुआ है। दीपावली की अनेक पौराणिक कथाएं हैं। इस दिन भगवान राम आतंक के महापर्याय रावण का वध करके जब अयोध्या नगरी लौटे तो उनका स्वागत प्रकाश महोत्सव के रूप में हुआ। उस दिन हर आंगन में दीपों की कतार लगाई गई। जैनधर्म के अनुसार इस दिन तीर्थंकर महावीर स्वामी को निर्वाण की प्राप्ति हुई थी और गौतम गणधर को केवलज्ञान की उपलब्धि हुयी थी। इस अवसर पर जैन समुदाय निर्वाण लाडू चढ़ाकर और दीपक प्रज्ज्वलित कर अपनी

खुशी का इजहार करता है। ऐसी अनेक और भी पौराणिक कथाएं हैं। इन कथाओं से हम सभी सपरिचित हैं, परंतु परिचय की इस लंबी प्रक्रिया में हम यदि किसी चीज से अपरिचित रह जाते हैं तो इस महापर्व के गहरे मर्म से। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी दीपावली धूमधाम से मनाई जाएगी। दीप जलाए जाएंगे। मिठाइयां बांटी जाएंगी। नए-नए अलंकार एवं परिधानों का उपयोग किया जाएगा। श्रृंगार अपनी चरम सीमा को स्पर्श करेगा। उमंग एवं प्रकाश से मिश्रित इस महोत्सव में ऐसा होना तो समृद्धि का प्रतीक है।

दीपावली का मूल मर्म है कि दीपक का प्रकाश हमारे अंदर भी प्रकाशित हो और बाहर भी आलोकित हो।

है अगर विश्वास तो, मंजिल मिलेगी यकीनन। शर्त यह है कि, बिन रुके चलना पड़ेगा। जिस तरह भी हो, अंधेरे की हुकूमत, उस जगह पर दीप-सा जलना पड़ेगा।

कुण्डलपुर में हुआ संयम कीर्ति स्तम्भ का शिलान्यास

दमोह (कुण्डलपुर)। कुण्डलपुर में आचार्य विद्यासागर जी महाराज के 50 वें स्वर्ण जयंती वर्ष की स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिये क्षेत्र पर संयम कीर्ति स्तम्भ का भव्य शिलान्यास किया गया। इस स्तम्भ को शीघ्रता से पूर्ण करने के प्रयास किये जायेंगे। कीर्ति स्तम्भ को शीघ्र निर्मित कर समाज को समर्पित किया जायेगा। शिलान्यास के अवसर पर प्रबंधकारिणी कमेटी के पदाधिकारी विमल लहरी, नवीन निराला, सतोष इलेक्ट्रिकल, शेलेन्द्र मयूर, जिनेन्द्र उस्ताद आदि की उपस्थिति रही।

भारतीयता का प्रतीक : मूकमाटी

• मुनि अजितसागर महाराज •



भारत की धरती धन-सम्पदा से सदा भरपूर रही है, पर उससे बड़ी भारत की कोई सम्पत्ति है, तो वह है हमारे भारत के सन्त और साहित्य। ये दोनों हमारे भारत की संस्कृति का परिचय कराते हैं। सन्त भारत का वह सजग प्रहरी है, जो मानव के अन्दर मानवीय चेतन को जागृत करने का काम अपने वचनों से, प्रवचनों से, एवं साहित्य सृजन से करता है। हमारे भारतीय संस्कृति में व्यक्ति को जन्म से नहीं, उसके कर्म से महान बनाने की बात करती है। भारत की अनमोल निधि अगर कोई है तो सन्त हैं, और दूसरी अहिंसा है। हमारे जितने भी महामानव हुए, उन्होंने अपने जीवन में सदाचार, सद्बिचार और सम्यक् आचार एवं शाकाहार को अपने जीवन का अंग बनाकर जीवन जिया है।

भारत में अनेक दर्शन, सम्प्रदाय हैं। सभी अपने दर्शन, सिद्धांत एवं परम्परा के माध्यम से धर्म आराधन करते हैं, और अपने जीवन में अहिंसा और आचरण को अपने जीवन का अंग बनाते हैं। भारतीय दर्शन में

अनेक ऋषि, मुनि आदि हुये। सभी ने धर्म को धारण करके, अपने पास आने वालों को धर्माचरण में लगाया। सन्त का चिन्तन मनन हमेशा “वसुधैवकुटुम्बकम्” की भावना का लेकर हुआ है।

ऐसी ही सन्त परम्परा में जैन दर्शन में अनेक आचार्य मुनि हुए उनमें इस बीसवीं शताब्दी में दिगम्बर जैनाचार्यों की परम्परा संस्कृत साहित्य मर्मज्ञ महाकवि ज्ञानमूर्ति आचार्यश्री ज्ञानसागर जी महाराज हुए, जो अनेक संस्कृत महाकाव्य, चम्पूकाव्य और ग्रन्थों के सृजेता हुए थे। उनके ही करकमलों से दीक्षित प्रथम मुनि, जो आज वर्तमान जिनशासन की शान है, जिन्हें आज जैन समाज प्रथम स्थान अपने आदर्श के रूप में देती है। ऐसे आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज हैं। जो मूल में दक्षिण भारत कर्नाटक के बेलगाँव जिला के अन्तर्गत सद्दलगा ग्राम में जन्में, और इनकी मातृभाषा कन्नड़ भाषा रही है। ऐसे महान आचार्य, महाकवि, परमपूज्य आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज हिन्दी साहित्य सृजन के क्षेत्र में अद्भुत आश्चर्यकारी महासन्त और महाकवि हैं। जिन्होंने हिन्दी साहित्य जगत के लिये “मूकमाटी” जैसा महाकाव्य अपनी

मनीषा, बुद्धि, चिन्तन की गहराई में डुबकी लगाकर इस महान कृति का सृजन किया।

हिन्दी साहित्य जगत के अनेक विद्वानों ने जब मूकमाटी को पढ़ा, और महाकाव्य परम्परा की अनोखी कृति कहा-मूकमाटी के लिये। बिना किसी पुरुष-स्त्री या किसी मानव को नायक-नायिका बनाये बिना पद-दलित माटी को चिन्तन का विषय बनाया और बहुत कम समय में लिख दिया एक महाकाव्य, जिसने सबको आश्चर्य में डाल दिया। एक कन्नड़ भाषी जिसे हिन्दी आती नहीं थी, पर गुरुवर श्री ज्ञानसागर जी महाराज के समीप रहकर हिन्दी का क ख ग पढ़कर इतना ज्ञान अर्जन किया कि एक हिन्दी मातृभाषी भी नहीं कर पाये। आज मूकमाटी महाकाव्य एवं आचार्यश्री जी के द्वारा विरचित साहित्य पर करीब आधा शतक विद्वानों ने एम.फिल., पी.एचडी. शोध प्रबन्ध आदि लिखे हैं।

मूकमाटी महाकाव्य में आचार्यश्री ने भारतीय संस्कृति प्राचीन परम्परा, लोकनीति, सन्त संगति लोक व्यवहार, समाज व्यवस्था, राज्य व्यवस्था, स्वास्थ्यनीति, शिक्षा आदि-आदि अनेक विषयों को लेकर करीब 500 पृष्ठों में अपनी चिन्तन-मनन और आचरण को अपनी कलम के माध्यम से अपने भावों को शब्द का रूप देकर अंकित किया है। जब

साहित्यकारों ने मूकमाटी को पढ़ा तो उनकी कलम से लिखा गया कि मूकमाटी तो कवि की अन्तस् कर्म की परिणति का प्रतीक है। मूकमाटी तो एक दार्शनिक सन्त की आत्मा का संगीत है। यह तो सन्त की साधना का जीवन्त प्रतीक है। जो सन्त आत्मसाधना के साथ अपने मंगलकारी कदमों से जीवों की रक्षा करते हैं। वे ही सन्त अपनी अनुभूतियों को शब्द का रूप देकर ऐसे काव्य की रचना करते हैं। मूकमाटी में एक अनोखी प्रेरणा साहित्य प्रेमीजनों को मिलती है। आचार्यश्री जी तो शब्दशिल्पी हैं। शब्दों को विलोम करके एक नयी अर्थ-प्रेरणा साहित्यकारों को दी वे लिखते हैं -

राही बनना हो तो हीरा बनना है,
स्वयं राही शब्द ही
विलोम रूप से कह रहा है

रा-ही..... ही...रा.....

आगे लिखते हैं-

राख बने बिना

खरा-दर्शन कहाँ ?

दया का विलोम करते हुए गजब लिखते हैं -

स्व की याद ही

स्व दया है,

विलोम रूप से भी

यह अर्थ निकलता है,

या...द,द...या

आदि अनेक जगह ऐसे शब्दों के शिल्पी

आचार्यश्री जी ने लिखा है। सूक्तियों का अपार भण्डार इस मूकमाटी में भरा पड़ा है। आत्मशक्ति को जाग्रत करने वाले सूत्र बहुत जगह है।

मूकमाटी के बारे में कितना लिखूँ शब्द नहीं, उससे पहले मूकमाटी के प्रणेता जिनकी चर्या, साधना, चिन्तन अद्भुत है। भगवान महावीर स्वामी के बाद केवली श्रुतकेवली और अनेक अंगधर आचार्य हुये और 2 हजार वर्ष पूर्व आचार्यश्री कुन्दकुन्दाचार्य हुये जिन्होंने अध्यात्म के माध्यम से श्रमण संस्कृति को एक दिशा प्रदान की थी, और

उसके बाद आज वर्तमान में आचार्यश्री कुन्दकुन्द के प्रतिरूप, जिन्होंने श्रमण परम्परा को नवचेतना दी है। आज जिस उत्तर भारत में कभी-कभार मुनिराजों के दर्शन होते थे, आज पूज्य आचार्यश्री ने अपनी साधना, ज्ञान के माध्यम से सबसे अधिक इस उत्तर भारत के श्रमण, मुनियों का समुदाय देखने को मिलता है। ऐसे मूकमाटी महाकाव्य के प्रणेता हम सभी का उद्धार करने वाले परम पूज्य आचार्यश्री जी के चरणों में नमन करता हूँ और अपनी कलम को विराम देता हूँ।

प्रजातंत्र में वंशवाद

प्रजातंत्र में वंशवाद
बिगाड़ रहे जनता का स्वाद।
पहले दादा और दादी ने जीमा
फिर पापा और मम्मी ने जीमा
अब इन्हें आ रहा जब स्वाद
प्रजातंत्र में....



राजा भी यही, रानी भी यही
युवराज भी पैदा हो गये हैं यहीं।
जिन्दाबाद और जयकारों से,
चमचे बढ़ाये इनका रूआब।
प्रजातंत्र में....

हेक्टर भी यहीं, वीघा भी यहीं
मीठा भी यही, खट्टा भी यही।
है किसमें हिम्मत,
जो बिगाड़ सके कल्लू का स्वाद
प्रजातंत्र में....

झण्डा भी यही, डण्डा भी यही।
मुर्गी भी यही, अण्डा भी यही।
सड़ रहा लोकतंत्र, पड़ रहा मवाद।
प्रजातंत्र में....

• सुभाषचन्द 'सरल', अशोकनगर •

मध्यप्रदेश के प्रसिद्ध आदिनाथ भगवान के तीर्थ

• इंजी. आई.एम. जैन. (पहाड़िया) इन्दौर •



मध्यप्रदेश भारतवर्ष के मध्य तथा क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा प्रदेश है, इस प्रदेश में किसी भी तीर्थकर का पांचो में से कोई कल्याणक नहीं हुआ, परन्तु अतिशय क्षेत्रों के मामले में यह अत्यन्त समृद्ध है। यहाँ करीबन सत्तर तीर्थ क्षेत्र है।

इस लेख में जैन धर्म के प्रथम तीर्थकर भगवान आदिनाथ जिन्हें ऋषभनाथ भी कहा जाता है के मध्यप्रदेश में स्थित एवं अतिशय क्षेत्रों की जानकारी प्रस्तुत की जा रही है।

सिद्धक्षेत्र- 1. श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर तहसील पटेरा जिला दमोह - यह क्षेत्र श्रीधर केवली की सिद्ध भूमि है। भगवान आदिनाथ बड़े बाबा की 15 फीट ऊंची पद्मासन प्रतिमा, पांचवी-छठी सदी की अतिशयकारी भव्यता लिये नवनिर्माण हो रहे मंदिरजी में विराजित की गई है।

2. श्री दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र बावनगजा (चूलगिरी) जिला बड़वानी - यहां से इन्द्रजीत व कुम्भकर्ण आदि साढ़े पांच करोड़ मुनि मोक्ष पधारे थे। यहां पहाड़ के पाषाण

की भगवान आदिनाथ की लगभग 84 फीट ऊंची प्रतिमा उत्कीर्ण है।

3. श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूट पोस्ट मान्धाता, जिला खण्डवा - नर्मदा और कावेरी नदियों का संगमस्थल सिद्धवरकूट एक सिद्ध क्षेत्र है। यहां से दो चक्रवर्ती, दस कामदेव व साढ़े तीन करोड़ मुनि मोक्ष गये हैं, संवत् 1545 की आदिनाथ भगवान की प्रतिमा विराजित है। यहां कुल 13 मंदिर हैं।

अतिशय क्षेत्र - 4. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र खजुराहो जिला छतरपुर - खजुराहो एक विश्वप्रसिद्ध पर्यटन केन्द्र है, यहां अनेक जैन एवं हिन्दू मंदिर हैं, चन्देलकालीन 1000 वर्ष प्राचीन चमत्कारी प्रतिमा विराजित है।

5. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पवनमंदिर जामनेर सार्वजनिक न्यास (शाजापुर) - यह क्षेत्र पवन मंदिर जामनेर के नाम से प्रसिद्ध है, यहां भगवान आदिनाथ की प्रतिमा अति प्राचीन एवं अतिशययुक्त है। मंदिरजी में कई प्रतिमायें विराजमान हैं।

6. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र

खंदारगिरी तहसील चंदेरी जिला गुना - खंदारगिरी पर्वतमाला तीर्थकर देवों का अतिशय क्षेत्र है। यहाँ भगवान आदिनाथ की 38 फीट ऊंची प्रतिमा अतिशयकारी है। यहाँ पहाड़ की गुफाओं में पत्थर काटकर मूर्तियां बनाई गई हैं।

बड़ी प्रतिमायें विराजित हैं। भगवान आदिनाथ की 28 फीट ऊंची खड़गासन प्रतिमा के लिये अनेक अतिशय प्रचलित है।

भगवान आदिनाथ के अन्य प्रसिद्ध क्षेत्र

- मियादांत (चन्देरी), द्रोणगिरी (छतरपुर), गोलाकोट (शिवपुरी), नोहटा आदिश्वरगिरी (दमोह), नेमगिरी वन्डा (सागर)

7. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र थूबोनजी जिला अशोकनगर - यहाँ अनेक

धर्म ध्वजा फहराये

नील गगन में केसरिया ध्वज
लहर लहर लहराये
गुरुओं के गुरु विद्यासागर
धर्म कर्म समझाये
विद्याधर से विद्यासागर बनकर
दीप जलाया
भारत के नक्शे से तुमने
हिंसा तमस हटाया
धर्म अहिंसा भव्य पताका
विश्व व्यापी बन जाये
जग का सच गुरु ने बतलाकर
राष्ट्र धर्म समझाया
आत्म ज्ञान की दिव्य ज्योति से
शाश्वत् पथ बतलाया
विश्व शान्ति का मंत्र अनूठा,
धर्म ध्वजा फहराये



संस्कार फीचर्स

आचार्य विद्यासागर साहित्य का शैक्षणिक क्षेत्र में योगदान

• डॉ. नेमीचन्द्र जैन (प्राचार्य) खुरई, सागर •



संसार में जब से मानव का तथा समाज का अस्तित्व है। तब से शिक्षा का भी अस्तित्व है। समयानुसार एवं आवश्यकतानुसार विभिन्न शैक्षणिक पद्धतियों को अपना जाता रहा है। शिक्षा के इतिहास का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि विश्व में प्रत्येक समय कोई न कोई विचारक उत्पन्न होता है और शिक्षा के सम्बन्ध में अपनी-अपनी विचारधाराएं प्रस्तुत करता रहा है।

शिक्षा मानव जीवन की महानतम प्राप्तियों में से एक है। शिक्षा के द्वारा ही मानव ने अपनी सभ्यता संस्कृति एवं प्रगति का महल खड़ा करने में सफलता पाई है। शिक्षा ही मानव को सामाजिक, अनुशासित, कार्यकुशलता, व्यवहार-दक्षता तथा जागरूक बनाती है। शिक्षा ही मानव को अंधकार से बाहर लाकर ज्ञान के प्रकाश में खड़ा करती है। शिक्षा ही मानव के सर्वांगीण विकास का आधार है।

शिक्षा का अर्थ - शिक्षा शब्द संस्कृत की शिक्ष धातु से निष्पन्न हुआ है जिसका अर्थ है ज्ञान। अंग्रेजी भाषा में शिक्षा को

Education कहा जाता है। इसमें E का अर्थ Out of तथा duco का अर्थ होता है to lead अतः शिक्षा का अर्थ शक्तियों का विकास है। अतः शिक्षा वास्तविक अर्थ में वह प्रक्रिया है जो मानव की आन्तरिक शक्तियों का विकास करती है तथा उनके सर्वांगीण विकास में सहयोग देती है।

शिक्षा के अर्थ के सम्बन्ध में विभिन्न शिक्षा शास्त्रियों में से कुछ विचार निम्नानुसार है -

1. प्लेटो के अनुसार - Education Consists in giving to the body and Soul all the perfection of which they are acceptable शिक्षा आत्मा और शरीर की पूर्णतः का नाम है जो उसे आवश्यक है।

2. श्री अरिस्टाटिल के अनुसार - Creation of a Soul mind in a Sound body is Education स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण करना ही शिक्षा है।

3. श्री पेस्टालॉजी के अनुसार - By education I mean a natural, harmonious and progressive development of man's innate power. मनुष्य की आन्तरिक शक्ति का स्वाभाविक, परम्परागत और उन्नतिशील विकास का नाम

ही शिक्षा है।

4. श्री थामसन के अनुसार - The influence of the environment on the individual with a view to producing a Permanent change in his habits of behaviour of through and of attitude. ऐसा वातावरण निर्माण करना जिससे व्यक्ति के विचारों, आदतों, स्वभाव एवं व्यवहार में स्थायी परिवर्तन हो, शिक्षा है।

5. डेवी के अनुसार - By education I mean the development of all those Capacities in the individual which will enable him to control his environment and fulfill his possibilities. व्यक्ति की व्यक्तिगत शक्तियों का विकास जिनके द्वारा वातावरण को नियंत्रित किया जा सके यही शिक्षा है।

6. श्री महात्मा गाँधी के अनुसार - By education I mean an allround drawing out of the best in child and man body mind and spirit. शिक्षा से मेरा तात्पर्य है बच्चों एवं मानव शरीर के मस्तिष्क एवं शक्ति का सर्वांगीण विकास।

7. श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार - Education has its only meaning and object in freedom, freedom from ignorance about the law's of universe, and freedom from passion and Prejudice in out communication with the human world. शिक्षा मनुष्य के जीवन को सारी दुनिया के

साथ अनुरूप बनाती है।

इस काव्य के माध्यम से कवि ने मूलाचार के उन विचारों को भी विश्लेषित किया है, जिसमें श्रम, संयम और तपः साधनों की आध्यात्मिक त्रिवेणी के रूप में श्रमण संस्कृति की अमरगाथा प्रस्तुत करते हुए वे कहते हैं-

कंकरो की प्रार्थना सुनकर

माटी की मुस्कान मुखरित हुई :

संयम की राह चलो

राह बनना ही तो, हीरा बनना है,
स्वयं राही शब्द ही,

विलोम रूप से कह रहा है -

और, इतना कठोर बनना होगा कि
तन और मन को तप की आग में,
तपा-तपा कर

जला-जला कर, राख करना होगा,
यतना घोर करना होगा,

तभी कहीं चेतन-आत्मा खरा उतरेगा।

आचार्य वट्टेकर ने अपने मूलाचार में शिथिल आचार वाले मुनियों पर काफी कटाक्षयुक्त व्यंग्योक्तियों का भी कुछ प्रसंगों में प्रयोग किया है। उसी तरह मूकमाटी में गहरी व्यंग्योक्तियां दिखाई देती हैं, यथा -

अरे सुनो !

कोष के श्रमण बहुत बार मिले हैं ,

होश के श्रमण होते विरले ही

और, उस समता से क्या प्रयोजन

जिसमें इतनी भी क्षमता नहीं है,

जो समय पर,

भयभीत को अभय दे सके

नाम-धारी संत की उपासना से

**संसार का अन्त हो नहीं सकता,
सही सन्त का उपहास और होगा।**

इन सबसे स्पष्ट है कि जिन्होंने मूलाचार का गहन अध्ययन किया है, वे उपर्युक्त काव्य पर इसका प्रभाव स्पष्ट समझ सकते हैं।

इसी प्रकार आचार्यश्री के प्रवचन संग्रहों में विविध विषयों पर संग्रहीत प्रवचन, विशेषकर पर्युषण पर्व के महापर्व पर उनकी ओजस्वी वाणी से प्रदत्त दशधर्मों पर प्रवचन तो मूलाचार (गाथा सं. 11.5 एवं 8.62) में संक्षेप में प्रतिपादित दस धर्मों का विस्तार रूप ही है। इसी तरह विभिन्न काव्यों एवं प्रवचनों में अनित्य, अशरण आदि बारह भावनाओं पर आचार्यश्री का जो विश्लेषण है, वह भी मूलाचार (गाथा सं. 5.206 एवं 8.2) में प्रतिपादित द्वादश अनुप्रेक्षाओं से विशेष प्रभावित दिखलाई देता है।

8. डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार - अब यह बात और अधिक स्वीकार की जाने लगी है कि शिक्षा के प्रति संतुलित दृष्टिकोण का विकास किया जाना चाहिए। मानसिक प्रशिक्षण के साथ-साथ कल्पना शक्ति और मनोभावों को सुन्दर बनाया जाना चाहिए। जिज्ञासु मस्तिष्क अन्तर्ज्ञानी हृदय, चेतनाशील आत्मा और छानबीन करने वाले विवेक का विकास किया जाना चाहिए।

9. हिताहित प्रवृत्ति निवृत्त्युपदेश : अर्थात् हितकर कार्यों में प्रवृत्त होने और अहित कार्यों से निवृत्त करने के उपदेश को शिक्षा कहते हैं।

10 डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री के शब्दों में

शिक्षा वह है, जिसके सतत् अभ्यास से लौकिक अभ्युदय की प्राप्ति के साथ-साथ पारलौकिक अनुभूति द्वारा मृत्यु के अनन्तर भी आत्म सुख शान्ति प्राप्त कर सके।

उपर्युक्त परिभाषाओं पर ध्यान देने से यह स्पष्ट हो जाता है कि शिक्षा का अर्थ समग्र रूप से मानव को सुन्दरतर, प्रगतिशील, सजग एवं प्रबुद्ध बनाना है।

मानसिक स्वास्थ्य एवं आन्तरिक शक्तियों का समन्वित विकास ही शिक्षा का अभीष्ट है।

प्राचीन समय में ज्ञान को ही शिक्षा का प्राण माना जाता था। शिक्षा का उद्देश्य मानव का सर्वांगीण विकास न होकर ज्ञान था।

शिक्षा के उद्देश्य - जीवन एवं कार्यों के क्षेत्र में उद्देश्य का होना आवश्यक है। उद्देश्य के बिना जीवन की प्रगति एवं विकास सम्भव नहीं हैं अतः शिक्षा के उद्देश्य को जीवन के उद्देश्य से सम्बन्धित माना जाता है। विचारकों ने शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये हैं -

- शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान प्राप्ति।
- शिक्षा का व्यक्तिवादी उद्देश्य अर्थात् शिक्षा का प्रधान लक्ष्य होना चाहिए व्यक्ति को आत्मानुभूति प्रदान करना।
- शिक्षा का सामाजिक उद्देश्य।
- समग्र जीवन-यापन का उद्देश्य।
- शिक्षा का व्यावसायिक उद्देश्य।
- शिक्षा का समन्वित विकास का उद्देश्य।
- धार्मिक उद्देश्य- अर्थात् धर्म के अनुसार आध्यात्मिक विकास ही शिक्षा का उद्देश्य है।

केन्ट महोदय का कथन है - "A life with

out religion is incomplete and so is morality.

जीवन बिना धर्म अधूरा है, अतः नैतिकता आधारित धार्मिकता ही शिक्षा का उद्देश्य है।

रौस के अनुसार - आज की अमानुसिकता एवं वैमनस्य के सन्दर्भ में धर्म पर आधारित शिक्षा में ही समस्त मानवता का कल्याण है। परन्तु नवीन वैज्ञानिकों ने धर्म के प्रति कोई भी आकर्षण नहीं रहने दिया है।

शिक्षा को मुख्यतः निम्न रूपों में मान्य किया गया है।

1. प्रकृतिवादी, 2. आदर्शवादी।

प्रकृतिवादी शिक्षा का सम्बन्ध प्रकृति से है, जबकि आदर्शवादी शिक्षा का सम्बन्ध दर्शन से है।

दर्शन की मुख्यतः दो शाखाएँ हैं।

1. अध्यात्मवाद, 2. यथार्थवाद

अध्यात्मवाद को आदर्शवाद तथा यथार्थवाद को प्रकृतिवाद के नाम से भी जाना जाता है। आदर्शवाद यथार्थवाद का स्पष्टतः विरोधी है। यथार्थवाद वस्तुवादी एवं प्रत्यक्षवादी विचारधारा का पोषक है, किन्तु आदर्शवाद आत्मा एवं मन को सर्वाधिक महत्त्व देता है। आदर्शवादी विचारधारा अत्यधिक प्राचीन है परन्तु आज इसका प्रभाव आंशिक रूप में देखने को मिलता है। आदर्शवादी की मान्यता है मानव मात्र पशु ही नहीं उससे बहुत ऊपर है। वह आत्मा एवं मन से विभूषित है। आदर्शवादी शिक्षा में आत्मा को सर्वोच्च स्थान प्रदान किया गया है। समस्त आदर्शवादियों ने मानव-अध्ययन को समस्त बाह्य प्रकृति के

अध्ययन से श्रेयस्कर माना है। मानव एक आध्यात्मिक प्राणी है और इसीलिए उसका परम लक्ष्य है आध्यात्मिक विकास पर परमात्म पद प्राप्त करना। मानव की आध्यात्मिक प्रकृति का प्रकाश बौद्धि संस्कृति, कला, नैतिकता तथा धर्म के रूप में होता है।

आदर्शवाद शिक्षा के भी निम्नलिखित उद्देश्य हो सकते हैं।

1. आत्मबोध की प्राप्ति
2. विवेक की प्राप्ति
3. नैतिकता का विकास
4. अनुशासन बनाम संयम

अभिधेय विषय है आचार्य विद्यासागर साहित्य का शैक्षणिक क्षेत्र में योगदान।

आचार्य विद्यासागर जी दिगम्बर जैन संत हैं। उन्हें आध्यात्मिकता का सर्वाङ्गमय है। अतः उनका साहित्य मानव के आध्यात्मिक विकास का उद्घोषक है। महाकवि आचार्य 108 श्री विद्यासागर जी महाराज का साहित्य निम्न रूप में प्राप्त है।

1. महाकाव्य मूकमाटी
2. स्फुट विविध विषयश्रित हिन्दी काव्य रचनाएं।
3. संस्कृत भाषा में रचित शतक
4. प्रवचनावली
5. पद्यानुवाद

आचार्य विद्यासागर के संस्कृत शतकों के आधार पर शिक्षा के क्षेत्र में निम्नलिखित योगदान दृष्ट्य है। अध्यात्म मार्ग पर चलने वाले श्रवणों को सावधानी पूर्वक अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए परमात्मा के प्रति अनुराग

रखने की सलाह दी गई है। संस्कृत भाषा में रचे गए श्रमणशतकम्, निरञ्जनशतकम्, भावनाशतकम्, परिषहजयशतकम्, सुनीतिशतकम् हैं। पाँचों शतक ग्रन्थ जैन मुनियों के आचरण की दृष्टि से रचे गए हैं।

जैसे **श्रमण शतकम्** के आधार पर यदि मुनि कभी बाह्य क्रियाओं के आडम्बर को प्राप्त न हो, तो उसके हृदय में आत्म तत्त्व नियम से सुशोभित होने लगे। (श्र. श. 8)

विषय वासना की अभिरूचि छोड़कर स्वस्वरूप की भावना करनी चाहिए। (श्र. श. 8)

साधु को पूर्ण परिग्रह रहित होकर ही आत्मा प्राप्त हो सकती है। (श्र. श. 16)

हर्ष विषाद रहित समता स्वभावी विपत्ति में खेद खिन्न नहीं होता है। (श्र. श. 31)

संसार का स्वरूप सार धन क्षणभंगुर है, सारहीन है, आत्म तत्त्व स्थायी नित्य है। (श्र. श. 37)

वीतरागता के माध्यम से शुद्धोपयोग में स्थिरता लाने से मोक्ष प्राप्त होता है।

निरंजन शतकम् - इसमें कवि ने आराध्य के विभिन्न रूपों का चित्रण करते हुए उनमें लीन होने में ही शांति मानी है।

भावना शतकम् - इसमें जनमानस को संसार से निकलने के उपायों पर विचार किया गया है। कुछ ऐसे शिक्षाप्रद तत्त्व भी हैं, जो शैक्षणिक जगत् को प्रभावित करने वाले हैं जैसे विनय से द्वेष करने वाले मनुष्य वश में हो जाते हैं। (भा.श. 12)

पाप का नाश होता है। विनयशील मनुष्य

कुमार्गगामी शत्रु को भी ज्ञान प्रकाश के द्वारा सुपथगामी बना देता है। (भा.श. 14)

शील सदाचार संसार पूज्य बनाता है। (भा.श. 21)

ज्ञानोपयोग आते हुए कर्मों को रोकता है तथा चंचलचित्त को स्थिरता प्रदान करता है। (भा.श. 27) निःस्वार्थ व्यक्ति ही जगत् हितकारी हो सकता है। (भा.श. 53)

अखण्ड स्तवन से सुख प्राप्त किया जा सकता है। (भा. श. 85)

जिस प्रकार पवित्र जल की संगति पाकर वायु शीतल हो जाती है, उसी प्रकार शास्त्र के मनन चिंतन से उपयोग पवित्र हो जाता है। इत्यादि अनेक शैक्षणिक तत्त्व भावनाशतकम् में हैं।

परिषह जयशतकम् - इसमें बाइस परिषदों को शान्त भाव से सहने का उपदेश दिया गया है।

सुनीति शतकम् - प्रस्तुत ग्रन्थ अनेक सुन्दर अर्थ पूर्ण नीतियों से भरा हुआ है। इसमें धनी मनुष्य के स्वभाव, द्वेष का मूल कारण, सत्संगति, मुखिया का स्वभाव, विवेक की महानता एवं निस्वार्थ वृत्ति पूर्वक जीने के लिए अकाट्य नीतियों का समायोजन किया गया है।

महाकवि 108 आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज कवि के साथ-साथ एक सर्वश्रेष्ठ प्रवचनकार भी हैं। अब तक उन्होंने लगभग 200 प्रवचन देकर जन सामान्य की भावनाओं को आदर्शोन्मुखी बनाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। मानव जाति की आन्तरिक शक्ति

का स्वाभाविक एवं परम्परागत, उन्नतिशील विकास किया है। उनके प्रवचनों में विनय, सदाचार, मैत्री, करुणा, गृहस्थ धर्म, पुरुषार्थ नीति एवं आध्यात्मिकता की भरमार है। एक तरफ अनासक्ति के माध्यम से आत्म तत्त्व को पहचानने की शिक्षा है तो दूसरी तरफ गौर संरक्षण एवं मांस निर्यात विरोध का शंखनाद है।

आचार्यश्री ने अपने प्रवचनों से जीवमात्र को जीने का, प्रगति करने का तथा धार्मिक मूल्यों को पहचानकर मोक्ष के साधनों का मार्ग दर्शाया है। इस तरह उनके प्रवचन सभी शैक्षणिक उद्देश्यों की पूर्ति करने वाले हैं।

संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश भाषाओं में रचे गए ग्रन्थों का मूल हार्द प्रगट करने वाला पद्यानुवाद कर आचार्यश्री कुन्दकुन्द, आचार्य श्री समन्तभद्र जैसे मनीषी विद्वानों द्वारा प्रदर्शित शैक्षणिक मूल्यों को सर्व जन सुलभ बनाने का महनीय कार्य भी किया है।

महाकवि आचार्य विद्यासागरजी ग्रन्थावली भाग-3 में रचित स्फुट कविताएं भी शैक्षणिक तत्त्व से भरी हुई हैं। हे आत्मन ! एकाकी यात्री, एक और भूल, शेष रहा चर्चन, मानस दर्पण आदि कविताएं लिखकर कवि ने मानस हृदय को झंकृत कर सुमार्ग पर लाने का प्रयास किया है।

निजानुभवशतक में वि के निम्न शब्द पठनीय हैं।

ज्ञानी कभी न रखता पर की अपेक्षा,
शुद्धात्मलीन रहता, सब की उपेक्षा।
माला गले शिव-रमा फिर क्यों न डाले,

या पास क्यों न उसको सहसा बुला ले॥30॥
ज्ञानी कभी मरण से डरते नहीं हैं,
तो चाहते सुचिर जीवन भी नहीं है।
वे मानते, मरण जीवन देह के हैं,
ऐसा निरन्तर सुचिंतन रे ! करे हैं॥82॥

आदि ऐसे महत्वपूर्ण पद्य हैं जो मानव को अध्यात्म जगत् की ओर ले जाने वाले हैं।

महाकवि आचार्य विद्यासागरजी ने मूकमाटी महाकाव्य रचकर हिन्दी साहित्य को ऐसे शैक्षणिक आधार प्रस्तुत किया है, जो मानव जीवन के लिए प्रतिक्षण अनुकरणीय एवं ग्रहणीय है।

मूकमाटी में कविता का अन्तरंग स्वरूप प्रतिबिम्बित हैं और साहित्य के आधारभूत सिद्धांतों का दिग्दर्शन है। जैसे साहित्य की सटीक परिभाषा निम्न है।

शिल्पी के शिल्पक-सांचे में,
साहित्य शब्द ढलता सा।
हित से जो युक्त-समन्वित होता है,
वह सहित माना है।

और,
साहित्य का भाव ही
साहित्य बना है।

अर्थ यह हुआ कि
जिसके अवलोकन से
सुख का समुद्भव-सम्पादन हो,
सही साहित्य वही है

अन्यथा
सुरभि से विरहित पुष्प-सम
सुख का साहित्य है वह
सार शून्य शब्द झुण्ड...

माटी खोदने की प्रक्रिया में कुम्भकार की

कुदाली एक कांटे के माथे पर जा लगती है,
उसका सिर फट जाता है, वह बदला लेने की
सोचता है कि कुम्भकार को अपनी असावधानी
पर ग्लानि होती है - वह कहता है -

खम्मामि खमंत में ...

क्षमा करता हूँ सबको, क्षमा चाहता हूँ
सबसे, सबसे सदा-सहज बस मैत्री रहे मेरी,
यहाँ कोई भी तो नहीं है, संसार भर में मेरा
बैरी।

दार्शनिक तथ्यों को व्यावहारिक भाषा में
प्रस्तुत कर संसार के स्वरूप का चित्रण किया
है -

आना जाना लगा हुआ है
आना यानी जनन-उत्पाद है
जाना यानी मरण - व्यय है
लगा हुआ यानी स्थिर - धौव्य है।
और
है यानी चिर सत् यही सत्य है, यही तथ्य,
संत समागम से प्राप्त होने वाले लाभ का
चित्रण देखिए -

संत समागम की
यही सार्थकता है कि
संसार का अन्त दिखने लगता है
समागम करने वाला भले ही
तुरन्त सन्त संघत बने या न बने,
इसमें कोई नियम नहीं है
किन्तु वह संतोषी अवश्य बनता है
सही दिशा का प्रसाद ही
यही दशा का प्रसाद है
जीवन को उद्धार बनाने की शिक्षा का
उदाहरण देखिए -

सूखा प्रलोभन मत दिया करो,
स्वाश्रित जीवन जिया करो,
कपटता की पटुता को,
जलांजलि दो।
गुरुता की जनिका लघुता को
श्रद्धांजलि दो।
शालीनता की विशालता में
आकाश समा जाय,
जीवन उदारता का उदाहरण बने
अकारण ही
पर के दुःख का सदा हरण हो।

आगे बढ़ते जाना चाहिए पीछे मुड़कर
देखना उचित नहीं का उदाहरण देखिए -
पथ पर चलता है, सत्पथ-पथिक वह
मुड़कर नहीं देखता, तन से भी, मन से भी।
संगति के अनुसार मति और गति का
तांता अनादि है उदाहरण देखिए -

जैसे संगति मिलती है
वैसी मति होती है।
मति जैसी, अग्रिम गति
मिलती जाती, मिलती जाती,
और यही हुआ है
युगों-युगों से
भवों-भवों से-
हमेशा सावधान रहने के शिक्षा का
उदाहरण देखिए -
आलस्य से डरना नहीं
आलस्य करना नहीं
मंत्र की सार्थकता मन पर आधारित है
देखिए -

मंत्र न ही अच्छा होता है
ना ही बुरा
अच्छा, बुरा तो अपना मन होता है
स्थिर मन ही वह
महामंत्र होता है
और
अस्थिर मन ही
पापतन्त्र स्वच्छन्द होता है
एक सुख का सोपान है
एक दुःख का सोपान
अर्थात् सुख-दुःख मन पर आधारित हैं
वर्तमान युग के मानव की दशा का चित्र
देखिए -
वेतन वाले वतन की ओर
कम ध्यान दे पाते हैं

और चेतन वाले तन की ओर
कब ध्यान दे पाते हैं ?
लोकोक्ति देखिए -
आधा भोजन कीजिए
दुगुणा पानी पीव
तिगुणा श्रम चउगुणी हँसी
वर्ष सवा सौ जीव
इस प्रकार जीवन में हँसी का महत्व प्रदर्शित
किया गया है
मूकमाटी महाकाव्य में एक नहीं हजारों ऐसी
शिक्षाएँ हैं, जो मानव को उन्नति के शिखर पर ले
जाने वाली है अतः यह निर्विवाद कहा जा सकता
है कि महाकवि आचार्य 108 विद्यासागरजी
महाराज का साहित्य का शैक्षणिक जगत् में
अद्वितीय योगदान है।

महाकवि आचार्य विद्यासागरजी महाराज पर संगोष्ठी सम्पन्न



मदनगंज-किशनगढ़ (राज.)। महाकवि आचार्यश्री
विद्यासागरजी महाराज के स्वर्णिम दीक्षा वर्ष पर मुनिश्री
सुधासागरजी महाराज ससंध सानिध्य में दिनांक 22 से 24
अक्टूबर 2017 को महाकवि आचार्यश्री विद्यासागर महाराज
का साहित्य एवं भारतीय संस्कृति को अवदान विषय पर
राष्ट्रीय संगोष्ठी आर.के. कम्युनिटी सेन्टर, मदनगंज-किशनगढ़
(राज.) में राजस्थान केन्द्रिय विश्वविद्यालय के तत्वावधान में सम्पन्न हुई। जिसमें 24 अक्टूबर
2017 को श्री मूलचंदजी लुहाड़िया किशनगढ़ को आचार्य ज्ञानसागर पुरस्कार, श्री कमलकुमार
सोगानी जयपुर को आचार्य विद्यासागर पुरस्कार, डॉ. ज्योति जैन खतौली को मुनि सुधासागर
पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसी अवसर पर संस्कार
सागर आचार्य विद्यासागर परिवार विशेषांक अक्टूबर 2017
का लोकार्पण किया गया। (दूसरे चित्र में - मुनिश्री
सुधासागरजी महाराज को संस्कार सागर भेंट करते हुए
सम्पादक मंडल)





प्रमाण परीक्षा ग्रन्थ और विषय वस्तु

आचार्य विद्यानंदी का प्रमाण परीक्षा ग्रन्थ न्यायतर्क विद्या का उत्कृष्ट ग्रन्थ अथ 'प्रमाण परीक्षा' शब्दों द्वारा स्वयं स्वामी विद्यानंद ने ग्रन्थ का नाम सुनिश्चित किया है तात्कालिक दार्शनिक परिस्थितियों का प्रकटीकरण इस ग्रन्थ के माध्यम से होता है। प्रस्तुत ग्रन्थ में भाषा जटिल और दुरुह नहीं है। समास की बहुलता भी इस ग्रन्थ में नहीं है। छोटे-छोटे वाक्यों में विषयों का प्रतिपादन किया गया है। शैली प्रसाद पूर्ण सरल सुबोध भव्य और आकर्षक है। प्रमाण शास्त्र में प्रवेश करने की दृष्टि से यह ग्रन्थ बहुत ही उपयोगी है। 1. प्रमाण का स्वरूप, 2. प्रमाण की संख्या, 3. प्रमाण का विषय, 4. प्रमाण का फल। इन चार विषयों का ही ऊहापोह इस ग्रन्थ में किया गया है। इस ग्रन्थ में कुल 180 अनुच्छेद हैं। अनुच्छेद 2-64 तक प्रमाण स्वरूप नाम का पहला विभाग है। अनुच्छेद 65 से 175 तक दूसरा विभाग प्रमाण संख्या का है। तीसरा विभाग प्रमाण विषय परीक्षा का 176-177 दो अनुच्छेदों में नियोजित है। 178 से 180 अनुच्छेदों में चतुर्थ विभाग प्रमाण फल रूप है।

प्रमाण स्वरूप विभाग में सम्यग्ज्ञान को स्वापूर्वार्थ व्यवसायात्मक सिद्ध किया है। न्याय दर्शन द्वारा मान्य सन्निकर्षवाद का खंडन किया है। बौद्धमत द्वारा मान्य अव्यवसायात्मक प्रत्यक्षवाद की समीक्षा की गई है। अनुमान से सविकल्प प्रत्यक्ष की सिद्धि की गई है। विज्ञान अद्वैतवाद परम ब्रह्मवाद परोक्षज्ञान वाद प्रधान परिणाम ज्ञानवाद तत्त्वोपप्लव वाद इस तरह इन 5 वादों की परीक्षा इस विभाग में की गई है।

प्रमाण संख्या विभाग में प्रत्यक्ष परोक्ष प्रमाणवाद की सिद्धि करते हुए प्रत्येक प्रमाणवाद एवं प्रत्यक्षानुवाद प्रमाणद्वय वाद की समीक्षा करने के उपरान्त तर्क प्रमाण का विमर्श करते हुए तर्क का अमान्य करने वाले वैशेषिक सांख्य मतों की परीक्षा करने के बाद तर्क की प्रमाण रूप सिद्धि की है और स्मृति प्रमाण का विमर्श किया है।

प्रत्यक्ष प्रमाण का विमर्श करते हुए प्रत्यक्ष प्रमाण के भेद किये

परोक्ष प्रमाण के अन्तर्गत स्मृति, प्रत्यभिज्ञान तर्क, अनुमान, इन प्रमाणों का विमर्श किया गया है। हेतु स्वरूप का विमर्श करते हुए त्रैरूप्य हेतु लक्षण और पंचरूप्य हेतु लक्षण की समीक्षा की गई है। हेतु के भेद 22 बताये हैं तथा उनका स्वरूप भी स्पष्ट किया

है। बौद्ध मान्य हेतु भेदों की परीक्षा की है। साथ ही न्याय सम्मत हेतु भेदों एवं सांख्य सम्मत हेतु भेदों की समीक्षा की गई। साध्य स्वरूप का विमर्श स्वार्थ परार्थ अनुमान का विमर्श श्रुत ज्ञान विमर्श करते हैं। श्रुत को कथंचित्, पौरुषेय और कथंचित् औपौरुषेय सिद्ध किया है। वेद की मीमांसा भी की गई है।

प्रमाण विषय विभाग में विषय को द्रव्य पर्यायात्मक सिद्ध किया है।

प्रमाण फल विभाग प्रमाण का फल कथंचित् भिन्न और कथंचित् अभिन्न सिद्ध किया है। सर्वथा प्रमाण के फल को भिन्न मामले पर दोष दिखाये हैं और सर्वथा प्रमाण के फल को अभिन्न मानने पर भी दोष दिखाये हैं तथा संवृत्ति से प्रमाण फल व्यवहार करने में दोष बताये हैं।

इस तरह से इस प्रमाण परीक्षा ग्रन्थ तर्क विद्या की अभिनव देन दृष्टिगोचर होती है।

गुरुवर महान

विद्यासागर गुरुवर महान, नमन करूँ चरणा मां
म्हारी अँखियों मां रहे थारो ध्यान, नमन करूँ चरणा मां

थारी शिक्षा जीवन मां उतरा करूँ

ज्ञान ज्योति से पाय अंधेरा हँरूँ

हर पल रहे ऽऽ गुरु थारो ध्यान

नमन करूँ...

म्हारी श्रद्धा विनती ठुकराओ मति

थारे चरणानी संगति छुड़ाओ मति

दीजे म्हामे गुरु तत्व ज्ञान

नमन करूँ...

म्हारा मिथ्यात्व तमस-मिट्टाई दीजो

म्हारा भावना भ्रमण गुरू अब हरी लीजो

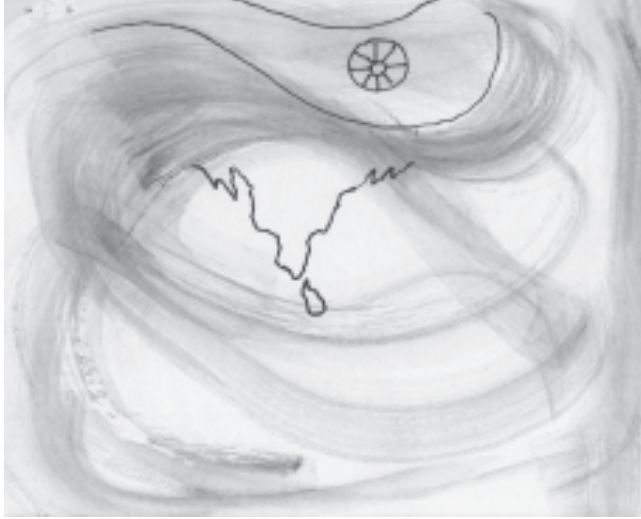
म्हान दीजो समाधि कल्याण ॥

नमन करूँ...



संस्कार फीचर्स

स्वर्णमयी भारत



ये मेरे वतन के लोगों, जरा आंख में भर लो पानी
यह स्वर्णमयी भारत की, बिल्कुल सच्ची है कहानी।
था चन्द्रगुप्त जब राजा, संस्कृति थी अपनी भाषा,
चिड़िया सोने की थे हम, घर-घर में बहुत थी आशा।
नहीं कोई कहीं दुखी था, जन-मन भरपूर सुखी था
बहती थी दूध की गंगा, कोई न था भूखा-नंगा
फिर भाई से भाई लड़ा जब, फिर मुस्लिम राज हुआ तब
लूटा गजनवी गौरी ने, बाबर ने धौंस जमाई
भारत की छाती छलनी और सबकी आंख में पानी
यह स्वर्णमयी भारत की....

फिर पुर्तगाली घुस आए, डच, डेनिश भी ललचाए
अनुमति व्यापार की पाकर, अंग्रेजों ने पांव जमाकर
सोना-चांदी भारत का लूटा जहाज भर भर कर
घर-घर में कपड़ा बुनाई, सूती मल मल की मलाई
भरपूर था अन्न धरा पर, गौमाता पूज्य यहां पर
गुरुकुल हर गांव नगर थे, भगवन सब जन साक्षर थे
व्यापार विश्व का जितना था, एक तिहाई अपना
नहीं कोई कहीं निकम्मा, पूजित थे बापू अम्मा
विज्ञान, औषधि, धातु चाहे विद्या जहाजरानी
भारत के माल, हुनर की सारी दुनिया दीवानी
यह स्वर्णमयी भारत की....

नालंदा, ताजमहल हो या खजुराहो महारौली
पुष्कर गिरनार, अमृतसर हो या बोधगया या काशी
हों आर्यभट्ट या सुश्रुत हो कालीदास या तुलसी
थे वीर महान शिवाजी, रानी झांसी बलिदानी
बाबू सुभाष, सावरकर, अशफाक और बापू गांधी
सरदार ने देश बचाया, शास्त्री ने धर्म निभाया
कलमा कलाम ने गाया, भारत का मान बढ़ाया
हम विश्व गुरु फिर होंगे लिखें फिर नयी कहानी
हम एक रहे हिल-मिल के, दुश्मन न करे शैतानी
सम्पूर्ण स्वदेशी चीजें हिन्दी और हिन्दुस्तानी
यह स्वर्णमयी भारत की....
ऐ मेरे वतन के लोगों जरा...

• डॉ. सुधीर जैन •

कुरलकाव्य में वर्णित शिक्षा तत्त्व

• पं. राजेश शास्त्री, ललितपुर •

शिक्षा मनुष्य जीवन के परिष्कार एवं विकास की प्रणाली है। जीवन के प्रत्येक अनुभव को शिक्षा कहा जा सकता है। वास्तव में समस्त मानव जीवन की शिक्षा है और शिक्षा ही जीवन है। जो कुछ भी व्यवहार मनुष्य के ज्ञान की परिधि को विस्तृत करे, उसकी अन्तर्दृष्टि को गहरा करे, उसकी प्रतिक्रियाओं का परिष्कार करें, भावनाओं और क्रियाओं को उत्तेजित करे अथवा किसी न किसी रूप में उसको प्रभावित करे वह शिक्षा ही है। शिक्षाशास्त्र में व्यक्तित्व के संतुलित एवं सम्पूर्ण विकास को शिक्षा का लक्ष्य माना गया है। शिक्षा मनुष्य की आन्तरिक शक्तियों का सर्वांगीण अर्थात् शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का विकास है।

इस प्रकार शिक्षा का संबंध जितना व्यक्ति से है उससे अधिक समाज से है मानव जीवन में जो कुछ भी अर्जित है वह शिक्षा का ही परिणाम है। व्यक्ति का चरित्र, व्यक्तित्व, संस्कृति, चिन्तन, सूझबूझ, कुशलताएं, आदतें तथा जीवन की छोटी से छोटी बातें शिक्षा पर निर्भर है। वास्तव में शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा मानव-शिशु सब प्रकार से विकसित होकर समाज में उपयुक्त स्थान ग्रहण करता है। शिक्षा के माध्यम से हजारों वर्षों से समाज द्वारा अर्जित अनुभव बालक को हस्तान्तरित कर दिये जाते हैं शिक्षा

के द्वारा ही शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक विकास होता है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य का चरित्र निर्माण व समाजीकरण होता, जिससे वह मनुष्य की संज्ञा पाने के योग्य बनता है।

अर्थात् शिक्षा निरन्तर चलने वाली विकास की प्रक्रिया है। जो औपचारिक व अनौपचारिक रूप से बालक को समृद्ध समाज का हिस्सा बनाती है। शिक्षा शब्द संस्कृत की 'शिक्ष्' धातु से विद्या-उपादान के अर्थ में बना है जिसका अर्थ है सीखना, वह सीखने की प्रक्रिया शिक्षक, छात्र तथा पाठ्यक्रम द्वारा सम्पादित होती है। अंग्रेजी भाषा का शब्द Education लैटिन भाषा के एडुकेयर Educare एवं एडुसीयर Educere से बना है। जिसका अर्थ है नेतृत्व देना, बाहर लाना।

प्राच्य व पाश्चात्य दृष्टि में शिक्षा का अर्थ निम्न प्रकार से दृष्टिगोचर होता है।

श्रीमद् भगवद्गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं-

“सा विद्या या विमुक्तये”

अर्थात् जो हमें मुक्तिपथ तक ले जाती है वही विद्या है।

ईशावास्योपनिषद् में लिखा है-

“विद्ययाऽमृतमश्नुते”

अर्थात् विद्या के द्वारा अमरत्व की प्राप्ति होती है।

भट्टहरि अपने शतक में लिखते हैं

“पाशविकप्रवृत्तेः परित्यागः शिक्षा”

अर्थात् पशु के समान प्रवृत्तियों का त्याग ही शिक्षा है।

महात्मा गाँधी कहते हैं-

“बालक में शारीरिक मानसिक आध्यात्मिक शक्तियों का उत्तमोत्तम सर्वांगीण विकास ही शिक्षा है।”

पाश्चात्य दार्शनिक टी.पी. नन कहते हैं।

Education is complete development of an individual.

“अर्थात् व्यक्तित्व की समग्र अभिवृद्धि का नाम ही शिक्षा है।”

उपरोक्त परिभाषाओं के कथन का सारभूत विश्लेषण संत श्री एलाचार्य तिरुवल्लुवर ने कुरल काव्य में शिक्षा के बारे में कथन किया है-

“मनुष्य ने एक जन्म में जो विद्या प्राप्त कर ली है वह उसे समस्त आगामी जन्मों में भी उच्च और उन्नत बना देगी।” (परिच्छेद-40-8)

उपरोक्त परिभाषा श्रीमद्भगवद्गीता व ईशावास्योपनिषद् के कथन को स्पष्ट करती है कि शिक्षा ही मनुष्य को उन्नत बना सकती है।

प्राप्त करने योग्य जो ज्ञान है, उसे सम्पूर्ण रूप से प्राप्त करना चाहिए और प्राप्त करने के पश्चात् तदनुसार व्यवहार करना चाहिए। (परिच्छेद-40-1)

एलाचार्य का उपरोक्त कथन स्वामी दयानन्द सरस्वती की परिभाषा शील निर्माण मेव शिक्षा का ही परिचय कराती है तथा अनेक

पाश्चात्य व प्राच्य दार्शनिकों के कथन का आधारभूत कथन है

सम्पूर्ण कुरलकाव्य नीतिगत बातों तथा शिक्षा तत्त्वों से समाहित है फिर भी एलाचार्य तिरुवल्लुवर ने मूल आधारभूत तत्त्वों में शिक्षक शिक्षा व छात्र को स्वीकार करते हुए कहा है -

“यदि तुम्हें गुरु या शिक्षक के सामने उतना ही अपमानित और नीचा बनना पड़े जितना की भिक्षुक को धनवान के समक्ष बनना पड़ता है फिर भी तुम विद्या सीखो। मनुष्यों में अधम वे ही लोग हैं जो विद्या सीखने से विमुख होते हैं।”

उपरोक्त कथन में एलाचार्य ने छात्र को भिक्षुक की उपमा देकर विद्याग्रहण का उपदेश दिया है वह पाश्चात्य दार्शनिक एडम्स की द्विमुखी प्रक्रिया तथा जान ड्युवी की त्रिमुखी प्रक्रिया का बोध कराती है। एडम्स ने शिक्षा को द्विमुखी प्रक्रिया बताते हुए शिक्षक व छात्र को ही शिक्षा का आधार माना है।

वही जन ड्युवी ने शिक्षा को त्रिमुखी प्रक्रिया बताते हुए शिक्षक छात्र पाठ्यक्रम को शिक्षा का आधार माना है।

अतएव स्पष्ट है कि जिन मूलभूत तत्त्वों को प्राच्य पाश्चात्य दार्शनिकों ने शिक्षा के अन्तर्गत स्वीकार किया वह एलाचार्य संत तिरुवल्लुवर ने पूर्वमेव ‘कुरलकाव्य’ में उल्लिखित कर दी है।

भारतीय व पाश्चात्य शिक्षा दर्शन के अनुसार जिस परिपूर्ण मानव का विकास शिक्षा

के माध्यम से होता है, वह औपचारिक व अनौपचारिक शिक्षा में निहित तत्त्वों के द्वारा होता है। जिससे मानव सभ्य समाज का अंग बनता है। वास्तव में “ज्ञान, चरित्र एवं संस्कृति की त्रिवेणी के संगम में ही शिक्षा जीवन का तीर्थराज बनती है।” इन्हीं तत्त्वों को संत एलाचार्य तिरुवल्लुवर ने कुरल काव्य में भलीभाँति समाहित किया है जो निम्न प्रकार है -

1) नैतिक शिक्षा - प्रायः सभी विचारकों एवं शिक्षा शास्त्रियों ने नैतिक शिक्षा एवं चरित्र निर्माण को शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य माना है। नैतिकता एक सामाजिक भावना है। चरित्र से तात्पर्य आचरण या व्यवहार से है। आज बौद्धिक रूप से विकसित मनुष्य वैज्ञानिक ज्ञान में बहुल प्रगति कर चुका है, किन्तु यदि मनुष्य हृदय और भावना में अविकसित हो तो वह एक निम्न प्रकार का असुर बन जाता है। नैतिक शिक्षा हृदय की शिक्षा है। अतः परिपूर्ण व्यक्तित्व के विकास के लिए नैतिक शिक्षा अपरिहार्य है। इसी के आधार पर मानव पशु में मानवता का उदय एवं सामंजस्यपूर्ण मानव-समाज का विकास होता है यही नैतिक शिक्षा का उद्देश्य है, जिसको हम निम्न बिन्दुओं से स्पष्ट समझ सकते हैं -

अ. धर्म एवं संस्कृति के प्रति श्रद्धा - कुरल काव्यकार कहते हैं कि

“ईर्ष्या, लालच, क्रोध और अप्रिय वचन इन सबसे दूर रहो, धर्म प्राप्ति का यही मार्ग है।” (परिच्छेद -4, पृ. 8-5)

अर्थात् इन क्रोधादिक के बारे में कहानी आदि के माध्यम से परिणाम बताकर छात्रों में धर्म के प्रति श्रद्धा आदि स्थायी भाव उत्पन्न किए जा सकते हैं। जब धर्म पर श्रद्धान् बढ़ेगा तो उस धार्मिक संस्कृति के प्रति श्रद्धा भाव अपने आप उत्पन्न होने लगेगा। अन्य सूक्ति के माध्यम से भी कुरलकाव्यकार ने स्पष्ट किया है -

‘धर्म से बढ़कर दूसरा और कोई भला काम नहीं और उसे भुला देने से बढ़कर दूसरी और कोई बुराई नहीं है।’ (परिच्छेद -4 पृ.सं.-8-2)

ब. राष्ट्र-प्रेम - शिक्षा के माध्यम से प्रत्येक छात्र में स्वार्थभाव का रूपान्तरण राष्ट्र-प्रेम में करना है। स्व केन्द्रित भावना का परिवार-भावना में तत्पश्चात् ग्राम, नगर, समाज, देश एवं राष्ट्र और फिर विश्व तक भावना का विस्तार करना होता है। अर्थात् प्रत्येक छात्र में ‘वसुधैव-कुटुम्बकम्’ की भावना का विकास करना है। कुरल काव्यकार भी कहते हैं -

“यदि मनुष्य बन्धुगणों से सौभाग्यशाली है और बन्धुगणों का प्रेम उसके लिए घटता नहीं है तो उस का ऐश्वर्य कभी बढ़ने से नहीं रुक सकता।” (परिच्छेद -53, पृ. 57-2)

इस प्रकार अन्य सूक्तियों में भी राष्ट्रहित का वर्णन है जो राष्ट्र-प्रेम की शिक्षा में कार्यकारी है।

स. सदाचार एवं सद्गुणों का विकास

- सदाचार के अन्तर्गत शील और नैतिकता की वे भावनाएँ निहित हैं जिसमें मनुष्य अपना सुख छोड़कर दूसरों को सुख दे, अपना स्वार्थ छोड़कर परोपकार करे और मन, वचन या कर्म से किसी को कष्ट न दे। सत्य बोलना, बड़ों का आदर करना, पारस्परिक प्रेम और सम्मान की भावना का विकास, त्याग, दया, न्याय, सहानुभूति, चोरी न करना, धोखा न देना, साहस, निर्भयता आदि सद्गुणों का विकास विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से किया जा सकता है इन सभी बातों को कुरल काव्यकार ने अपने ग्रन्थ में समाहित की है जो बालक में सदाचार व सद्गुणों का विकास कर सकते हैं यथा -

“अपने आचरण की पूरी देख-रेख रखो, क्योंकि तुम जगत् में कहीं भी खोजो, सदाचार से बढ़कर पक्का मित्र कहीं नहीं मिलेगा।” (परिच्छेद -14, पृ. 18-2)

“योग्य पुरुष अपने हाथों से परिश्रम करके जो धन जमा करते हैं वह सब जीवमात्र के उपकार के लिए ही होता है।” (परिच्छेद -22, पृ. 26-2)

“पूर्ण विचार करों और किसी की ओर मत झुको, निष्पक्ष होकर नीतिज्ञानों की संज्ञति लो। न्याय की यह रीति है।” (परिच्छेद -55, पृ. 59-1)

इस प्रकार सदाचार व सद्गुणों के विकास हेतु अनेक शिक्षा की बातें समाहित हैं।

2) आध्यात्मिक शिक्षा - आज

भौतिकवादी सुखों ने मानव-मस्तिष्क को अपनी ओर पूर्ण रूप से आकृष्ट कर रखा है। फलस्वरूप मानव आध्यात्मिक जीवन तथा उससे जुड़ी असीम सम्भावनाओं को पूरी तरह भूला बैठा है। वह भौतिक संसार में ही जीता तथा उपभोग करता है। अपनी सत्ता को शरीर और मन से अधिक नहीं मानता। यह एक ऐसी भ्रान्ति है जिसके रहते जीवन के उच्च स्तरीय आयामों में प्रवेश करते नहीं बनता। इस भ्रान्ति या अज्ञान से मुक्ति दिलाना ही शिक्षा का परम लक्ष्य है। ‘सा विद्या या विमुक्तये’ अतएव आध्यात्मिकता को विकसित करने के लिए आध्यात्मिकता शिक्षा को निम्न बिन्दुओं से स्पष्ट समझ सकते हैं-

अ. ईश्वर के प्रति आस्था एवं भक्ति - ईश्वर के जिस रूप में भी आस्था हो, उसके प्रति घर में प्रार्थना, पूजा आदि सभी परिवारजन करते हैं तो बालकों पर उसका अनुकूल प्रभाव होता है। विद्यालय में भी अच्छे प्रभावी वातावरण में प्रार्थना-सभा से शिक्षा कार्य आरम्भ हो। इन कार्यों से ईश्वर के प्रति सचेतन होने का वातावरण बनता है। ऐसा ही कुरलकाव्यकार ने कहा है।

“जो मनुष्य उस कमलगामी परमेश्वर के पवित्र चरणों की शरण लेता है वह जगत् में दीर्घजीवी होकर सुख-समृद्धि के साथ रहता है।”

ब. मैं देह नहीं आत्मा हूँ - मानव देह नहीं, आत्मा है, ईश्वर का स्वरूप है। यह भाव बार-बार छात्रों के सम्मुख भिन्न-भिन्न ढंग से

आना लाभदायक है यथा कुरल काव्यकार कहते हैं-

“इस मोह से बढ़कर मूर्खता की बात और कोई नहीं है, जिसके द्वारा अनित्य पदार्थों को मनुष्य स्थिर और नित्य समझ बैठता है।” (परिच्छेद -34, पृ. 38-1)

“पंख निकलते ही चिड़िया का बच्चा फूटे हुए अण्डे को छोड़कर उड़ जाता है। शरीर और आत्मा की पारस्परिक मित्रता का यही दृष्टान्त है।” (परिच्छेद -34, पृ. 38-8)

इस प्रकार रूचिकर उदाहरणों से छात्रों को आध्यात्मिकता की ओर मोड़ा जा सकता है जिससे उनके जीवन में शान्ति, सन्तोष और आनन्द की प्राप्ति होगी।

स. प्रेम - प्रेम आत्मा का स्वभाव है। प्रेम समस्त सीमाएं समाप्त कर प्राणिमात्र के साथ तादात्म्य स्थापित कर देता है। प्रेम की अनुभूति बौद्धिक धरातल से ऊपर उठकर होती है। प्रेम, राग, मोह, वासना से परे है। राग, मोह, वासना में संकीर्णता है, स्वार्थपरता है। प्रेम व्यापक एवं निस्वार्थ होता है। प्रेम का अर्थ है अपनी शक्ति, ज्ञान, धन आदि का परहित में सेवा-भाव से दान। यथा कुरलकाव्यकार ने भी कहा है -

“जो प्रेम नहीं करते, वे अपने लिए ही जीते हैं और जो दूसरों से प्रेम करते हैं, उनकी हड्डियां भी दूसरों के काम आती हैं।” (परिच्छेद -8, पृ. 12-2)

इस प्रकार प्रेमपूर्ण स्वभाव से सुखद व

कल्याणकारी समाज की स्थापना की जा सकती है।

द. करुणा - दया व करुणाबोधक भाव भी मनुष्य को आध्यात्मिक की ओर उन्मुख करते हैं जैसे कि स्वामी विवेकानन्द जी ने करुणा व दया से ओत-प्रोत होकर संन्यासी का मार्ग अपना लिया था। कुरल काव्यकार ने भी करुणा व दया, अहिंसा आदि के द्वारा शिक्षा को देने का प्रयास किया है यथा -

“दया से लबालब भरा हुआ हृदय ही संसार में सबसे बड़ी सम्पत्ति है क्योंकि भौतिक विभूति तो नीच मनुष्यों के पास भी देखी जाती है।” (परिच्छेद -25, पृ.29-1)

इस प्रकार आध्यात्मिकता व नैतिकता की शिक्षा के द्वारा ही बालक को सार्वभौमिक बनाया जा सकता है जिससे वह सभ्य समाज का अंग बनकर समाज को भी सही मार्गदर्शन दे सकता है जिससे हजारों वर्षों तक अपनी संस्कृति व सभ्यता को सुरक्षित किया जा सकता है अन्यथा अनैतिकता से जो आज वर्तमान में शिक्षा का पतन हो रहा है वह राष्ट्रहित में चिंतनीय है कि वह हमारी अग्रिम पीढ़ियों को कहां तक पतित कर सकता है। यदि वर्तमान में प्रत्येक व्यक्ति अपनी आगामी पीढ़ी को नैतिक व आध्यात्मिक शिक्षा की ओर अग्रसर नहीं करता है तो निश्चित ही भविष्य अंधकार मय होगा।

यथा कुरलकाव्यकार ने कहा है -

अनपढ़ व्यक्ति की दशा उस अक्षर भूमि

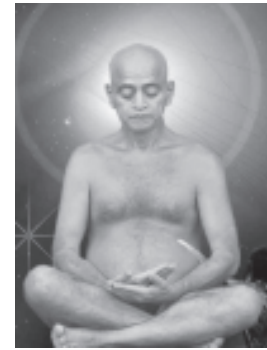
के समान है, जो खेती के लिए अयोग्य है। लोग उसके बारे में केवल यही कह सकते हैं कि वह जीवित है, अधिक कुछ नहीं। (परिच्छेद -41, पृ.45-6)

ऐसा ही भट्टहरि ने नीतिशतक में लिखा है -
येषां न विद्या न तपो न दानं,

ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूताः,
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति ॥

अतएव शिक्षा की ओर अग्रसर होकर अपने जीवन को उन्नत करना चाहिए, क्योंकि अपनी उन्नति ही राष्ट्र व धर्म की उन्नति है।

संत शिरोमणि स्वर्णिम राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न



बांसवाड़ा (राजस्थान)। संत शिरोमणि आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागरजी महाराज के स्वर्णिम दीक्षा महोत्सव पर मुनिश्री समतासागरजी एलकश्री निश्चयसागरजी महाराज के सानिध्य में दिनांक 21-22 अक्टूबर 2017 को श्री श्रेयांसनाथ दिगम्बर जैन मंदिर परिसर, खान्दू कालोनी, बांसवाड़ा (राज.) में आचार्यश्री के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न हुई। जिसमें ब्र. राकेशजी सागर, ब्र. अशोकजी लिधौरा, ब्र. जिनेश मलैया इन्दौर, ब्र. संजय भैया पनागर, ब्र. धर्मेन्द्र भैया जयपुर, ब्र. अन्तु भैया शहपुरा भिटौनी, ब्र. अनिलजी प्राचार्य जयपुर, ब्र. त्रिलोक भैया जबलपुर, ब्र. मनीष भैया तेन्दूखेड़ा, ब्र. पारस भैया भोपाल, ब्र. सुनील भैया कटंगी, ब्र. मनोज भैया शाहगढ़, ब्र. भरत भैया बागीदौरा, अभिनंदन सांधेलिय पाटन, सुशीलजी गाडरवारा, सी.एल. जैन गोटेगांव, सुभाष जैन शाहपुरा भिटौनी तथा ब्र. सविता दीदी पिपरई, ब्र. माया दीदी बण्डा, ब्र. सुषमा दीदी टड़ा, ब्र. किरण दीदी सागर, ब्र. चंदना दीदी देवरी, ब्र. संगीता दीदी जबलपुर, ब्र. जयंती दीदी शाहगढ़, ब्र. डॉ. रजनी दीदी बांदरी, ब्र. रेखा दीदी सागर, ब्र. डॉ. नीलम दीदी जबलपुर, ब्र. अर्चना दीदी कोटा, ब्र. मंजू दीदी कोटा, ब्र. सरिता दीदी सागौर, ब्र. मधु दीदी बाडमेर, ब्र. उषा दीदी चांदखेड़ी, ब्र. समता दीदी इन्दौर, ब्र. आभा दीदी, बबली दीदी, पप्पी दीदी भोपाल ने भाग लिया। चार सत्रों में संगोष्ठी आयोजित की गई जिसमें तीन सत्रों की अध्यक्षता ब्र. राकेश भैया तथा एक सत्र की अध्यक्षता ब्र. सरिता दीदी ने की। संचालन धर्मेन्द्र भैया जयपुर ने किया। संगोष्ठी के निर्देशक ब्र. संजय भैया पनागर रहे।

मूकमाटी में निहित राष्ट्र-भाषा और स्वदेश प्रेम

• डॉ. नीलम जैन, पुणे •

शब्द -शास्त्र के पारगामी अल्पतम शब्दों में वृहत्तम अर्थ को समायोजित करने में कुशल श्रमण-संस्कृति के भास्कर श्री वत्स प्रातः स्मरणीय संत शिरोमणि आचार्यप्रवर श्री विद्यासागरजी द्वारा विरचित 'मूकमाटी' एक ऐसा दिव्य-ग्रन्थ हैं जिसके अन्तरंग में वह अमृतवर्षिणी ज्ञान-धारा है जो न केवल हिन्दी साहित्य अपितु राष्ट्रव्यापी चिन्तन धरातल को अभिसिंचित और सरसीकृत कर रही है। ग्रन्थ रत्न से आत्मीय संगीत क्षणों में मैंने भी कवि मना संत के हृत्कमण्डलु से निःसृत अमृत जाहन्वी की विशद अक्षर धारा में राष्ट्र भाषा की आवश्यकता और राष्ट्र के हथकरघे में सजे संवरे तथा जीवनोपयोगी सूत्र ढूँढे जिनकी आधार भित्ति पर राष्ट्रीय महाभाव भव्यलोक प्रतिष्ठित हो सकता है।

कृति रहे, संस्कृति रहे।

आगामी असीम काल जाग्रत जीवित ॥1॥

तब अक्षर-अक्षर की आंतरिक लयात्मकता सहज ही प्रति ध्वनित करती है कि संस्कृति को कृति से सीधा सम्बन्ध सम्भाव्य है और उसकी अनुगूंज सजगता, जीवन्तता के साथ कालजयी होकर पीढ़ी दर पीढ़ी गतिमान रहती है, कृति का रूप स्वरूप, आकार-प्रकार कैसा हो, कृति की परिभाषा क्या है? तब.. मुस्कराते हुए शब्द अवतरित होते हैं...

**स्व को स्व के रूप में
पर को पर के रूप में
जानना ही सही ज्ञान है
और स्व में रमण करना
सही ज्ञान का फल ॥2॥**

लोगों को जब स्वत्व का बोध होने लगता है तो राष्ट्रवाद हिलोरे मारता है। किसी भी रूप में वर्ण संकर कृति कार को स्वीकार नहीं। स्व और पर को जानकर रचित कृति में संस्कृति धड़कती है। यह संकेत है, वह प्रकाश है जो महापुरुष ही दे सकते हैं। स्पष्ट कहती है मूकमाटी। सही ज्ञान प्राप्त ही तब होगा जब स्व और पर को पृथक् समझें। स्व की महत्ता और प्रभुसत्ता का संज्ञान करें - कृति शब्दों का समुच्चय, भाषा का दर्पण और लिपि का संप्रसरण है। मूल स्व के अन्तरंग को नष्ट कर शब्द का, भाषा का प्रयुक्त किया जाना समाज की ज्ञानधारा को बाधित और विचारधारा को कलुषित करता है, इसीलिए स्वभाषा में परभाषा का मिश्रण संस्कृति और संस्कार मण्डल दोनों को क्षतविक्षत करता है। दुर्भाग्य अपने देश में कुछ ऐसा ही हो रहा है। भाषाओं से भारत का भारतत्व लुप्त हो रहा है और अनजाना 'इण्डिया' अंगड़ाई ले रहा है। इसी कारण संभवतः राष्ट्रप्रेम की पवित्र भावनाएं भी विज्ञापनी लय गूंज में व्याप्त हो रही है।

कृतिकार भगवान महावीर की वंश परम्परा

के संवाहक है। सर्वप्रथम विदेशी भाषा भगाओ के आन्दोलन के जनक भगवान महावीर थे। उन्होंने अपने देश की भाषा की अपार ऊर्जा को पहचाना था। उन्होंने उस भाषा का उपयोग किया जो जन-जन की थी। सामान्य से सामान्य की थी, इसीलिए भाषा संस्कृति, संरक्षण एवं जीवन मूल्य समायोजन की उदार ऊर्जा थी। मूकमाटी कार राष्ट्रहित में हिन्दी भाषा की पहल इसलिए करते हैं कि भाषा समाज संगठन की साधना लब्धि है। भाषा ही विचार बनकर लेखनी और वाणी में ढलती है।

**विचारों की अनुचरा होती है
होती...**

**विचारों की सहचरा होती है
जल में तैरती-सी
संवेदन करती है लेखनी**

और क्या होता है विदेशी भाषा की भाषी संसर्ग से भाषा में व्यक्ति स्वयं होता है होती है उसकी परम्परा, इतिहास और संस्कार। हम यदि यह सब जानकर भी स्वयं को विचलित और विघटित करते हैं तो यह राष्ट्रीय अपराध है क्योंकि -

**पश्चिमी सभ्यता
आक्रमण की निषेधिका नहीं है
अपितु
आक्रमणशीला गरीयसी है,
जिसकी आखों में
विनाश की लीला विभीषिका**

घूरती रहती है सदा सदोदिता ॥3॥
भाषा-जब-जब अपनी संस्कृति की

आंतरिकता से निच्छिन्न हुई है। तब-तब उसके कुफल उस भाषायी समाज को भोगने पड़े हैं। भाषा अनिवार्य रूपेण एक सांस्कृतिक संरचना है। अपनी समाज की परम्परा का स्मृति-कोश है। आचार्यश्री इसीलिए हिन्दी भाषा की प्रतिष्ठापना को महत्व दे रहे हैं -यूँ भी-

**महापुरुष प्रकाश में नहीं आते
आना भी नहीं चाहते
प्रकाश प्रदान में ही
उन्हें रस आता है ॥4॥**

आज अंग्रेजी के प्रति बढ़ता व्यामोह अंग्रेजी का सत्कार एवं हिन्दी का निरादर करने वालों के कारण ही आज भारत की संस्कृति युवा पीढ़ी के संस्कार नष्ट हो रहे हैं। हिन्दी के पास वह राष्ट्र दृष्टि है, जिससे भारत की एकता के तन्तु जुड़ते हैं। प्राचीन भारतीय आर्य भाषाओं की परम्परा लेकर नई भारतीय भाषाओं तक की सारी उपलब्धियों को समेटने का कार्य हिन्दी ने किया। वैश्वीकरण और कम्प्यूटर की सूचना क्रान्ति ने हिन्दी की क्षमता के कारण वैश्विक धरातल उपलब्ध किया। आज हिन्दी में जो गपशप, सजाल, विपत्र और अन्य सामग्री उपलब्ध है। अर्न्तजाल पर हिन्दी के संसाधनों की भरमार है।

आचार्यश्री के मंगल आशीर्वाद से अनुप्राणित प्रतिभास्थली एवं प्रशासनिक कोचिंग संस्थान से हिन्दी माध्यम को अपनाकर न जाने कितने उच्च पदस्थ हो रहे हैं तथा प्रतियोगिताओं में सफल हो रहे हैं। पिछले दिनों जिस प्रकार संघ लोक सेवा आयोग तथा

आई.टी.आई. संयुक्त प्रदेश परीक्षा के घोषित परिणाम आए उससे स्पष्ट है कि लार्ड मैकाले और उसके मानस पुत्रों ने हिन्दी पर आक्रमण कराया था। आज हमारे युवा अपने अकादमिक परिश्रम की संस्कृति शैली में उस वैचारिकों को प्रत्युत्तर देने में सक्षम है। विगत दिनों आई.आई.टी. के सफल 131043 उम्मीदवारी में 554 वे सफल छात्र हैं जिन्होंने हिन्दी माध्यम से परीक्षा की तैयारी की थी। मूकमाटी स्पष्ट कहती है कि हम यदि परिश्रम करें तो सफल होंगे, हमारी भीतरी कायरता ही हमें सही दिशा में प्रयासरत नहीं होने देती... हम अंग्रेजी के गुलाम बन गए....

सत्यतः आचार्यश्री ने हिन्दी भाषा के वैभव को सूक्ष्मता से देखा परखा और राष्ट्रभाषा में नितान्त मौलिक प्रयोगधर्मी ऐसी कृति दी जिसने साहित्य की अग्रिम पंक्ति को महिमा मंडित किया। वस्तुतः साहित्य वही है जो सुखकारक हो.. मंगलदायक हो... मूकमाटी भी कहती है

जिसके अवलोकन से

सुख का समुद्भव सम्पादन हो

सही साहित्य वही है

अन्यथा

सुरभि से रहित पुष्पसम

सुख का साहित्य है यह

सार-शून्य शब्द झुण्ड ॥7॥

हमें चाहिये इस संदर्भ में हम एकमत हो कि राष्ट्रभाषा को अपने जीवन का अंग बनाकर ही भारत के भारतत्व को इण्डिया बनने से बचा

सकते हैं। हमारी यही वैचारिक सभ्यता भारतीय सभ्यता का सुरक्षा कवच है। यही सन्देश प्रस्तुत करता है यह काव्य -

विचारों के ऐक्य से

आचारों के साम्य से

सम्प्रेषण में निखार आता है

वरना विकार आता है

विचारों का ऐक्य ही

सभ्य समाज का आधार बन सकता है

राष्ट्रीय एकता और सामाजिक सांस्कृतिक अविच्छिन्नता में जहाँ राष्ट्रभाषा महासेतु है वही राष्ट्र की प्रगति समृद्धि का आधार होता है वहाँ के व्यवसाय की प्रकृति एवं आर्थिक प्रगति अपने देश के संसाधन, भूमि और भूमिपूजन के बीच का सम्बन्ध राष्ट्रवाद और राष्ट्रभक्ति का आधार दर्शन बनता है। मूकमाटी शब्द माध्यम से राष्ट्र को ऐसा सार्थक विधान देती है, जिससे समाजवाद की स्थापना हो, पूँजीवाद वर्गवाद से दूर नैतिकता की सुवास प्रवाहित हो। गाँधी जी के अनुसार हस्तकला, लघु उद्योग वे सशक्त आर्थिक साधन हैं, जिससे आचार की शुद्धता, अनुशासन एवं सामाजिक समरसता बनी रहती है। साम्प्रदायिक सौहार्द्र, नैतिक चेतना की इस गंगा व संतोष धन की वृष्टि होती है। हस्तशिल्प की पक्षधर है मूकमाटी कला-सुख का आधार है।

क माने आत्म सुख

ला माने ला देता है

कोई भी कला हो

कला मात्र से

जीवन में

सुख शांति सम्पन्नता आती है

कला राष्ट्र प्रेम की धात्री है। हस्तशिल्पी कभी चोरी नहीं करता। कर की, राष्ट्रदोह नहीं होता अपने परिश्रम, पुरुषार्थ और बाहुबल पर विश्वास होता है। उसे विश्वास होता है शोषण मुक्त समाज का प्रतिनिधि होता है वह। संस्कृति की सुरक्षा हस्तशिल्प के विकास से ही संभव है -

अर्थ का अपव्यय करना तो

बहुत दूर

अर्थ का व्यय भी

यह शिल्प करता नहीं

बिना अर्थ

शिल्पी को यह अर्थवान बना देता है

युग के आदि से आज तक

इसने अपनी संस्कृति को

विकृत नहीं बनाया ॥1॥

स्टार्ट अप इण्डिया-स्टैण्ड अप इण्डिया

पूज्य प्रवर ने आज हस्तकरघा को अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया है। ये हस्तकरघा केन्द्र भविष्य के सांस्कृतिक आर्थिक समृद्धि केन्द्र और जीवन निर्माण के अध्ययन केन्द्र है। राष्ट्र के वित्त विभाग कल इन्हीं के आश्रित होंगे। मूकमाटी कहती है -

श्रमशीलों का हाथ उठना ही

कलियुग में सतयुग ला सकता है

धरती पर..यहीं पर

स्वर्ग को उतार सकता है ॥12॥

सम्पूर्ण विश्व आज जिस त्रासदी से त्रस्त

है वह है पूँजीवाद। जब अर्थ प्रतिष्ठित होता है तो अनर्थ जन्म लेता है। पूँजी का केन्द्रीयकरण ही राष्ट्र की भीतरी बाहरी आसुरी शक्तियों को प्रोत्साहित करता है। निजी हानि-लाभ की आकांक्षा से सर्वथा मुक्त होने वाला ही अपने भीतर आत्मोत्सर्ग तथा श्रमशीलता जैसे दिव्य गुण संचरित कर सच्चा राष्ट्र का नागरिक बनता है। अर्थ को प्रधानता देने वाला वैमनस्य की विष वेश का ही पोषण करता है -

पूँजीवाद से

एक का उत्थान

एक का पतन

एक धनी, एक निर्धन

एक गुणी, एक निर्गुण

एक सुंदर, एक बंदर

यह सब क्यों ॥13॥

यह श्रमशीलता जिन्दगी की महक है जो कोमल मिट्टी के भीतर छिपकर इन्सान के ईमान को गढ़ती है। देश में उद्योगपतियों, पूँजीपतियों के कारण ही सामान्य जन सुखी सम्पन्न नहीं हो पाते। कारण स्पष्ट है...

क्या पता नहीं तुझको

छोटी मछली

बड़ी मछली को निगलती है ॥14॥

समाज में क्रूरता एवं निर्लज्जता का कारण यह धनिक वर्ग ही है और इसका कारण है लघु उद्योग और हस्तशिल्प को विकास के अवसर न मिलना। वर्तमान जन जीवन यन्त्रों के अनियंत्रित प्रयोग के कारण अमानवीय होता जा रहा है। कुटीर उद्योग तथा श्रम से संचालित

धंधे मनुष्य को जीविका का साधन तो देते ही है साथ ही वे स्पर्धा और विक्षोभ से मुक्त आत्म तुष्टि भी प्रदाय करते हैं। आचार्य श्री रचनात्मक श्रम की आवश्यकता पर बल देते हैं। संघर्ष को जन्म देने वाली और मानवीय मूल्यों को क्षति पहुँचाने वाली विक्रय-स्पर्धा (मार्केट-इकानामी) को उन्होंने निर्गहणा की है। आज जब सफेद खादी भी कर्णधारों के काले कर्मों को ढांपने में अब असमर्थ हो रही है। प्रजातन्त्र में स्वर्णसिद्धि के लिए अशक्तता और वैमनस्य फैले और जनता के सेवक कहलाने वाले उच्च वेतनभोगी बनकर सम्राटों का सा जीवन व्यतीत करें। तब सन्त की लेखनी चुप नहीं रहती-

1. लोभी पापी मानव प्राणी ग्रहण को भी प्राण ग्रहण का रूप देते हैं ॥15॥

2. अब धन संग्रह नहीं जन संग्रह करो ॥16॥

3. तुच्छ स्वार्थ सिद्धि के लिए, कुछ व्यर्थ प्रसिद्धि के लिए सब कुछ अनर्थ घट सकता है ॥17॥

मानवता के भावी कल्याण और भारतवर्ष की समग्र समुन्नति की भावी संभावनाएँ उन्हें श्रमिक वर्ग के उन्नयन से ही प्रारम्भ होती है। उत्पादन के नवीन यंत्रों पर जिस विशेष वर्ग का अधिकार रहा है उसके हाथ जन-साधारण के शोषण का हथियार भी लगा है। पूँजीवादी युग ने संसार को जो विविध ज्ञान-विज्ञान, कला, यन्त्रों का अद्भुत कौशल दिया है उसके अनुसार सभ्यता और मानवता

का प्रादुर्भाव न होने का मुख्य कारण पूँजीवाद ही है। यही स्वदेशी वस्तुओं से प्रेम न होना। राष्ट्र में विदेशी कम्पनियों को फलने-फूलने और अपने देश के कला कौशल को मृतप्रायः करके ही भारत विपुल मात्रा में प्राकृतिक संसाधन सम्पन्न होते हुए भी विकसित नहीं हो पाया। राष्ट्र का अर्थतन्त्र मुट्ठी भर लोगों के हाथों में सिमट गया। गरीबी, मँहगाई आज भी जनता की कमर तोड़ रही है, चूँकि -

यह कटु सत्य है कि

अर्थ की आँखें

परमार्थ को देख नहीं सकती

अर्थ की लिप्सा ने बड़े बड़ों को

निर्लज्ज बनाया है ॥18॥

कुटीर उद्योग को महत्व देने के पृष्ठ में अनेक कारण है। आचार्यश्री की रचना में यह स्वर बार-बार गूँजता है कि जीवन विकास का एक बहुत बड़ा बाधक तत्त्व धनिक और श्रमिक के बीच की खाई है।

अरे धनिकों का धर्म दमदार होता है

उनकी कृपा कृपणता पर होती है

उनके मिलन से कुछ मिलता नहीं ॥19॥

इस खाई को पाटने के लिए वे जिन साधनों का प्रयोग करते हैं वे साधन मार्क्सवादी वर्ग संघर्ष से भिन्न है। रक्त क्रांति अथवा हिंसक वर्ग संघर्ष के स्थान पर वे श्रम-शीलता, ईमानदारी, शिक्षा, सहिष्णुता जैसे साधनों का प्रयोग करना चाहते हैं। इसके लिए मानसिक श्रम ही नहीं शारीरिक श्रम को प्रतिष्ठा देते हैं। साधनों की पवित्रता और साध्य की लोक

हितकारिता विकास की सच्ची कसौटी है। मिट जाता है। आचार्यश्री के चिन्तन में स्वदेश अनुचित साधनों से प्राप्त धन बेमानी है। उपलब्धियों की सौगात जीवनभर प्राप्त करने के लिए आवश्यक है, हमारे धन के स्रोत पवित्र हो, अर्थ अनर्थकारी न हो इसके लिए आचार्य श्री कहते हैं कि शिल्प से संस्कृति सुरक्षित रहेगी -

अर्थ का अपव्यय करना तो

बहुत दूर

अर्थ का व्यय भी

यह शिल्प करता नहीं

बिना अर्थ

शिल्पी को यह अर्थवान बना देता है

युग के आदि से आज तक

इसने अपनी संस्कृति को

विकृत नहीं बनाया ॥20॥

मूकमाटी ने दो दशक पूर्व ही स्टार्ट अप इण्डिया और स्टैण्ड अप इण्डिया का ब्लू प्रिण्ट तैयार कर दिया था। नागरिक जब तक अर्थ की तुला पर ही सब कुछ तौलते रहेंगे तब तक समाज से ईर्ष्या-द्वेष, वैमनस्य एवं बुराईयों का अन्त नहीं होगा। राष्ट्र की अर्थनीति के लिए आवश्यक है -

अर्थ भी आँखें

परमार्थ को देख नहीं सकती

अर्थ की लिप्सा ने बड़े बड़ों को

निर्लज्ज बनाया है ॥18॥

कुटीर उद्योगों के विकास से जहाँ एक ओर बेकारी की समस्या को समाधान मिलेगा वहीं स्वामी सेवक का विभेद भी बहुत सीमा तक

मिट जाता है। आचार्यश्री के चिन्तन में स्वदेश प्रेम के लिए आवश्यक है आर्थिक दृष्टि की निर्मलता। आज राष्ट्र में जो विक्षोभ और द्वन्द्व दिखाई देता है। उसका कारण आचार्यश्री की दृष्टि में मुद्रागत कृत्रिम अर्थशास्त्र ही है। अधिकार, लालस और द्वन्द्व का अन्त उत्पादक श्रम में प्रत्येक व्यक्ति के लग जाने से होगा अन्यथा ऐतिहासिक विडम्बनाओं (सामन्तवाद, पूँजीवाद, यन्त्रवाद, प्रगतिवाद) की पुनरावृत्ति होती रहेगी। मनुष्य मनुष्य के मध्य अविश्वास सूचक निर्जीव माध्यम (मुद्रा) रखकर उससे किसी सजीव (सांस्कृतिक अथवा आन्तरिक) निर्माण की आशा नहीं की जा सकती। इसीलिए आचार्यश्री धनसंग्रह पर नहीं जनसंग्रह पर बल देते हैं। वस्तुतः जब तक मनुष्य भीतर से नहीं सुधरता। राजनीतिक और आर्थिक पद्धतियाँ उसकी अशान्ति को दूर न कर सकेंगी जब वह अन्दर से जाग्रत हो जाएगा, संस्कार शीलवान बन जाएगा, स्वदेशी प्रेमी होगा तब उसकी सारी समस्याएँ स्वतः सुलझ जायेगी। आचार्यश्री ने ऐसी समतामूलक संस्कारी जीवन व्यवस्था के ढाँचे में धरती के जीवन के प्रति प्रेम तथा हृदय की पवित्रता को प्रतिष्ठित करने का आग्रह किया है।

धरती की प्रतिष्ठा बनी है

और हम सबकी

धरती में निष्ठा बनी रहे ॥22॥

यही सहज गतिशील जिन्दगी की महक है जो कोमल मिट्टी के भीतर छिपकर इंसान के

ईमान को गढ़ती है चूँकि... आचार्यश्री के आर्थिक चिन्तन में कुटीर उद्योगों तथा सरल और सुलभ साधनों की सहायता से सम्पन्न होने वाली हाथ की कारीगरी को स्वस्थ जीवन विकास का उपादेय माना गया है। उन्होंने कुलाल के माध्यम से श्रम की महत्ता रूपायित की है -

कुलाल चक्र यह

वह ज्ञान है

जिस पर जीवन चढ़कर

अनुपम पहलुओं से निकलकर है

उन्नति श्रमशीलता की कसौटी है, जहाँ श्रमशीलता है वहाँ समृद्धि है। उन्होंने लिखा है-

परिश्रम करो

पसीना बहाओ

बाहुबल मिला है तुम्हें

करो पुरुषार्थ से ही

पुरुष की पहचान करो सही ॥24॥

आज व्यक्ति अर्थ का दास हो चुका है, जो समाज सभ्य की संगति में खिलता-खुलता न हो, जहाँ विवेक चापलूसों के तलवे चाट रहा हो, जहाँ अभिशप्त पीड़ित लोगों की आँहें सुनने वाला कोई न हो अर्थ वैषम्य की दुर्गन्ध में जन-जीवन सड़ रहा हो तब गुरु की करुणा पुकारती है, सावधान करती है-और संस्कारित होने को कहती है।

जीवन को ऊपर उठाया जा सकता है उचित-अनुचित के सम्पर्क से

सबमें परिवर्तन सम्भव है

परन्तु यह ध्यान रहे

शारीरिक आर्थिक शैक्षणिक आदि

सहयोग भाव से

नीच नहीं बन सकता उच्च

इस कार्य का सम्पन्न होना

सात्विक संस्कार पर आधारित है॥

वस्तुतः मूकमाटी सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं वैश्वीकरण से सम्बन्धित जीवन का इतना सजीव व वास्तविक चित्र हमारे सामने करती है कि ऐसा प्रतीत होता है कि हमने आने वाली समस्याओं और उनके समाधान को पहले ही समझ लिया हो। आज के इस इंटरनेट युग में राष्ट्रभाषा में रचित यह काव्य सम्पूर्ण विश्व की भाषाओं में अनुदित होकर जाए तो मुझे विश्वास है। विश्व सचमुच एक कुटुम्ब बन जाएगा और विश्व संसद में सर्वप्रथम इन्हीं पंक्तियों की अनुगूँज होगी ... और वहीं नहीं कोई शिल्पकार भी ध्वज की तरह अपने कुलाल को लेकर चेहरे पर गुलाबी आभा के साथ कह रहा होगा...

शरण, चरण है आपके,

तारण तरण जहाज

भवदधि तट तक ले चलो

करुणाकर गुरुराज ॥

आओ हम भी कहें -

है भव्य भारत ही हमारी मातृभूमि,

हरी-भरी हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि है नागरी।

आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में संस्कार मेला - 2017

दिनांक 17 से 19 नवम्बर 2017, चंदेरी (म.प्र.)

सान्निध्य : ऐलकश्री सिद्धांतसागरजी महाराज

आमंत्रित अतिथि गण

अन्तर्राष्ट्रीय उपाध्यक्ष - विश्व हिन्दू परिषद

माननीय हुकमचंदजी सांवला, इन्दौर

ब्र. जयकुमार निशांत, टीकमगढ़, ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर,

ब्र. सुदेश कोठिया, इन्दौर, पं. विनोदकुमार जैन रजवास,

अभिनंदन सांधेलीय, पाटन (जबलपुर)

डॉ. ज्योति जैन, खतौली, डॉ. मुकेश जैन विमल, दिल्ली

ब्र. समता दीदी इन्दौर, डॉ. पंकज जैन, भोपाल, डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

विनीत जैन (प्राचार्य) सादूमल, अक्षय अलया, ललितपुर, इंजी अभिषेक जैन रिकू, इन्दौर

कार्यक्रम

17 नवम्बर 2017, शुक्रवार - संस्कार जागरण यात्रा - प्रातः 8 बजे से

पत्रकार सम्मेलन - दोप. 2 बजे से

स्वर संगम निशा - रात्रि 7 बजे से

18 नवम्बर 2017, शनिवार - विद्वत् संगोष्ठी - प्रातः 8 बजे से

रांगोली प्रतियोगिता - दोप. 12 बजे से

शाकाहारी व्यंजन प्रतियोगिता - दोप. 1 बजे से

महिला सम्मेलन - दोप. 2 बजे से

नृत्य नाट्य प्रतियोगिता - रात्रि 7 बजे से

19 नवम्बर 2017, रविवार - सर्वधर्म सम्मेलन - प्रातः 8 बजे से

युवा सम्मेलन - दोप. 2 बजे से

अखिल भारतीय जैन मिलन के तत्वावधान में

समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह - रात्रि 7 बजे से

आचार्य विद्यासागर महाराज के साहित्य में चेतना

• डॉ. ज्योति जैन, खतौली •

सौभाग्य हमारा कि हम उस आध्यात्मिक संत की दीक्षा संयम स्वर्ण जयंती महोत्सव मना रहे है जो जात-पात धर्म सम्प्रदाय भाषा आदि से ऊपर उठकर राष्ट्र और राष्ट्रीयता की भावना रखते हैं। सम्पूर्ण विश्व एवं मानवता को शान्ति और कल्याण का मार्ग दिखा रहे हैं। समाज के जीवन मूल्यों, भौतिक, राजनैतिक, वैचारिक परिवेश के साथ मानवीय संवेदनाओं की पृष्ठभूमि आचार्यश्री के साहित्य में दृष्टिगोचर होती है।

राष्ट्र और राष्ट्रीयता एक भावात्मक एवं मनोवैज्ञानिक विषय है। यद्यपि अनेक विचारकों/दार्शनिकों ने इसे परिभाषित किया है पर इसकी निश्चित परिभाषा नहीं दी जाती सकता है। देश के प्रत्येक नागरिक के मन में अपने देश के प्रति एक भावात्मक लगाव होता है। हमारा देश, हमारे लोग, हमारी संस्कृति, हमारा गौरव यह सब देश की राष्ट्रीय चेतना को मुखरित करते हैं। राष्ट्रीय चेतना नागरिकों के जीवन और आदर्शों से संबंध रखती है प्रस्तुत लेख के माध्यम से उन प्रसंगों, उन पंक्तियों, उन भावनाओं को रेखांकित करना चाहती है जो आचार्यश्री ने राष्ट्र और राष्ट्रीयत्व के प्रति समय-समय पर व्यक्त किये हैं। राष्ट्रीय भावना से सराबोर गुरु महाराज ज्ञानसागर का यह कथन कि मेरा शरीर ही राष्ट्रीय सम्पत्ति है

(कर्त्तव्य पथ प्रदर्शन) रोम-रोम पुलिकित कर देता है।

आचार्य विद्यासागरजी महाराज एक राष्ट्रीय संत है। उनके कठोर तप और संयम की साधना देख लाखों श्रद्धालु नतमस्तक हो जाते हैं। स्वकल्याण के साथ साथ प्राणी मात्र का कल्याण उनका पावन ध्येय है।

गणतंत्र का महत्त्व आचार्यश्री ने बाल्यकाल से ही समझ लिया था। लोकमान्यतिलक, सुभाषचन्द बोस, महात्मा गांधी, सरदार पटेल, जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय नेताओं के बनाये रेखाचित्र बालक विद्याधर की राष्ट्र के प्रति भावना को उजागर करते हैं

जैन समाज सदैव राष्ट्रीय धारा में सम्मिलित रहा है। देश की आजादी के प्रत्येक आंदोलन में जैनों की सहभागिता रही है। गांधीजी द्वारा चलाये गये अहिंसात्मक आंदोलन के मूल में अहिंसा की विचारधारा ही बह रही थी। स्वतंत्रता गणतंत्र आदि शब्द जैन संस्कृति की देन है। आचार्यश्री के आशीर्वाद से ही स्वतंत्रता संग्राम में जैन कृति का सृजन हुआ जिसमें जैनों के योगदान और उनकी राष्ट्रीय भावना का जीवंत चित्रण किया गया है।

राष्ट्रीय चेतना में संस्कृति परम्पराओं का महत्त्व है। सांस्कृतिक चेतना के आधार पर ही राजनैतिक चेतना का विकास होता है।

आचार्यश्री सदैव अपने प्रवचनों में भारतीय संस्कृति की बात करते हैं। आचार्यश्री अपने प्रवचनों में सभी महापुरुषों का जिक्र करते हैं। राष्ट्रीय एकता की चर्चा करते हैं। आज विष्णु की उपासना करने वाला वैष्णव है या बुद्ध की उपासना करने वाला बौद्ध है जिनेन्द्र की उपासना करने वाला जैन है, पर ध्यान रखना धर्म सम्प्रदायातीत है। मैं जैन हूँ, जैन हिन्दू हूँ, मैं सिक्ख हूँ या ईसाई हूँ या मुस्लिम हूँ। इस प्रकार की मान्यता हमारे समाज रूपी महासागर के विशाल अस्तित्व को समाप्त करने वाली है। हमारा कर्त्तव्य है कि हम धर्म के वास्तविक रूप को समझे धर्म को जीवन में फैलाये और एक साथ रहकर परस्पर एक-दूसरे के प्रति प्राणी मात्र के प्रति समूचे अस्तित्व के प्रति सद्भाव रखें (आचार्य विद्यासागर ग्रन्थावली)। यही भावना हमारी राष्ट्रीय चेतना को समरसता प्रदान करती है।

भाषा राष्ट्रीय चेतना का एक शक्तिशाली भाव है। “**इंडिया हटाओ-भारत लौटाओ और मातृभाषा हिन्दी अपनाओ**” का जो जन आन्दोलन आचार्यश्री और उनके संघ के माध्यम से चल रहा है जन-जन को न केवल प्रभावित कर रहा है अपितु कुछ करने का भाव पैदा कर रहा है।

महात्मा गांधी जी की राष्ट्रीय भावना और उसमें निहित आध्यात्मिक चेतना को आचार्यश्री ने अनेक बार अपने प्रवचनों में स्थान दिया है। अनेक संस्मरण वह सुनाते हैं।

आज खादी-हथकरघा स्वदेशी अपनाने का जो जनजागरण हो रहा है, उससे हमारी राष्ट्रीय भावना को बल मिल रहा है।

मानव धर्म राष्ट्रीय चेतना को दृढ़ बनाता है। दया, करुणा की भावना, संवेदनार्थे जाग्रत करती हैं। आचार्यश्री मांस निर्यात, बूचड़खाने, गौ हत्या, प्रसाधनों के नाम पर अन्धाधुन्ध हिंसा, मुर्गी पालन, मछली पालन का विरोध कर प्राणी मात्र के प्रति दया करुणा का संदेश दे रहे हैं।

आचार्यश्री अपने प्रवचनों के माध्यम से एक अच्छा नागरिक बनने की प्रेरणा देते हैं। धर्म और नैतिकता से राष्ट्रीय चेतना को बल मिलता है। निर्मल चरित्र किसी भी देश की पूँजी होती है। आचार्यश्री कहते हैं ‘ही’ एकान्त दृष्टि है और ‘भी’ अनेकान्त ‘भी’ लोकतंत्र की रीढ़ है। मूकमाटी में रचित ये पंक्तिया दृष्ट्य है -

लोक में लोकतंत्र का नीड/तब तक सुरक्षित रहेगा/जब तक भी श्वांस लेता रहेगा/ ‘भी’ से स्वच्छन्ता-मदान्धता मिलती है स्वतंत्रता के स्वप्न साकार होते हैं/सद्विचार सदाचार के बीज/‘भी’ में हैं ‘ही’ में नहीं।

आचार्यश्री ने राजनैतिक सन्दर्भों में राजसत्ता को की शैय्या कहा है। शासक तभी घोषित नारों को यथार्थ रूप दे सकते हैं। जब वे स्वयं उसी रूप में प्रयोग करें।

धनसंग्रह नहीं, जनसंग्रह करें, क्रूर, अपराधी को क्रूरता से दंडित करना भी अपराध

है। धर्म का झण्डा भी डण्डा बन जाता है। पथ दिखाने वालों को पथ नहीं दिख रहा। जबतक जीवित हैं आतंकवाद, शांति का श्वास ले नहीं सकता; न्यायालय में न्याय प्रायः बहुमत का परिणाम। यही तो होता है, पात्र भी अपात्र की श्रेणी में आता है। अनगिनत भावमूकमाटी में प्रतिबिम्बित होते हैं।

इसके साथ ही आचार्यश्री ने आह्वान किया है -

राजभाषा हिन्दी को अपनाओ,

भारत बचाओ, कृषि पालन, हथकरघा पर पल दो, जागरूक मतदाता बनो, गौरक्षा के लिये गौपालक बनो, बिटिया को संस्कारित और शिक्षित बनाओ, स्वदेशी बनो, शाकाहार के प्रचार-प्रसार में सहयोग दो आदि अभिष्ट सूत्र उन्होंने दिये हैं। पूज्य सुधासागरजी महाराज (ससंघ) पूज्य अभयसागरजी महाराज(ससंघ)

पूज्य प्रमाणसागरजी महाराज(ससंघ) एवं समस्त आचार्य संघ के मुनि महाराज इन राष्ट्रीय बिन्दुओं के प्रचार प्रसार में महतीय योगदान दे रहे हैं और हमारे लिये यह गौरव की बात ही कि चाहे देश के माननीय राष्ट्रपति महोदय हो या प्रधानमंत्री या अन्य मंत्री गण, उच्च प्रशासनिक अधिकारी, आचार्यश्री की राष्ट्रीय संवेदनाओं से प्रभावित हो उनसे मिलने का कोई भी अवसर नहीं छोड़ते।

अंत में मूकमाटी की पंक्तियों के साथ लेख को विराम ..

यहां सब का सदा/जीवन बने मंगलमय/छा जाये सुख, पाप सबके टलै/अंगल भाव/सबकी जीवन लता हरित भरित विहंसत हो/गुण के फूल विलासित हो /नाशा की आशा मिटे/ आमूल महक उठे.. बस

1008 स्थापना वेदी प्रतिष्ठा कलशारोहण ध्वजा एवं वार्षिक उत्सव महामस्तकाभिषेक आचार्य पदारोहण दिवस

इन्दौर। आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के स्वर्णिम दीक्षा वर्ष के अवसर पर श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, ए.बी. रोड इन्दौर में आचार्यश्री की आज्ञानुवर्ती शिष्या आर्थिकाश्री 105 आदर्शमति माताजी ससंघ सानिध्य में दिनांक 19 से 23 नवम्बर 2017 को 1008 जिनबिम्ब स्थापना वेदी प्रतिष्ठा, कलशारोहण, ध्वजारोहण एवं वार्षिक महामस्तकाभिषेक, आचार्य पदारोहण दिवस मनाया जायेगा। जिसमें 19 नवम्बर को महामस्तकाभिषेक, 20 नवम्बर को घटयात्रा, ध्वजारोहण, इन्द्र प्रतिष्ठा, मंडप प्रतिष्ठा, सकलीकरण, 21 नवम्बर को यागमंडल विधान, 22 नवम्बर को आचार्य पदारोहण दिवस, आचार्य छत्तीसी विधान, 23 नवम्बर को जिनबिम्ब विराजमान, कलशारोहण ध्वजारोहण, किया जायेगा।

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता

अक्टूबर 2017

प्रथम - समझ उठ रे चेतन

विषयों के आकर्षण में
सुलझा मानव भटक रहा
माया वैभव के सपनों से
यह संसारी अटक रहा
भूल चुका निजपद महिमा को
समझ न पाया निज केतन
गुरु उपदेश सुनो थोड़ा
समझ उठ रे चेत रे चेतन

-श्रीमती विनीता जैन, इन्दौर

द्वितीय -

आश कितनी ही लगा लो

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा

सितम्बर 2017

प्रथम : कपूरचंद जैन बंसल, जतारा, टीकमगढ़ (म.प्र.)
द्वितीय : चंद्रेशकुमार जैन, सागर (म.प्र.)
तृतीय : श्रीमती हीरमणि छाबड़ा, कोलकाता (पं.बंगाल)

सुख नहीं जड़ द्रव्य में
मूर्ख बन भटके सदा ही
संसार के इस नृत्य में
साथ न तेरा निभाये
जल जायेंगे यह नश्वर तन
तू अकेला ही रहेगा
समझ उठ चेत रे चेतन

- श्रीमती रूचि जैन, सागर

तृतीय -

दुनिया दुर्गंगी मकाएं सराय
कभी खैर दिखती कभी हाय हाय
कभी तो पुराना कभी दिखता नूतन
कभी जन्म मृत्यु कभी है परिवर्तन
गुरु ने जगाया समझ उठ चेत रे चेतन

-श्रीमती रजनी जैन, राहतगढ़

वर्ग पहली क्र. 221

सितम्बर 2017 के विजेता

प्रथम : श्रीमती इन्द्रा जैन, इन्दौर (म.प्र.)
द्वितीय : श्रीमती अनिता जैन, सागर (म.प्र.)
तृतीय : श्रीमती अंजू जैन, घुवारा (म.प्र.)

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा : अक्टूबर 2017 का हल

- | | | | |
|-------------------------------|----------------------------|-----------------|----------------------------|
| 1. श्री अशोकपाटी, किशनगढ़ | 14. श्री समयसारजी | 26. चारित्र | 39. खानियाजी, जयपुर |
| 2. श्री प्रभातजी, मुंबई | 15. साधु | 27. संयममय | 40. पिता |
| 3. श्री पंकज जैन, दिल्ली | 16. सन् 1967 में | 28. आचार्यश्री | 41. आत्मानुभूति |
| 4. जैन विद्यापीठ | आचार्य देशभूषणजी से | 29. विधानसभा | 42. मुक्त |
| 5. तीन | 17. 22 वर्ष | 30. मौलिक चिंतन | 43. अनंत गुणों का |
| 6. चार | 18.30 जून 1968, अजमेर | 31. व्यवहार | 44. घी |
| 7. तीन | 19.22 नवम्बर 1972 | 32. झुकना | 45. इन्द्रत्व |
| 8. फरवरी 1987 में | 20. पंचबालयति मंदिर, इंदौर | 33. ऋजुता | 46. आचार्य कुंदकुंद स्वामी |
| 9. 1978 में | 21. तीर्थकरों | 34. सिद्धत्व | 47. गुरु |
| 10. पाँच | 22. प्रवचन | 35. पानी | 48. जयपुर (राज.) |
| 11. 5000 | 23. श्रुत परम्परा | 36. संग्रह | 49. देशभर |
| 12. आर्थिका तपोमतिजी | 24. धर्म कथा | 37. आचरण | 50. सम्पूर्ण देश का |
| 13. श्री सिद्धक्षेत्र नैनागिर | 25. षोडश कारण | 38. उद्धार | |



पुराण प्रेरणा

जिननाथ

जय त्रैलोक्यनरेश सर्व दोष क्षयंकर ।

जय त्वम् त्रिजगद् भव्य पद्माकर दिवाकर ।

समस्त दोषों को क्षय करने वाले, तीनों लोकों के नाथ ईश आपकी जय हो । तीनों लोकों के भव्य जीव रूपी कमलों के समूह के लिये सूर्यरूपी आपकी जय हो ।

जय त्वम् केवलज्ञान लोकालोक प्रकाशक ।

जय त्वम् जिननाथात्र विघ्न कोटि प्रणाशक ॥

लोकालोक के प्रकाशक केवलज्ञान ! तुम्हारी जय हो ! यहां पर करोड़ों विघ्नों के विनाशक जिननाथ ! तुम्हारी जय हो ।

जय त्वम् धर्म तीर्थेश परमानन्द दायक ।

जय त्वम् सर्व तत्त्वार्थ सिन्धु वर्धन चन्द्रमा ॥

धर्म तीर्थ के स्वामी, परम आनन्ददायक ! तुम्हारी जय हो । समस्त तत्त्वार्थ सागर की बुद्धि के लिये चन्द्रमा स्वरूप तुम्हारी जय हो ।

त्वम् देव त्रिजगत्पूज्यस्त्वं सदा त्रिजगद् गुरुः ।

त्वम् सदा त्रिजगद् बन्धुस्त्वं सदा त्रिजगद्पतिः ॥

समस्त प्राणियों का हित करने वाले, सबके स्वामी, सर्वज्ञ तुम्हारी जय हो । शीलसागर जितकाम तुम जयशील हो ।

कर्मणां निर्जयाद्देव त्वं जिनः परमार्थतः ।

त्वमेव मोक्षमार्गो हि साररत्नत्रयात्मकः ॥

हे देव ! तुम तीनों लोकों में पूज्य हो, तुम सदा तीनों लोकों के गुरु हो, तुम सदा तीनों लोकों के बन्धु हो, तुम सदा तीनों लोकों के स्वामी हो ।

त्वम् पापारिहरत्वाच्च हरस्त्वं परमार्थवित् ।

भव्यानां शंकरत्वाच्च शंकरस्त्वं शिवप्रद ॥

कर्मों को जीतने से तुम परमार्थ रूप जिन हो । तुम ही रत्नत्रय के सार स्वरूप मोक्षमार्ग हो ।

माथा

पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों को क्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए ।

1. आ य् अ न् त् र् ह् आ उ ई आ अ य् त् प् र् ष् अ

--	--	--	--	--	--	--	--	--	--

2. र् उ प् र् ए द् ण् आ गु

--	--	--	--	--	--

3. न् क् व् आ न् अ इ दु य उ ब् आ जि

--	--	--	--	--	--	--	--

4. अ व् य् ई व् आ ण् दि

--	--	--	--

5. ण् आ द् य् आ व् ण् ई वि

--	--	--	--

परिणाम :

अक्टूबर 2017: (1) समयोपदेश (2) परमोपदेश (3) दिव्योपदेश (4) विद्यावाणी (5) दिव्यवाणी

सरल मैनेजमेंट से बनाये शानदार कैरियर

कैरियर



अगर आप गांवों के करीब से देख-समझ कर अपना कैरियर बनाना चाहते हैं तो रूरल मैनेजमेन्ट की पढ़ाई कर सकते हैं ।

देश की आंधी से अधिक आबादी गांवों में रहती है । देश के कृषि उत्पादन से लेकर उत्पादों में आज भी बिजली, सड़क, शिक्षा-स्वास्थ्य की सही व्यवस्था नहीं है । ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक और सामाजिक विकास की रफ्तार तेज करने के लिये रूरल मैनेजमेन्ट प्रोफेशनल्स की बेहद जरूरत है । रूरल मैनेजमेन्ट अच्छे पैकेज और रोजगार की संभावनाओं के चलते करियर का बेहतर विकल्प है । इस फील्ड में मास्टर्स डिग्री होल्डर की शुरुआती कमाई 5 से 6 लाख रुपये सलाना होती है । सरकार के नियमों के अनुसार हर कम्पनी या फर्म को अपने शुद्ध लाभ का 2 फीसदी सीएसआर (कॉर्पोरेट सोशल रेस्पॉन्सिबिलिटी) पर खर्च करना पड़ता है । ऐसे में कई कम्पनियां इस खर्च को ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता, शौचालय, शिक्षा और स्वास्थ्य पर खर्च करती हैं । इस कार्यक्रम का मैनेजमेन्ट करने के लिये कम्पनियां रूरल मैनेजमेन्ट प्रोफेशनल्स को नियुक्त करती हैं । भविष्य में सभी कम्पनियों को ऐसे कार्यक्रम के तहत रूरल मैनेजमेन्ट प्रोफेशनल्स की आवश्यकता होगी ।

कई अवसर मौजूद हैं - रूरल मैनेजमेन्ट प्रोफेशनल्स की मुख्य जिम्मेदारी ग्रामीण विकास परियोजनाओं की तैयारी, उनका क्रियान्वयन और विकास को बेहतर बनाने के तरीके तलाशना है । मैनेजमेन्ट से संबंधित सभी स्ट्रीक्स में उनके लिये अवसर है । वे सरकारी और निजी क्षेत्र की कंपनियों

और गैर-सरकारी संस्थाओं में मैनेजर, कंसल्टेन्ट या रिसर्चर के रूप में काम कर सकते हैं । इसके अलावा रूरल कॉर्पोरेटिव सेक्टर, एग्री बिजनेस फूड एण्ड एग्रीकल्चर मार्केटिंग आदि में बी रूरल मैनेजर्स के लिये रोजगार के अवसर हैं ।

योग्यता - न्यूनतम 50 प्रतिशत अंकों के साथ स्नातक डिग्री, कैट, मैट, सीमेट, एटीएमए, एक्सएटी, का वैधस्कोर या राष्ट्रीय स्तर पर अन्य कोई मैनेजमेन्ट एप्टीट्यूड टेस्ट स्कोर । स्कोर के परिणाम की प्रतीक्षा करने वाले / स्नातक के आखिरी वर्ष की परीक्षा देने वाले प्रत्याशी भी आवेदन कर सकते हैं ।

नौकरी के लिये हैं कई सेक्टर - रूरल मैनेजमेन्ट की डिग्री लेने वाले छात्रों के लिये मैनेजमेन्ट, मार्केटिंग फाइनेन्स, ह्यूमन रिसोर्स, सिस्टम प्रोजेक्ट, मैनेजमेन्ट आदि क्षेत्रों में अवसर हो सकते हैं । कॉर्पोरेटिव डेवलपमेंट आर्गनाइजेशन बैंक और ईश्योरेन्स कम्पनी में भी उनके लिये अवसर हैं । ग्रामीण क्षेत्रों, गैर सरकारी संगठनों में काम कर सकते हैं ।

प्रमुख संस्थान -

- जेवियर इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट, भुवनेश्वर
<http://xiss.ac.in>
- एमटी स्कूल ऑफ रूरल मैनेजमेन्ट, नोएडा
<http://www.amityedu/asrum/auoibasp>
- इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ रिसर्च मैनेजमेन्ट, जयपुर
<http://www.iihmr.edu.in>

सर्वाधिक दीक्षा प्रदाता : आचार्यश्री विद्यासागर

• ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर •

दीक्षा की परिभाषा को सार्थक करने वाले आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज इस युग के ऐसे संत हैं जिन्होंने हजारों बाल ब्रह्मचारी योग्य विलक्षण प्रतिभा के धनी बहुत बड़े युवा त्यागियों का समूह जैन समाज के लिए दिया। श्रमण संस्कृति के आधुनिक इतिहास में इतनी बड़ी संख्या में दीक्षित संयमी जन समूह प्रस्तुत करने वाले मेरे संज्ञान में कोई दूसरे आचार्य नहीं हैं। दीक्षा देने वाले अनेक आचार्य मिल सकते हैं किन्तु आचार्यश्री विद्यासागर जी के पास दीक्षार्थियों की बहुत बड़ी पंक्ति आज भी लगी हुई है। किन्तु आचार्यश्री उनकी अनेक रूप से परीक्षा लेने के बाद भी उनसे एक ही बात कहते हैं भावना रखो और साधना करो, उनके मापदंड में खरे उतरने के बाद ही वे योग्य अंतरंग साधना करने वालों को ही दीक्षा देने की सोचते हैं। आचार्यश्री ने प्रलोभन(लालच), धमकी के दबाव में आकर किसी को भी कभी कोई दीक्षा नहीं दी। वे प्रायः अपने प्रवचनों में कहा करते हैं कि मैं किसी को भी नियम दीक्षा नहीं देता हूँ अपितु दीक्षार्थी अपनी योग्यता, साधना और इच्छा शक्ति तथा स्थिर अडिग संकल्प बल पर दीक्षा लेता है।

दीक्षा का अर्थ बहुत गहरा है शिवराम वामन आपटे ने अपने संस्कृत हिन्दी शब्दकोश में दीक्षा शब्द की व्युत्पत्ति करते हुए कहा है कि 'धर्म संस्कार के लिए समर्पण, पवित्रीकरण का नाम दीक्षा है।' प्रब्रज्या शब्द दीक्षा के अर्थ में ग्रहण किया जाता है। बोध पाहुड़ की गाथाओं में दीक्षा का स्वरूप इस प्रकार बतलाया है -

गिहगंधमोहमुक्ता वावीसपरीसहा जियकसाया ।

पावारंभ विमुक्का पव्वज्जा एरिसा भणिया ॥45॥

जो निवास स्थान और परिग्रह के मोह से रहित है, बाईस परीषहों को जीतने वाली है, कषाय से रहित है तथा पाप के आरम्भ से अथवा पापपूर्ण खेती आदि के आरम्भ से मुक्त है ऐसी दीक्षा कही गई है।

सत्तूमित्ते व समा पसंसणिंदा अलद्धिलद्धिसमा ।

तणकणए समभावा पव्वज्जा एरिसा भणिया ॥47॥

जो शत्रु और मित्र में सम है, प्रशंसा, निन्दा, अलाभ और लाभ में सम है, तथा तृण और सुवर्ण में समभाव रखते हैं, वे दीक्षा के पात्र हैं।

जहजायरुवसरिसा अवलंबियभुअ णिराउहा संता ।

परकियणिलयणिवासा पव्वज्जा एरिसा भणिया ॥51॥

जो तत्काल उत्पन्न हुए बालक के समान नग्न रूप से सहित है, जिसमें भुजाएँ नीचे की ओर लटकी रहती हैं, जो शस्त्र से रहित है, अथवा प्रासुक प्रदेशों पर जिसमें गमन करते हैं, जो शान्त है तथा जिसमें दूसरे के द्वारा बनाये हुए उपाश्रय में निवास किया जाता है, उसे जिनदीक्षा कही गई है।

उवसमखमदमजुत्ता सरीरसक्कारवज्जिया रुक्खा ।

मयरायदोसरहिया पव्वज्जा एरिसा भणिया ॥52॥

जो उपशम, क्षमा और दम से सहित है, शरीर के संस्कार से रहित है, रुक्छ है, और मद राग, द्वेष अथवा दोषों से रहित है, वह जिनदीक्षा कही गई है ॥52॥

प्रब्रज्या/दीक्षा का लक्षण सुनिश्चित किया गया है गृह और परिगृह तथा उनके ममत्व से जो रहित है 22 परिग्रह तथा कषायों को जिसने जीता है पापारंभ से जो रहित है उसे प्रब्रज्या कहा है जिसमें शत्रु-मित्र में, प्रशंसा-निन्दा, लाभ-अलाभ, तृण कंचन में समभाव हो उसे दीक्षा/ प्रब्रज्या कहा है यथाजात रूपधर लम्बायमान भुजा, निरायुध, शांत दूसरों के द्वारा बनाई वसतिका में वास, शरीर संस्कार रहित तथा तेलवि के मर्दन से रहित रुक्छ शरीर सहित ऐसी प्रब्रज्या कही गयी है। इस दीक्षा के स्वरूप को सार्थक करते हुए आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज ने 120 मुनि, 172 आर्यिका, 57 एलक, 64 क्षुल्लक, 3 क्षुल्लिका इस प्रकार कुल 416 साधकों को दीक्षा दी है।

दीक्षा के पूर्व दीक्षार्थियों के आवश्यक कार्यों को आचार्यश्री कुन्दकुन्द देव ने प्रवचन सार के चारित्र अधिकार में इस प्रकार कहा है -

आपिच्छ बंधुवगं विमोचिदो गुरुकलत्तपुतेहि ।

आसिज्ज णाणदंसणचरित्तववीरियायारं ॥2॥

जो जीव मुनि होना चाहता है, वह पहले ही अपने कुटुम्ब के लोगों से पूछकर अपने को छुड़ावे। छुड़ाने की रीति इस तरह से है - भो इस जन के शरीर के तुम भाई बंधुओ, इस जन का (मेरा) आत्मा तुम्हारा नहीं है, ऐसा तुम निश्चयकर समझो। इसलिये तुमसे पूछता हूँ, कि यह मेरे आत्मा में ज्ञान-ज्योति प्रगट हुई है, इस कारण अपना आत्मस्वरूप ही अनादि भाई बंधु को प्राप्त होता है। अहो इस जन के शरीर के तुम माता-पिताओ, इस जन का आत्मा तुमने उत्पन्न नहीं किया, यह तुम निश्चय से समझो, इसलिये तुम इस मेरे आत्मा के विषय में ममता भाव छोड़ो। यह आत्मा ज्ञान-ज्योतिकर प्रगट हुआ है, सो अपना आत्मस्वरूप ही माता पिता को प्राप्त होता है। हे इस जनके शरीर का मन हरने वाली स्त्री, तू इस जनके आत्मा को नहीं रमण कराती, (प्रसन्न करती) यह निश्चय से जाना इस कारण इस आत्मा से ममत्व भाव छोड़ दे। यह आत्मा ज्ञान-ज्योतिकर प्रगट हुआ है, इसलिये अपनी अनुभूति रूप स्त्री के साथ रमणस्वभावी

है। हे जन के शरीर का पुत्र, तू इस जन के आत्मा से नहीं उत्पन्न हुआ, यह निश्चय से समझ। इस कारण इसमें ममता भाव छोड़। यह आत्मा ज्ञान-ज्योतिकर प्रगट हुआ है, इसलिये अपने आत्मा का यह आत्मा ही अनादि पुत्र है, और वह उसको प्राप्त होता है। इस प्रकार माता, पिता, स्त्री, पुत्रादि कुटुम्ब से अपना पीछा छुड़ावे। अथवा जो कोई जीव मुनि होना चाहता है, वह तो सब तरह कुटुम्ब से विरक्त ही है, उसको कुटुम्ब से पूछने का कुछ कार्य ही नहीं रहता, परन्तु यदि कुटुम्ब से विरक्त होवे, और जब कुछ कहना पड़े, तब वैराग्य के कारण कुटुम्ब के समझाने को इस तरह के वचन निकलते हैं। यहाँ पर ऐसा नहीं समझना, कि यदि विरक्त होवे, तो कुटुम्ब को राजी करके ही होवे। कुटुम्ब यदि किसी तरह राजी न होवे, तब कुटुम्ब के भरोसे रहने से विरक्त कभी हो ही नहीं सकता। इस कारण कुटुम्ब के पूछने का नियम नहीं है। यदि कभी किसी जीव को मुनि-दशा धारण के समय कुछ कहना ही होवे, तो पूर्वोक्त प्रकार उपदेशरूप वचन निकलते हैं। उस तरह के वैराग्य रूप वचनों को सुनकर जो निकट-संसारी जीव कुटुम्ब में हों, वे भी विरक्त हो सकते हैं तथा इसके बाद सम्यग्दृष्टि जीव अपने स्वरूप को देखता है, जानता है, अनुभव करता है, अन्य समस्त ही व्यवहार भावों से अपने को भिन्न मानता है, और परभावरूप सभी शुभाशुभ क्रियाओं को हेयरूप जानता है, अंगीकार नहीं करता। लेकिन वही सम्यग्दृष्टि जीव पूर्व बंधे हुए कर्मों के उदय से अनेक प्रकार के विभाव (विकार) भावों स्वरूप परिणमता है, तो भी उन भावों से विरक्त है; वह यह जानता है, कि जब तक इस अशुद्ध परिणति की स्थिति है, तब तक यह अवश्य होती है, इस कारण आकुलतारूप भावों को भी नहीं प्राप्त होता। यह सम्यग्दृष्टि जीव तो सकल द्रव्य भाव रूप विभावभावों का तभी त्याग कर चुका, जब इसके स्व पर विवेक रूप भेदविज्ञान प्रगट हुआ था, और तभी टंकोत्कीर्ण निजभाव भी अंगीकार किये। इसलिये सम्यग्दृष्टि को न तो कुछ त्यागने को रहा है, और न कुछ स्वीकार करने को ही है। परन्तु वही सम्यग्दृष्टि जीव चारित्रमोह के उदय से शुभ भावों रूप परिणमन करता है, उस परिणमन की अपेक्षा त्यागता है, और अंगीकार करता है। यही कथन दिखलाते हैं - प्रथम ही गुणस्थानों की परिपाटी से क्रम से अशुभ परिणति की हानि होती है, उसके बाद धीरे-धीरे शुभ परिणति भी छूटती जाती है। इस कारण पहले तो वह गृहवास कुटुम्ब का त्यागी होता है। पीछे शुभ राग के उदय से व्यवहार रत्नत्रयरूप पंचाचारों को अंगीकार करता है। यद्यपि ज्ञानभाव से समस्त ही शुभाशुभ क्रियाओं का त्यागी हैं, परन्तु शुभ राग के उदय से ही पंचाचारों का ग्रहण करता है। उसकी रीति बतलाते हैं- हे काल, विनय, उपधान, बहुमान, अनिहव, अर्थ, व्यंजन, तदुभयरूप आठ प्रकार ज्ञानाचार मैं तुझको जानता हूँ कि तू शुद्धात्म स्वरूप का निश्चय से स्वभाव नहीं है, तो भी मैं तब तक अंगीकार करता हूँ जब तक कि तेरे प्रसाद से शुद्ध आत्मा को प्राप्त न हो जाऊँ। अहो निःशंकितत्व, निःकांक्षितत्व, निर्विचिकित्सत्व, निर्मूढदृष्टित्व, उपबृंहण,

स्थितिकरण, वात्सल्य, प्रभावनास्वरूप, दर्शनाचार; तू शुद्धात्म का स्वरूप नहीं है, ऐसा मैं निश्चय से जानता हूँ, तो भी तुझको तब तक स्वीकार करता हूँ, जब तक तेरे प्रसाद से शुद्ध आत्मा को प्राप्त न हो जाऊँ। अहो मोक्ष मार्ग की प्रवृत्ति के कारण पंच महाव्रत, तीन गुप्ति पांच समिति रूप तेरह प्रकार चारित्राचार; मैं जानता हूँ कि निश्चय से तू शुद्धात्मा का स्वरूप नहीं है, तथापि तब तक अंगीकार करता हूँ, जब तक कि तेरे प्रसाद से शुद्धात्मा को प्राप्त न होऊँ। अहो अनशन, अवमौदर्य, वृत्तिपरिसंख्यान, रसपरित्याग, विविक्तशासन, कायक्लेश, प्रायश्चित्त, विनय, वैयावृत्य, स्वाध्याय, ध्यान, व्युत्सर्गस्वरूप बारह प्रकार तपाचार; मैं निश्चय से जानता हूँ कि तू शुद्धात्मा का स्वभाव नहीं हैं, परन्तु तो भी तुझको तब तक स्वीकार करता हूँ, जब तक तेरे प्रसाद से शुद्धस्वरूप को प्राप्त न हो जाऊँ। अहो समस्त आचार की प्रवृत्ति के बढ़ाने में स्वशक्ति के प्रगट करने वाले वीर्याचार; मैं निश्चय से जानता हूँ कि तू शुद्धात्मा का स्वरूप नहीं है, परन्तु तो भी तुझको तब तक अंगीकार करता हूँ, जब तक कि तेरे प्रसाद (कृपा) से शुद्ध स्वरूप को प्राप्त न हो जाऊँ। इस प्रकार ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, वीर्यरूप पाँच प्रकार आचार को अंगीकार करता है ॥2॥

दीक्षा के योग्य कौन-

उत्तरपुराण ग्रन्थ में आचार्य जिनसेन ने श्लोक 39, पर्व 58 में प्रब्रज्या दीक्षा की योग्यता गिनाते हुए कहा है कि कुल, गोत्र, शुद्ध होना चाहिए, चारित्र उत्तम होना चाहिए, सुमेधा हो, मुख सुन्दर हो, वही दीक्षा की पात्रता रखता है योगसार प्राभृत में आचार्य अमितगति ने दीक्षा की योग्यता स्पष्ट करते हुए कहा है कि जो मनुष्य शांत हो, तप के लिए समर्थ हो, शरीर से सुंदर अवयव वाला हो, वही दीक्षा ले सकता है। आचार्य जयसेन जी प्रवचनसार में टीका में एक क्षेपक गाथा के माध्यम से कहा है

वण्णेषु तीसु एक्को कल्लाण्णो गो तवोसहो वयसा ।

सुमहो कुछा रहिदो लिंग्गहणे हवदि जोग्गो ॥

(3/15, प्रवचनसार)

1. तीन वर्ण में से एक वर्ण का हो, 2. निरोग हो, 3. तप में समर्थ हो, 4. अति बालत्व व वृद्धत्व से रहित हो योग्य आयु का हो, 5. दुराचार आदि लोक अपवाद से रहित हो। परम पूज्य आचार्य विद्यासागर जी इन सभी योग्यताओं को ध्यान में रखते हुए सर्वप्रथम 8 मार्च 1980 को मुनि दीक्षा द्रोणगिरि के पावन तीर्थ पर मुनिश्री समय सागरजी को दी। तदुपरान्त सागर शहर के मोराजी के विशाल प्रांगण में मुनि नियम सागरजी एवं मुनि योगसागरजी को 15 अप्रैल 1980 में दीक्षा दी। बस यह क्रम आगे बढ़ता ही गया आचार्यश्री ने 14 बार में 120 युवा बाल ब्रह्मचारी प्रतिभा सम्पन्न, स्वाध्यायी अडिग प्रतिभा के धारी साधकों को दीक्षा यथाजात निर्ग्रन्थ रूप में दी।

सात राज्यों के कुल मुनिराजों की संख्या -

राज्य मध्यप्रदेश के 16 जिले से 81 मुनिराज -

1. सागर जिले के 25 मुनिराज - मुनिश्री क्षमासागरजी महाराज(सागर), गुप्तिसागरजी महाराज(गढ़ाकोटा), मुनिश्री सुधासागरजी महाराज(ईशुखारा), मुनिश्री समतासागरजी महाराज(नन्ही देवरी), मुनिश्री स्वभावसागरजी महाराज(नन्ही देवरी), मुनिश्री मार्दवसागरजी महाराज(पठा), मुनिश्री अजितसागरजी महाराज(गढ़ाकोटा), मुनिश्री सुमतिसागरजी महाराज(दलपतपुर), मुनिश्री पद्मसागरजी महाराज(सागर), मुनिश्री कुन्थुसागरजी महाराज(पटना बुजुर्ग), मुनिश्री अरहसागरजी महाराज (मालथौन), मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज (पीपरा), मुनिश्री शैलसागरजी महाराज (टड़ा), मुनिश्री अचलसागरजी महाराज(सागर), मुनिश्री अतुलसागरजी महाराज(मण्डी बामौरा), मुनिश्री आनंदसागरजी महाराज(बण्डा), मुनिश्री निःस्वार्थसागरजी महाराज(सागर), मुनिश्री निरोगसागरजी महाराज(बण्डा), मुनिश्री निरामयसागरजी महाराज(बण्डा), मुनिश्री निराकुलसागरजी महाराज(खुरई), मुनिश्री निरुपमसागरजी महाराज(बीना), मुनिश्री निर्भीकसागरजी महाराज(रहली), मुनिश्री श्रमणसागरजी महाराज(सीहोरा), मुनिश्री संस्कारसागरजी महाराज(महाराजपुर), मुनिश्री ओंकारसागरजी महाराज(महाराजपुर)।

2. जबलपुर जिले के 16 मुनिराज - मुनिश्री संयमसागरजी महाराज(कटंगी), मुनिश्री सरलसागरजी महाराज(नीमखेड़ा), मुनिश्री पवित्रसागरजी महाराज(जबलपुर), मुनिश्री प्रबुद्धसागरजी महाराज(जबलपुर), मुनिश्री प्रसादसागरजी महाराज(सीहोरा), मुनिश्री अभयसागरजी महाराज(पाटन), मुनिश्री प्रभातसागरजी महाराज(दर्शनी), मुनिश्री चन्द्रसागरजी महाराज(जबलपुर), मुनिश्री संभवसागरजी महाराज(पनागर), मुनिश्री निस्पक्षसागरजी महाराज(पनागर), मुनिश्री निस्पृहसागरजी महाराज(पनागर), मुनिश्री निस्पंदसागरजी महाराज(कटंगी), मुनिश्री निष्कामसागरजी महाराज(रांझी), मुनिश्री निरीहसागरजी महाराज(रांझी), मुनिश्री निसर्गसागरजी महाराज(जबलपुर), मुनिश्री निस्पृहसागरजी महाराज(पनागर)।

3. दमोह जिले के 5 मुनिराज - मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज(पथरिया), मुनिश्री निर्दोषसागरजी महाराज(तारादेही), मुनिश्री निर्लोभसागरजी महाराज(तारादेही), मुनिश्री निर्मोहसागरजी महाराज(दमोह), मुनिश्री नीरागसागरजी महाराज(पथरिया)।

4. शहडोल जिले के 5 मुनिराज - मुनिश्री पुष्पदन्तसागरजी महाराज(बुढार), मुनिश्री महासागरजी महाराज(बुढार), मुनिश्री अनुभवसागरजी महाराज(बुढार), मुनिश्री विनम्रसागरजी महाराज(बुढार), मुनिश्री अगम्यसागरजी महाराज(बुढार)।

5. अशोकनगर जिले के 5 मुनिराज - मुनिश्री सुखसागरजी महाराज(मुंगावली), मुनिश्री विशदसागरजी महाराज(मुंगावली), मुनिश्री सौम्यसागरजी महाराज(मुंगावली), मुनिश्री निश्चलसागरजी महाराज(अशोकनगर), मुनिश्री निकलंकसागरजी महाराज(शाढौरा)।

6. विदिशा जिले के 5 मुनिराज - मुनिश्री वैराग्यसागरजी महाराज(सिरोंज), मुनिश्री निर्णयसागरजी महाराज(सिरोंज), मुनिश्री क्षीरसागरजी महाराज(गंजबासौदा), मुनिश्री शीतलसागरजी महाराज(विदिशा), मुनिश्री समरस सागरजी महाराज(गंजबासौदा)।

7. रायसेन जिले के 4 मुनिराज - मुनिश्री प्रवचनसागरजी महाराज(बेगमगंज), मुनिश्री पुराणसागरजी महाराज(बरेली), मुनिश्री धवलसागरजी महाराज(बेगमगंज), मुनिश्री निर्मदसागरजी महाराज(बेगमगंज)।

8. खरगोन जिले के 4 मुनिराज - मुनिश्री प्रशस्तसागरजी महाराज(सनावद), मुनिश्री प्रयोगसागरजी महाराज(सनावद), मुनिश्री प्रबोधसागरजी महाराज(सनावद), मुनिश्री मल्लिसागरजी महाराज (बड़वाह)।

9. गुना जिले के 3 मुनिराज - मुनिश्री पार्श्वसागरजी महाराज(छीपोन), मुनिश्री निष्कंपसागरजी महाराज(गुना), मुनिश्री निस्सीमसागरजी महाराज (आरोन)।

10. देवास जिले के 3 मुनिराज - मुनिश्री विराटसागरजी महाराज(हाटपीपल्या), मुनिश्री विशालसागरजी महाराज(हाटपीपल्या), मुनिश्री दुर्लभसागरजी महाराज(अजनास)।

11. नरसिंहपुर जिले के 1 मुनिराज - मुनिश्री प्रशान्तसागरजी महाराज (गोटेगाँव)

12. छिन्दवाड़ा जिले के 1 मुनिराज - मुनिश्री निर्वेगसागरजी महाराज(छिंदवाड़ा)

13. टीकमगढ़ जिले के 1 मुनिराज - मुनिश्री निरापदसागरजी महाराज(टीकमगढ़)

14. सिवनी के जिले 1 मुनिराज - मुनिश्री नीरजसागरजी महाराज (छपारा)

15. इन्दौर जिले के 1 मुनिराज - धीरसागरसागरजी महाराज (इन्दौर)

16. हरदा जिले के 1 मुनिराज - मुनिश्री आगमसागरजी महाराज (हरदा)

कर्नाटक प्रांत के 9 - मुनिश्री समयसागरजी महाराज(सदलगा), मुनिश्री योगसागरजी महाराज(सदलगा), मुनिश्री नियमसागरजी महाराज(सदलगा), मुनिश्री चेतनसागरजी महाराज(सदलगा), मुनिश्री चिन्मयसागरजी महाराज(जुगूल), मुनिश्री पुण्यसागरजी महाराज(येलवट्टी), मुनिश्री पायसागरजी महाराज(हडससी), मुनिश्री ऋषभसागरजी महाराज(नेल्लेकार), मुनिश्री चन्द्रप्रभसागरजी महाराज(तेज)।

महाराष्ट्र प्रांत के 15 - मुनिश्री समाधिसागरजी महाराज(कुसुम्बा), मुनिश्री उत्तमसागरजी महाराज(अब्दुलघाट), मुनिश्री पावनसागरजी महाराज(कानड़वाड़ी), मुनिश्री अपूर्वसागरजी महाराज(समडोली), मुनिश्री विनीतसागरजी महाराज(महातपुर), मुनिश्री अक्षयसागरजी

महाराज(शिरोल), मुनिश्री सुपार्श्वसागरजी महाराज(समडोली), मुनिश्री नमिसागरजी महाराज(बस्तवाड़ा), मुनिश्री नेमिसागरजी महाराज(सिरगुप्पी), मुनिश्री वीरसागरजी महाराज(नागपुर), मुनिश्री पुनीतसागरजी महाराज(औरंगाबाद), मुनिश्री वैराग्यसागरजी महाराज(कोल्हापुर), मुनिश्री अविचलसागरजी महाराज (कोल्हापुर), मुनिश्री सहजसागरजी महाराज(कुंभोज), मुनिश्री निस्संगसागरजी महाराज(नागपुर) ।

गुजरात प्रांत के 3- मुनिश्री ओमसागरजी महाराज(मोरवी), मुनिश्री उपशमसागरजी महाराज(महुआ), मुनिश्री प्रशमसागरजी महाराज(महुआ) ।

उत्तरप्रदेश प्रांत के 9 - मुनिश्री प्रणम्यसागरजी महाराज(सिरसागंज), मुनिश्री अभिनंदनसागरजी महाराज(सिरसागंज), मुनिश्री श्रेयांससागरजी महाराज(ललितपुर), मुनिश्री पूज्यसागरजी महाराज(ललितपुर), मुनिश्री विमलसागरजी महाराज(ललितपुर), मुनिश्री अनन्तसागरजी महाराज(ललितपुर), मुनिश्री धर्मसागरजी महाराज(ललितपुर), मुनिश्री शान्ति सागरजी महाराज(ललितपुर), मुनिश्री भावसागरजी महाराज(ललितपुर) ।

राजस्थान प्रांत के 2 - मुनिश्री शीतलसागरजी महाराज(पांचवां), मुनिश्री संधानसागरजी महाराज(जयपुर) ।

झारखण्ड प्रांत के 1 - मुनिश्री प्रमाणसागरजी महाराज (हजारीबाग) ।

कुल 120 मुनिराज का प्रदेश वार विवरण इस प्रकार है ।

आर्यिका दीक्षा का उद्घाटन

जिन बहिनों ने 1976-78 के बीच आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत लिया था उनकी दीक्षा 10 फरवरी 1987 तक नहीं हो पायी थी । उनमें आर्यिका दीक्षा का प्रारंभ आर्यिका गुरुमति के साथ हुआ । आर्यिका दीक्षा 1987, 10 फरवरी को दी । कतार में लगी दीक्षार्थी बहिनों का समूह वर्षों तक प्रतीक्षा करता रहा । पूज्यश्री उनसे मात्र यही कहते रहे कि भावना रखो, साधना करो । दीक्षा देने का कार्य विधिपूर्वक 13 बार किया । सर्वाधिक दीक्षार्थी बहिनें 13 फरवरी 2006 में दिखी 58 बहिनों ने एक साथ आर्यिका दीक्षा कुण्डलपुर में ली । कुल मिलाकर 13 दीक्षा समारोहों में 172 आर्यिका दीक्षाएं सम्पन्न हुई । सुशिक्षित प्रतिभावान बाल ब्रह्मचारी बहिनें संयममार्ग पर आगे बढ़ गई जो आज गुरु की आज्ञा व निर्देशन में रहते हुए संघ व्यवस्था के कारण गुरु से दूर रहकर समाज में खूब प्रभावना साधना कर रही है । जो उत्कृष्ट स्वाध्याय से आगम के गूढ़ विषय समय-समय पर समाज को परोसती रहती हैं ।

सात राज्यों के कुल आर्यिकाओं की संख्या -

राज्य मध्यप्रदेश के 17 जिले से 146 आर्यिकायें-

1. सागर जिले की 57 - आर्यिकाश्री गुरुमति माताजी(बण्डा), आर्यिकाश्री दृढमति माताजी(सागर), आर्यिकाश्री मृदुमति माताजी(रहली), आर्यिकाश्री ऋजुमति माताजी

(सागर), आर्यिकाश्री गुणमति माताजी(शाहगढ़), आर्यिकाश्री जिनमति माताजी(शाहगढ़), आर्यिकाश्री निर्णयमति माताजी(महाराजपुर), आर्यिकाश्री विलक्षणामति माताजी(टड़ा), आर्यिकाश्री धारणामति माताजी(शाहगढ़), आर्यिकाश्री प्रभावनामति माताजी(खुरई), आर्यिकाश्री भावनामति माताजी(खुरई), आर्यिकाश्री आदर्शमति माताजी(बण्डा), आर्यिकाश्री आलोकमति माताजी(शाहपुर), आर्यिकाश्री अनुभवमति माताजी (पिण्डरूआ), आर्यिकाश्री निकलंकमति माताजी(खिमलासा), आर्यिकाश्री पुराणमति माताजी(सनाई बोरिया), आर्यिकाश्री अधिगममति माताजी(अनंतपुरा), आर्यिकाश्री अनुगममति माताजी(बीना), आर्यिकाश्री सूत्रमति माताजी(बण्डा, आर्यिकाश्री सविनयमति माताजी(शाहपुर), आर्यिकाश्री संयममति माताजी(नन्हीं देवरी), आर्यिकाश्री समयमति माताजी(बीना), आर्यिकाश्री शीतलमति माताजी(बण्डा), आर्यिकाश्री विशुद्धमति माताजी(केवलारी), आर्यिकाश्री साकारमति माताजी(जैतपुर), आर्यिकाश्री शांतमति माताजी(मंडीबामौरा), आर्यिकाश्री सुशांतमति माताजी(मंडीबामौरा), आर्यिकाश्री सदयमति माताजी(सागर), आर्यिकाश्री उपशांतिमति माताजी(सागर), आर्यिकाश्री अमूल्यमति माताजी(बण्डा), आर्यिकाश्री उन्नतमति माताजी(सागर), आर्यिकाश्री आलोल्यमति माताजी(टड़ा), आर्यिकाश्री अनमोलमति माताजी(टड़ा), आर्यिकाश्री अचलमति माताजी(कंदवा), आर्यिकाश्री अवगममति माताजी(सागर), आर्यिकाश्री स्वस्थमति माताजी(सागर), आर्यिकाश्री वात्सल्यमति माताजी(शाहपुर), आर्यिकाश्री कर्तव्यमति माताजी(बण्डा), आर्यिकाश्री ध्येयमति माताजी(बण्डा), आर्यिकाश्री पृथ्वीमति माताजी(शाहपुर), आर्यिकाश्री पुनीतमति माताजी(खुरई), आर्यिकाश्री विनीतमति माताजी(खुरई), आर्यिकाश्री मेरूमति माताजी(खुरई), आर्यिकाश्री आप्तमति माताजी (बरा), आर्यिकाश्री ध्यानमति माताजी(टड़ा), आर्यिकाश्री अवायमति माताजी (जरुआखेड़ा), आर्यिकाश्री पारमति माताजी(बहेरिया), आर्यिकाश्री आगतमति माताजी(गढ़ाकोटा), आर्यिकाश्री श्रुतमति माताजी(सागर), आर्यिकाश्री स्वभावमति माताजी(नन्हीं देवरी), आर्यिकाश्री विनयमति माताजी(शाहपुर), आर्यिकाश्री समितिमति माताजी(शाहपुर), आर्यिकाश्री परममति माताजी(करापुर), आर्यिकाश्री चारित्रमति माताजी(जैसीनगर), आर्यिकाश्री श्रद्धामति माताजी(जैसीनगर), आर्यिकाश्री उत्कर्षमति माताजी(जैतपुर), आर्यिकाश्री भक्तिमति माताजी (खुरई)।

2. जबलपुर जिले की 27 - आर्यिकाश्री तपोमति माताजी(जबलपुर), आर्यिकाश्री पावनमति माताजी(पाटन), आर्यिकाश्री शुभ्रमति माताजी(जबलपुर), आर्यिकाश्री निर्मलमति माताजी(कटंगी), आर्यिकाश्री अंतरमति माताजी(जबलपुर), आर्यिकाश्री अविचलमति माताजी(जबलपुर), आर्यिकाश्री अक्षयमति माताजी(जबलपुर), आर्यिकाश्री अपूर्वमति माताजी(जबलपुर), आर्यिकाश्री अतिशयमति माताजी(कटंगी), आर्यिकाश्री अकलंकमति

माताजी(जबलपुर), आर्यिकाश्री आगममति माताजी(जबलपुर), आर्यिकाश्री कैवल्यमति माताजी(जबलपुर), आर्यिकाश्री निर्वेगमति माताजी(जबलपुर), आर्यिकाश्री शांतिमति माताजी(पनागर), आर्यिकाश्री सतर्कमति माताजी(जबलपुर), आर्यिकाश्री सुशीलमति माताजी(चरगँवा), आर्यिकाश्री शैलमति माताजी(बरेला), आर्यिकाश्री सुसिद्धमति माताजी(शहपुरा), आर्यिकाश्री सौम्यमति माताजी(जबलपुर), आर्यिकाश्री आराध्यमति माताजी(जबलपुर), आर्यिकाश्री गन्तव्यमति माताजी(जबलपुर), आर्यिकाश्री निकटमति माताजी(जबलपुर), आर्यिकाश्री निर्वाणमति माताजी(चरगँवा), आर्यिकाश्री मार्दवमति माताजी(चरगँवा), आर्यिकाश्री मंगलमति माताजी(चरगँवा), आर्यिकाश्री अदूरमति माताजी(जबलपुर), आर्यिकाश्री मननमति माताजी(रांझी)।

3. दमोह जिले की 15 - आर्यिकाश्री सत्यमति माताजी(हिनौती), आर्यिकाश्री प्रशान्तमति माताजी(पटेरा), आर्यिकाश्री अनुत्तरमति माताजी(पिपरिया), आर्यिकाश्री विपुलमति माताजी(तेंदूखेड़ा), आर्यिका सहजमति माताजी(पथरिया), आर्यिकाश्री सकलमति माताजी(हिनौती), आर्यिकाश्री ओंकारमति माताजी(पिपरिया), आर्यिकाश्री अचिन्त्यमति माताजी(वनगाँव), आर्यिकाश्री आज्ञामति माताजी(अभाना), आर्यिकाश्री असीममति माताजी(पथरिया), आर्यिकाश्री गौतममति माताजी(पथरिया), आर्यिकाश्री अगाधमति माताजी(पिपरिया), आर्यिकाश्री धवलमति माताजी(पथरिया), आर्यिकाश्री अमितमति माताजी(दमोह), आर्यिकाश्री चेतनमति माताजी (सांगा)।

4. अशोकनगर जिले की 10 - आर्यिकाश्री वैराग्यमति माताजी(अशोकनगर), आर्यिकाश्री अनुग्रहमति माताजी(अशोकनगर), आर्यिकाश्री अनर्घमति माताजी(अशोकनगर), आर्यिकाश्री आनंदमति माताजी(अशोकनगर), आर्यिकाश्री मुदितमति माताजी(शाढौरा), आर्यिकाश्री अमंदमति माताजी(मुंगावली), आर्यिकाश्री समुन्नतमति माताजी(खजुरिया), आर्यिका शास्त्रमति माताजी(अशोकनगर), आर्यिकाश्री सुधारमति माताजी(अशोकनगर), आर्यिकाश्री उचितमति माताजी(अशोकनगर)।

5. गुना जिले की 9 - आर्यिकाश्री मधुरमति माताजी(गुना), आर्यिकाश्री प्रसन्नमति माताजी(गुना), आर्यिकाश्री प्रशममति माताजी(गुना), आर्यिकाश्री सरलमति माताजी (गुना), आर्यिकाश्री शीलमति माताजी(गुना), आर्यिकाश्री तथ्यमति माताजी(गुना), आर्यिकापथ्यमति माताजी(गुना), आर्यिकाश्री संस्कारमति माताजी(गुना), आर्यिकाश्री संयतमति माताजी कुंभराज(कुंभराज)।

6. विदिशा जिले की 4 - आर्यिकाश्री सुनयमति माताजी(विदिशा), आर्यिकाश्री सिद्धमति माताजी(विदिशा), आर्यिकाश्री सूक्ष्ममति माताजी(सिरोंज), आर्यिकाश्री तथामति माताजी(विदिशा)।

7. नरसिंहपुर जिले की 6 - आर्यिकाश्री अमूर्तमति माताजी(नरसिंहपुर), आर्यिकाश्री अखण्डमति माताजी(गोटेगाँव), आर्यिकाश्री अभेदमति माताजी(गोटेगाँव), आर्यिकाश्री संवेगमति माताजी(गोटेगाँव), आर्यिकाश्री शाश्वतमति माताजी(नरसिंहपुर), आर्यिकाश्री अविकारमति माताजी(तेन्दूखेड़ा)।

8. मंडला जिले की 5 - आर्यिकाश्री कुशलमति माताजी(पिंडरई), आर्यिकाश्री शुक्लमति माताजी(पिंडरई), आर्यिकाश्री चिंतनमति माताजी(पिंडरई), आर्यिकाश्री सिद्धांतमति माताजी(पिंडरई), आर्यिकाश्री उदारमति माताजी(पिंडरई)।

9. सतना जिले की 4 - आर्यिका श्री अनंतमति माताजी(सतना), आर्यिकाश्री विजितमति माताजी(सतना), आर्यिकाश्री चैत्यमति माताजी(सतना), आर्यिकाश्री निसर्गमति माताजी(नागौद)।

10. टीकमगढ़ जिले की 2 - आर्यिकाश्री अनुनयमति माताजी(लार), आर्यिकाश्री विशदमति माताजी(टीकमगढ़)।

11. रायसेन जिले की 1 - आर्यिकाश्री एकत्वमति माताजी (नई गाडिया)

12. झाबुआ जिले की 1 - आर्यिकाश्री विमलमति माताजी (झाबुआ)

13. कटनी जिले की 1 - आर्यिकाश्री सत्यार्थमति माताजी(कटनी)

14. छतरपुर जिले की 1 - आर्यिकाश्री शोधमतिमति माताजी (छतरपुर)

15. शिवपुरी जिले की 1 - आर्यिकाश्री विनतमति माताजी (शिवपुरी)

16. अनुपपूर जिले की 1 - आर्यिकाश्री अनुपममति माताजी (अनूपपुर)

17. छिंदवाड़ा जिले की-1 - आर्यिकाश्री संतुष्टमति माताजी (छिंदवाड़ा)

कर्नाटक प्रांत की 3 - आर्यिकाश्री निष्काममति माताजी(जुगूल), आर्यिकाश्री विरतमति माताजी (जुगूल)।

महाराष्ट्र प्रांत की 6 - आर्यिकाश्री निर्वाणमति माताजी (सुकली), आर्यिकाश्री उद्योतमति माताजी(काटोल), आर्यिकाश्री संवरमति माताजी(नागपुर), आर्यिकाश्री निर्मदमति माताजी(नागपुर), आर्यिकाश्री परमार्थमति माताजी (दिग्रस), आर्यिकाश्री विदेहमति माताजी(नागपुर)।

दिल्ली प्रांत की 2 - आर्यिकाश्री अकम्पमति माताजी(दिल्ली), आर्यिकाश्री आत्ममति माताजी (दिल्ली)।

उत्तरप्रदेश प्रांत की 5 - आर्यिकाश्री स्वाध्यायमति माताजी(मैनपुरी), आर्यिकाश्री नम्रमति माताजी(ललितपुर), आर्यिकाश्री विनम्रमति माताजी(ललितपुर), आर्यिकाश्री अतुलमति माताजी(ललितपुर), अर्यिकाश्री लक्ष्यमति माताजी (ललितपुर)।

राजस्थान प्रांत की 3 - आर्यिकाश्री पूर्णमति माताजी(झूंगरपुर), आर्यिकाश्री श्वेतमति

माताजी(बागीदौरा), आर्थिका जागृतमति माताजी(कुचामन)।

छत्तीसगढ़ प्रांत की 6 - आर्थिकाश्री उज्ज्वलमति माताजी(दुर्गा), आर्थिकाश्री साधुमति माताजी(रायपुर), आर्थिकाश्री साधनामति माताजी(रायपुर), आर्थिकाश्री दुर्लभमति माताजी(दुर्गा), आर्थिकाश्री सारमति माताजी(डोंगरगाँव), आर्थिक ध्रुवमति माताजी(कासांवेल्)

तमिलनाडु प्रांत की 2 - आर्थिकाश्री उपशममति माताजी(चेय्यार), आर्थिकाश्री संगतमति माताजी (बलाथि)

कुल 172 आर्थिकाओं का प्रदेश वार विवरण इस प्रकार है।

आचार्यश्री ने मुनि आर्थिका दीक्षा देने के पहले सबसे पहले 1977 में 10 जुलाई, रविवार एक ऐलक दीक्षा ऐलक दर्शनसागर जी को दी। उन्होंने मुनि दीक्षा की प्रार्थना की परन्तु आचार्यश्री ने ऐलक दर्शनसागरजी को मुनि दीक्षा नहीं दी। परिणाम यह निकला कि उन्होंने आचार्य विमलसागर जी से मुनि दीक्षा ली। आचार्यश्री ने दीक्षा देने का क्रम जारी रखा और 21 अक्सर पर ऐलक दीक्षा देकर 57 ऐलक साधकों को मोक्षमार्ग पर लगाया।

आचार्यश्री के पावन कर कमलों से क्षुल्लक दीक्षा का क्रम 12 दिसम्बर 1975 से हुआ। पवित्र तीर्थ सोनागिरि पर पूज्यश्री ने चार साधक क्षुल्लक योगसागर, क्षुल्लक नियमसागर, क्षुल्लक समयसागर, क्षुल्लक प्रवचनसागर ने मोक्षमार्ग पर अपना प्रथम चरणपात किया था। यह क्रम आगे बढ़ता गया और 13 चरणों में गुरुजी ने 64 बाल ब्रह्मचारी साधकों को क्षुल्लक दीक्षा दी। तथा तीन क्षुल्लिका दीक्षाएं भी प्रदान की।

आचार्यश्री द्वारा कभी भी अधिक समय तक प्रसारित किये बिना, लघु कालिक सूचना के साथ दीक्षा सम्पन्न हो जाती है। 2014 में 16 अक्टूबर को चार दीक्षाएं हुई उनका अतिशय यह है कि जिनके यहाँ आचार्य श्री का आहार हुआ तथा आचार्यश्री आहार से लौटते समय ब्र. डॉ. ऋषिजी ने आचार्यश्री से दीक्षा का निवेदन किया तो 12 बजे तय हुई। तुरंत ऋषि भैया ने अपने पद और संस्था से इस्तीफा दिया। दीक्षा की तैयारी हो गई। कुछ ही घंटों में अप्रत्याशित सी घटना लग रही थी और कुछ ही घंटों में दीक्षा विधि सम्पन्न हो गई। ब्र. ऋषि भैया मुनि शीतलसागर बन गये। ऐसी ही दीक्षा देने की प्रक्रिया सबको लगभग विस्मय में डालती रहती है।

खूब साधना में तपा कर हर प्रकार से कसौटी पर खरे उतरने के बाद ही दीक्षा देने वाले पूज्य आचार्य विद्यासागर जी दीक्षित शिष्य स्वाध्याय साधना-प्रभावना और संस्कार बड़े ही मनोयोग से लगे हुए हैं। आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज चलते-फिरते विश्वविद्यालय हैं। उनका एवं उनसे दीक्षित शिष्यों का समाज में विशिष्ट स्थान प्राप्त किया तथा समाज सुधार तीर्थोद्धार, दयोदय, स्वरोजगार जैसी योजनाओं को सफल बनाने में आचार्यश्री विद्यासागर जी के शिष्य अग्रणीय हुए। विश्व कीर्तिमानों में सर्वाधिक दीक्षा प्रदाता आचार्य विद्यासागर जी संयम-स्वर्ण महोत्सव चिंतनीय-वंदनीय -अभिनन्दनीय है।

दीक्षाएं सम्पन्न

भिण्ड। गणिनी आर्थिकाश्री विभाश्री माताजी के करकमलों से 30 सितम्बर 2017 विजयादशमी पर श्री महावीर भगवान कीर्ति स्तम्भ परिसर, लश्कर रोड़, भिण्ड में बा. ब्र. राजुल दीदी, प्रीति दीदी, रोशनी दीदी, नेहा दीदी, शिखा दीदी, प्रियंका दीदी, सुशीला दीदी इन सात बहनों को आर्थिका दीक्षाएं दी गई। जिनके नाम क्रमशः आर्थिका सर्वश्री माताजी, आर्थिका शुभश्री माताजी, आर्थिका सिद्धिश्री आर्थिकाश्री, आर्थिका संयमश्री माताजी, आर्थिका श्यामश्री माताजी, आर्थिका श्यामाश्री माताजी, क्षुल्लिका शीलश्री माताजी रखा गया।

ग्वालियर। आचार्यश्री विनम्रसागरजी महाराज के करकमलों से 1 अक्टूबर 2017 को तेरह पंथी जैन धर्मशाला, नई सड़क, लश्कर ग्वालियर में बा. ब्र. संवेग भैया, बा. ब्र. शुभम भैया, ब्र. महेश भैया, बा. ब्र. दीप्ति (अनु) दीदी, बा. ब्र. अनुराधा(तनु) दीदी, ब्र. शांति दीदी को दीक्षाएं दी गई जिनके नाम क्रमशः मुनि विनंदसागरजी महाराज, एलक विनृतसागरजी महाराज, क्षुल्लकविश्वकुंदसागरजी महाराज, आर्थिका विश्वश्रेयश्री माताजी, आर्थिका विभुदश्री माताजी, क्षुल्लिका विशांतिश्री माताजी रखा गया।

बरसोई (बिहार)। गणिनी आर्थिकाश्री विंध्यश्री माताजी द्वारा 1 अक्टूबर 2017 को श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, बरसोई (बिहार) में बा. ब्र. श्रद्धा दीदी, बा. ब्र. प्रियंका दीदी, ब्र. संतोष दीदी को दीक्षाएं दी गई जिनके नाम क्रमशः आर्थिका सुनंदनश्री माताजी, आर्थिकाश्री सुवंदनश्री माताजी, क्षुल्लिकाश्री सुचंदनश्री माताजी रखा गया।

इन्दौर। आचार्यश्री विशुद्धसागरजी महाराज के करकमलों से श्री दिगम्बर जैन समवशरण मन्दिर कंचनबाग इन्दौर में ब्र. शुभम भैया उज्जैन, ब्र. दीपक भैया (महा.), ब्र. अक्षय भैया मालथौन, ब्र. भरत भैया, ब्र. रोहित भैया, ब्र. आशीष भैया, ब्र. अतुल भैया भिण्ड, ब्र. अमित भैया भोपाल को 6 अक्टूबर को मुनि दीक्षाएं दी गई जिनके नाम क्रमशः मुनिश्री साध्यसागरजी महाराज, मुनिश्री संकल्पसागरजी महाराज, मुनिश्री सौम्यसागरजी महाराज, मुनिश्री सारस्वतसागरजी महाराज, मुनिश्री सद्भावसागरजी महाराज, मुनिश्री संजयंतसागरजी महाराज, मुनिश्री संयतसागरजी महाराज, मुनिश्री साक्ष्यसागरजी महाराज नाम रखे गये।

जबलपुर। आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज के करकमलों से गढ़ा (जबलपुर) म.प्र. में 8 अक्टूबर 2017 को एलकश्री भगवतसागर महाराज को मुनि दीक्षा दी गई जिनका नाम मुनिश्री भास्वतसागरजी महाराज रखा गया।

दिल्ली। आचार्यश्री विरागसागरजी महाराज के करकमलों से 2 नवम्बर 2017 को लाल किला, दिल्ली में 25 दीक्षाएं दी जावेगी।

दुनिया भर की बातें



■ 1 सितम्बर

- दिल्ली : गाजीपुरा में कूड़े का पहाड़ ढहा दो लोगों की मौत हुई, 5 लोगों को सुरक्षित निकाला।
- नैरोबी केन्या के सुप्रीम कोर्ट ने राष्ट्रपति उहुरू केन्याट्टा के चुनाव रद्द करते हुए दोबारा चुनाव का आदेश दिया।
- नीति आयोग के नये उपाध्यक्ष अर्थशास्त्री राजीवकुमार बने।

■ 2 सितम्बर

- मराठी कवियत्री शिरीण पर्ई का निधन हो गया वे 88 वर्ष की थी।
- विश्व की पूर्व नम्बर एक टेनिस खिलाड़ी सेरेना विलियम्स पहली बार माँ बनी।
- भोपाल : प्रख्यात गजलकार दुष्यंत कुमार त्यागी का मकान ढहाया गया।

■ 3 सितम्बर

- मोदी मंत्रीमंडल का तीसरा विस्तार व बदलाव हुआ। निर्मला सीतारमण महिला रक्षामंत्री बनी। म.प्र. के वीरेन्द्रकुमार ने महिला बाल विकास मंत्रालय संभाला।
- उत्तर कोरिया ने छठा परमाणु परिक्षण किया।
- दमोह : सात्विक पांडे ने ट्रेन से कट कर आत्महत्या की यह प्रदेश में पहली ब्लू व्हेल गेम से मौत हुई।

■ 4 सितम्बर

- पाकिस्तान समर्थित आतंकवाद को ब्रिक्स देशों ने ललकार दी। भारत को चीन की सरजमीं पर बड़ी कूटनीतिक सफलता मिली।
- विशेष अदालत ने उद्योगपति नवीन जिंदल को म.प्र. कोल ब्लाक आंवटन घोटाले मामले में जमानत दी।
- दिल्ली हाईकोर्ट ने दिल्ली मुख्यमंत्री पर जवाब दाखिल देरी से करने पर अरविंद केजरीवाल पर 500 रुपया जुर्माना किया।

■ 5 सितम्बर

- पंजाब-हरियाणा हाईकोर्ट ने खुद को देवी का अवतार बताने वाली राधे माँ के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने का निर्देश दिया।
- प्रवर्तन निदेशालय ने दिल्ली के बिजवासन क्षेत्र में स्थित लालूप्रसाद यादव की बेटी मीसाभारती का 50 करोड़ का फार्म हाउस जब्त किया।
- लखनऊ : उत्तरप्रदेश की राजधानी में गृहमंत्री राजनाथसिंह ने मेट्रो ट्रेन का उद्घाटन किया।

■ 6 सितम्बर

- लखनऊ : मेट्रो की पहली सफल में बंद हुई सोशल मीडिया ने खूब मजाक उड़ाया। आगे का दरवाजा खुला, 101 यात्री बाहर निकाले।
- पत्रकार गौरी लंकेश की हत्या हुई। कर्नाटक सरकार ने एसआईटी से जांच कराने का आदेश दिया।

- भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी म्यांमार की यात्रा पर गये और कहाँ कि वह म्यांमार के रखाइन प्रांत में जारी हिंसा पर सरकारी की चिंताएं साझा करते हैं।

■ 7 सितम्बर

- होटल जमीन घोटाले के मामले में सीबीआई ने लालूप्रसाद यादव एवं तेजस्वी यादव को समन भेजे।

- 1993 के मुम्बई सीरियल ब्लास्ट मामले में अबू सलेम को उम्रकैद की सजा सुनाई।

- टेक्सास : अमेरिकी वैज्ञानिकों ने एक अनोखी पेन डिवाइस इजाद की है जो 10 सेकंड में कैसर टिशू पकड़ लेती है।

■ 8 सितम्बर

- नो फ्लाया लिस्ट की व्यवस्था करने वाला भारत पहला देश बना विमान के भीतर हंगामा करने पर 3 माह से लेकर आजीवन प्रतिबंध लग सकता है
- हरदा (म.प्र.) एटीएम से पैसे नहीं निकलने पर उपभोक्ता फोरम ने एसबीआई पर 2500 रु. का जुर्माना ठोका।

- मैक्सिको में 4.2 की तीव्रता का भूकम्प का झटका आया 15 लोग मरे। 11 राज्यों के स्कूल बंद करने के आदेश हुए।

■ 9 सितम्बर

- रयान इंटरनेशनल स्कूल के छात्र प्रद्युम्न की हत्या के मामले में प्राचार्य नीरजा गुप्ता को सस्पेंड किया।
- न्यायविद् प्रो. ताहिर महमूद को माधव मेनन वेस्ट विधि शिक्षक पुरस्कार से नवाजा गया।
- सिरसा : राम रहीम की गुफा से साध्वियों के आश्रम तक जाने का गुप्त रास्ता मिला।

■ 10 सितम्बर

- मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने अपनी 8 घंटे की बैठक में सुप्रीम कोर्ट के फैसले को धार्मिक भावनाओं पर चोट माना। असमा जोहरा ने कहा हम तीन तलाक के हिमायती नहीं।
- अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद ने राधे माँ, आसाराम, राम रहीम सहित 14 बाबाओं को फर्जी बताया।
- जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय छात्र संघ के चुनाव में वाम मोर्चा ने जीत हासिल की। अध्यक्ष गीताकुमारी जीती।

■ 11 सितम्बर

- मंडला के पूर्व कलेक्टर भ्रष्टाचार के दोषी आईएसएस अफसर शशि कर्णावत को बर्खास्त किया गया।
- गुंगावली के विधायक पूर्व मंत्री महेन्द्रसिंह कालूखेड़ा का निधन हुआ वे 72 साल के थे।
- सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि बच्चों की सुरक्षा किसी एक स्कूल का मामला नहीं अपितु पूरे देश का मामला है दिल्ली के प्रद्युम्न हत्याकांड पर याचिका दायर की गई थी।

■ 12 सितम्बर

- भारतीय पादरी फादर टाम उडुनेल आतंकी संगठन आईएस के कब्जे से 18 माह बाद मुक्त हुए।
- शिवपुरी के नमित जैन आईएस के टापर बने।
- एआईएडीएमके उप महासचिव शशिकला को पद से हटाया गया।

■ 13 सितम्बर

- अहमदाबाद : जापानी प्रधानमंत्री शिंजोआबे के साथ भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रोड शो किया।
- हाजीपुर (बिहार): ओद्योगिक क्षेत्र की दो फेक्ट्रियों में आग लगी 15 करोड़ का नुकसान हुआ।
- भारत के दुश्मन दाऊद इब्राहीम की हजारों करोड़ों की सम्पत्ति ब्रिटेन में जब्त हुई।

■ 14 सितम्बर

- अमरनाथ यात्रियों पर जुलाई में हुए हमले का मास्टर माइंड अबु इस्माइल सुरक्षा बल की मुठभेड़ में ढेर हुआ।
- अहमदाबाद-मुम्बई बुलेट ट्रेन का शिलान्यास जापान के प्रधानमंत्री शिंजो आबे और भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया।
- बागपत : यमुना नदी में नाव डूबने से 19 लोग मरे। नाव में क्षमता से अधिक लोग बैठे थे।

■ 15 सितम्बर

- लंदन के पार्सन्स ग्रीन अंडरग्राउंड स्टेशन पर खड़ी ठूबट्रेन में विस्फोट हुआ 22 यात्री घायल हुए।
- जम्मू के अरनिया सेक्टर में गोलाबारी पाकिस्तानी गोलीबारी में बीएसएफ के जवान विजेन्द्रसिंह शहीद हुए।
- उत्तर कोरिया ने सबसे लंबी दूरी 3700 किमी. रेंज की बैलास्टिक मिसाइल दागी। जापान के आसमान से समुद्र में गिरी।

■ 16 सितम्बर

- 1965 में अहं भूमिका निभाने वाले पूर्व वायुसेना प्रमुख अर्जुनसिंह का निधन हुआ। वे 98 वर्ष के थे।
- सिन्धु जल समझौते भारत-पाक की बातचीत बेनतीजा रहा।
- दुनिया की सबसे बुजुर्ग महिला वायलेट भोसे ब्राउन का 117 वर्ष की उम्र में निधन हुआ।

■ 17 सितम्बर

- देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा बांध सरदार सरोवर को राष्ट्र के लिए समर्पित किया।
- अलवर (राज.) भाजपा सांसद बोहर मठ के महंत चन्द्रनाथ का निधन हुआ। वे 61 साल के थे।
- जम्मू : सीमा चौकिया पर पाक गोलाबारी अरनिया के बस स्टैंड पर गिरे। एक महिला की मौत हुई।

■ 18 सितम्बर

- सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में सौंपे हलफनामा में कहा कि रोहिंग्या देश की सुरक्षा के लिए खतरा है इनके संबंध आईएसआई व आईएस से है।
- गुडगाँव : रेयान इंटरनेशनल स्कूल 9 वे दिन खुला प्रद्युम्न की क्लास में मात्र 4 बच्चे आये।
- तमिलनाडु में स्पीकर ने अन्नाद्रमुख के बागी 18 बागी विधायकों को अयोग्य ठहराया।

■ 19 सितम्बर

- लोकसभा आचार समिति के अध्यक्ष लालकृष्ण

अडवाणी बने।

- बड़वानी : सरदार सरोवर डूब क्षेत्र आ रहा कुकरा राजघाट टापू बन गया। राजघाट से एक किमी. पहले रोड पर पानी आया।
- पंजाब-हरियाणा हाईकोर्ट के जज ए.बी. चौधरी ने रेयान ट्रस्टियों की जमानत अर्जी पर सुनवाई से पीछे हटे।

■ 20 सितम्बर

- मैक्सिको में 32 साल बाद उसी दिन सबसे बड़ा भूकम्प आया 248 लोग मरे।
- मुम्बई में भारी वर्षा का प्रभाव एयर ट्राफिक पर पड़ा तीन उड़ानें रद्द हुईं।
- ब्रिटिश एयरफोर्स ने 3200 किमी. दूर से आईएस ठिकाने पर हमला किया ड्रोन नियंत्रित मिसाइल दागी।

■ 21 सितम्बर

- पं. बंगाल में मोहर्रम के दिन दुर्गा मूर्ति विसर्जन पर ममता बनर्जी सरकार की लगी रोक को हाईकोर्ट ने रोक हटाई।
- जम्मू /श्रीनगर : जाल में पीडब्ल्यूडी मंत्री नईम अख्तर के काफिले आतंकियों ने ग्रेनेड से हमला किया 3 की मौत, 24 घायल हुए।
- कांग्रेस के वरिष्ठ नेता नारायण राणे और उनके पुत्र नीलेश (पूर्व सांसद) ने कांग्रेस छोड़ी।

■ 22 सितम्बर

- प्रतिष्ठित कास्मेटिक कम्पनी ला रियल की मालिक और दुनिया की सबसे अमीर महिला लॉरियल का निधन हुआ वे 94 वर्ष के थे।
- भारत की फायरिंग से पाक के 6 नागरिक मरे तथा 26 घायल हुए।
- सारंग पुर : काली सिंध नदी का बांध बहा एबी रोड पर कटाव हो गया।
- रामटेक : राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के दर्शन किये।

■ 23 सितम्बर

- छत्तीसगढ़ की युवती से दुष्कर्म मामले में फलाहारी बाबा पर केस दर्ज होने के 12 दिन बाद गिरफ्तारी हुई।
- मोहाली (पंजाब) वरिष्ठ पत्रकार और उनकी माँ की हत्या कर दी गई। पत्रकार केजे सिंह का गला रेत दिया।
- मिस तुर्की 2017 आइडल एसेन का पुराना ट्वीट सुर्खियों में आ गया जिससे ताज वापिस ले लिया।

■ 24 सितम्बर

- पानीपत : चार साल की बच्ची तलाश के लिए परिजनों से 10000 रु. मांगने वाला एएसआइ धर्मवीर को सस्पेंड किया गया।
- भारत ने तीसरे वनडे में आस्ट्रेलिया को 5 विकेट से हराया सीरीज में 3-0 की बढ़त बनाई।
- कश्मीर के उड़ी सेक्टर में सुरक्षाबलों ने सैन्य केम्प पर हमला करने आ रहे 3 आतंकी को मार गिराया।

■ 25 सितम्बर

- राजीव महर्षि देश के नये नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक बने।
- अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने उत्तर कोरिया वेनेजुएला चाड के नागरिकों के अमेरिका आने पर रोक लगाई।
- समाजवादी पार्टी के संरक्षक मुलायमसिंह यादव ने पुत्रमोह में नई पार्टी की घोषणा नहीं की। भाई शिवपाल यादव को गच्चा दिया।

■ 26 सितम्बर

- बाबा राम रहीम की मुँह बोली बेटी हनीप्रीत की ट्राजिट अग्रिम जमानत याचिका हाईकोर्ट दिल्ली ने खारिज की।
- श्रीनगर : सुरक्षा बलों ने 50 लोगों का हत्यारा हिजबुल आतंकी अब्दुल कयूम नियंत्रण के पास मारा गया।
- कनाडा में 1109 कैरेट का अनगढ़ हीरा 358 करोड़ रु. में ग्राफ डायमंड ने खरीदा।

■ 27 सितम्बर

- भारत-म्यामांर सीमा पर सेना ने बड़ी कार्रवाई की। एनसीएन के कैम्प तबाह किये। कई नागा उग्रवादी मारे गये।
- भारत के दिग्गज बल्लेबाज सुनील गावस्कर के नाम पर अमेरिका के केंटुकी में स्टेडियम बना।
- यूक्रेन के सबसे बड़े हथियार डिपो में आग लगी जिसमें 1.88 लाख टन हथियार सामग्री खाक।

■ 28 सितम्बर

- पूर्व केन्द्रीय मंत्री माखन फोतेदार का दिल्ली में निधन हुआ।
- प्ले बाय पत्रिका के संस्थापक ह्यू हेफनर का निधन हुआ। वे 91 वर्ष के थे।
- अफगानिस्तान के कंधार में पुलिस चेक पोस्ट पर आत्मघाती हमला हुआ। 12 पुलिस जवान मरे, 4 घायल हुए।

■ 29 सितम्बर

- मुम्बई : एलफिन्सटन रोड रेलवे स्टेशन के फुटओवर ब्रिज पर भगदड़ मचने पर 22 लोग मरे 36 लोग घायल हुए।
- कोच्ची : पुणे की 19 साल की लड़की श्रेया सिद्धाना गौड़ की कुहनी से नीचे सर्जरी से हाथ ट्रांसप्लांट किया।
- रक्षामंत्री निर्मला सीतारमण जवानों का मनोबल बढ़ाने श्रीनगर पहुंचे।

■ 30 सितम्बर

- कुवैत में 15 भारतीयों की मौत की सजा उग्रकैद में बदली।
- बब्बर खालसा के 7 आतंकी पंजाब पुलिस ने लुधियाना से गिरफ्तार किया।
- इंडियन एयरलाइंस अपहरण कांड में 124 यात्रियों की जान बचाने वाले ब्रिगेडियर बीडी मिश्रा अरुणाचल प्रदेश के राज्यपाल बने। डी.के. जोशी, अंडमान निकोबार के उपराज्यपाल बने

जैनाचार्य श्रीमद् विजयवल्लभ

सूरीश्वरजी महाराज

• सुरेश जैन, लुधियाना •

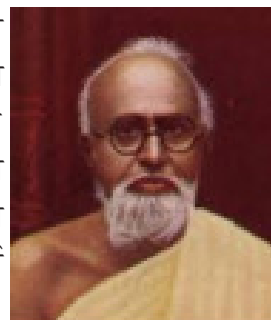


गायकवाड़ राज्य की बड़ौदा नगरी में घड़ियाली पोल के एक प्रतिष्ठित परिवार में कार्तिक सुदी दूज (भैय्या दूज) के दिन नवम्बर 1870 को पिताश्री दीपचंद भाई और माता श्रीमती इच्छाबाई के घर बालक छगन का जन्म हुआ। जब पिता का अवसान हुआ, तब माता का सन्तानों के प्रति आधार रहा। आखिर माता का भी बीमारी वश बिछुड़ने का समय आ गया, उस समय बालक छगनलाल की उम्र 16 वर्ष थी, इन्होंने माता को पूछा कि मुझे किसके सहारे छोड़ के जा रही हो, तो माता के मुख से निला तुझे अरिहंत की शरण में छोड़ के जा रही हूँ और माता के इस आशीर्वाद ने बालक छगन को आने वाली जिन्दगी का रास्ता दिखा दिया। ई. सन् 1887 में गुजरात के राधानपुर में छगन ने 17 वर्ष की अल्प आयु में सांसारिक जीवन से विरक्त होकर जैन आचार्यश्री विजयानन्द सूरि जी महाराज साहब (प्रसिद्ध नाम श्री आत्माराम जी म.) के चरणों में संन्यास

अंगीकार कर लिया। उन्होंने अपने प्रशिष्य मुनिराज श्री हर्षविजय जी म. के शिष्य के रूप में उद्घोषणा की, और नाम दिया “विजय वल्लभ”।

विजय का अर्थ है जीत तथा वल्लभ का अर्थ है प्यार तथा प्यारा। जीवन में जिसने प्यार से सबका दिल जीता वह विजय वल्लभ कहलाया तथा जो जीवन भर सब का प्यारा बन कर रहा वह था विजय वल्लभ। इनके गुरु का तीन वर्षों में देहांत हो गया तथा विजय वल्लभ लगभग नौ वर्षों तक श्री विजयानन्द सूरिजी म. के सान्निध्य में रहे, इन्होंने अपने विचारों के अनुसार विजय वल्लभ को गढ़ना प्रारम्भ किया, भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित जैन दर्शन, अहिंसा अनेकान्त तथा अपरिग्रह का ज्ञान मुनि वल्लभ को प्रदान किया। मुनि वल्लभ ने समकालीन धर्मों का अध्ययन में भी निपुणता प्राप्त की। आचार्य विजयानन्द ने इन्हें न केवल पूजा के स्थानों की स्थापना करने अपितु शिक्षण संस्थानों तथा सेवाकेन्द्रों की भी स्थापना करने के लिए कहा, जिससे महिलाओं और पुरुषों

दोनों के सही परिपेक्ष्य में धर्म को समझाने में मदद मिल सके। मुनि वल्लभ ने अपने गुरु को शिरोधार्य करते हुए जाति, श्रेणी और वर्ग का भेदभाव किए बिना समाज के कल्याण के लिए कार्य किया। इन्होंने अज्ञानता,



अंधविश्वास और अशिक्षा का निर्मूलन करने के लिए अनेक कार्यक्रम चलाए। अपने मानवीय चिंतन का वैज्ञानिक दृष्टिकोण और व्यावहारिक जीवन के कारण वे लोगों के प्रिय गुरु बन गए। वे समाज को जीवंत, प्रगतिशील एवं उन्नतिशील देखना चाहते थे, उनका सामाजिक दृष्टिकोण सुधारवादी था, वे परिवर्तनशील समाज के साथ चलना धर्म मानते थे। इस दूरदर्शी संत ने समाज की मुख्य आवश्यकताओं को महसूस करते हुए लोगों को जीवन के स्तर सुधारने के लिए नैतिक और सदृशिक्षा पर बल दिया। इन्होंने देश के विभिन्न हिस्सों में विद्यालय, कॉलेज, गुरुकुल, पुस्तकालय और कला तथा प्रशिक्षण केन्द्र खोलने के लिए समाज को प्रेरित किया है। ई. सन 1915 में मुम्बई में श्री महावीर जैन विद्यालय का खोला जाना और इसकी परवर्ती शाखाओं की स्थापना, गुजरावाला में श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल और अम्बाला में श्री आत्मानन्द जैन कॉलेज की स्थापना कुछ शानदार उदाहरण है।

इसके अलावा इन्होंने साध्वी प्रवचन का समर्थन किया, दहेज आदि कुप्रथाएं मिटाने का प्रयत्न किया, ध्वनि वर्धक यन्त्र का उपयोग प्रारम्भ किया। इन बातों का उनके समकालीन आचार्यों ने

घोर विरोध किया, कुछ मुनियों, आचार्यों एवं श्रावकों ने तो उनके प्रत्येक विचार का विरोध किया, उनका विचार था कि आधुनिक शिक्षा से संस्कृति का ह्रास होता है। आज इतने समय के बाद सबको ऐसा लगता है कि विजय वल्लभ पूर्णतः ठीक थे। उस समय यदि सबने साथ दिया होता तो आज धर्म, समाज एवं संस्कृति का इतिहास कुछ और होता। आज के युग में क्रांतिकारी संत और साध्वियां यह नारा बुलंद कर रहे हैं। “जहां जिनालय वहाँ विद्यालय” क्या ही अच्छा हो आज समाज शिक्षा (स्कूल-कॉलेज आदि) स्वास्थ्य (अस्पताल-स्वास्थ्य केन्द्र) सेवा (वृद्धाश्रम-बालगृह आदि) के महत्व को समझे। विजय वल्लभ जी को सन् 1924 में लाहौर (अब पाकिस्तान) में आचार्य की पदवी दी गई, कलिकाल-कल्पतरु, अज्ञान तिमिर तरणि, भारत दिवाकर, पंजाब-केसरी आदि अनेक अलंकरणों से सम्मानित हुए।

आचार्यश्री शोध कार्य के विद्वान थे। इन्होंने अमूल्य पांडुलिपियों की हजारों

प्रतिलिपियों को एकत्र और सुरक्षित किया। उन्होंने श्री महावीर जैन विद्यालय, मुम्बई और जैन गुरुकुल, गजरावाला तथा अन्य पुस्तकालयों में भारतीय विधाओ (इंडोलॉजी) पर पुस्तकें प्रकाशित की जो ज्ञान और सांस्कृतिक धरोहर के बहुमूल्य भंडार हैं। उन्होंने उपलब्ध ज्ञान को आधुनिक शोध की परिधि में ढालने की सलाह दी।

आचार्य विजय वल्लभ अखण्ड बाल ब्रह्मचारी थी। तप, संयम और चरित्र की साक्षात् प्रतिमा थे। उनमें अद्भुत आत्म बल, आत्म विश्वास और आत्मतेज था। वे मानवता और आध्यात्मिकता के एक उत्कृष्ट उदाहरण थे। वह कट्टर देश भक्त थे, स्वतंत्रता संग्राम से एकजुटता रखते हुए उन्होंने जीवन पर्यन्त खादी धारण की तथा अपने प्रवचनों से स्वदेशी का प्रचार किया। उन्होंने अपने प्रवचनों और व्यवहार दोनों के द्वारा जीवन के उच्चतम नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को जनमानस के समक्ष प्रस्तुत किया। उन्होंने जैन साधुओं की मर्यादा का पालन करते हुए नंगे पांव गहन पदयात्राएं की और जैन धर्म के संदेश को प्रसारित करने के लिए महाराष्ट्र, गुजरात, सौराष्ट्र, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, पंजाब तथा जम्मू और कश्मीर राज्यों का दौरा कई बार किया। उनका जन्म गुजरात में हुआ था फिर भी उन्होंने राष्ट्रीय भाषा के

रूप में हिन्दी को बढ़ावा दिया, वे एक प्रसिद्ध वक्ता, लेखक और कवि थे। उन्होंने गद्य में अनेक पुस्तकें लिखने के अलावा लगभग 1600 कविताएं, गीत और भजन लिखे जो कथ्य और शैली दोनों में ही समृद्ध हैं। वे धर्म निरपेक्षता के पोषक थे और साम्प्रदायिक सद्भाव और धर्म-सम्भाव के उद्घोषक थे। उन्होंने यह घोषणा की मैं न जैन हूँ, न बौद्ध, न वैष्णव हूँ न शैव, न हिन्दू हूँ और न मुसलमान। मैं तो वीतराग देव परमात्मा को खोजने के मार्ग पर चलने वाला मानव हूँ यात्री हूँ।

विजय वल्लभ का सामाजिक दृष्टिकोण सुधारवादी था, न तो उन्होंने प्राचीन रूढ़ियों को सर्वथा नकारा न उसे पूर्ण रूप से स्वीकारा, जिन रूढ़ियों को वह उचित, न्यायसंगत एवं धर्म के अनुरूप समझते थे उन्हें स्वीकारा। जिन रूढ़ियों से न तो कोई धर्म को लाभ होता है न समाज को, जो केवल रूढ़ि बन कर रह गई थी, जिनके पालन एवं प्रचलने से किसी भी प्रकार का लाभ नहीं होता उन्हें अस्वीकार करते थे।

आचार्य विजय वल्लभ के जीवन के तीन आदर्श थे।

प्रथम - आत्म संन्यास-आत्म साधना, इस लक्ष्य के बिना आत्मोन्नति सम्भव नहीं।

दूसरा - ज्ञान प्रचार-शिक्षा प्रचार, शिक्षा के अभाव में जीवन शून्य है।

तीसरा - मध्यम वर्ग का उत्कर्ष, अनेकों परिवारों को सुखी बनाना उन्हें अपने पांव पर खड़ा करना।

आचार्यश्री ने वास्तव में समाज के चहुँमुखी विकास के लिए शिक्षा, सेवा, संगठन, साहित्य और स्वावलम्बन को अपनी पहचान और जीवन का लक्ष्य बना दिया था।

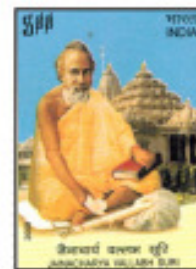
आचार्य विजय वल्लभ का जीवन दीपक 84 वर्ष की आयु में 22 सितम्बर ई. सन् 1954 मंगलवार को रात के 2 बजकर 32 मिनट पर पुण्य नक्षत्र में भायरवला-मुम्बई में बुझ गया

विजय वल्लभ के अन्य शिष्य व पौत्र शिष्य भी विद्या, तप और सेवा के क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य कर रहे हैं। तप परम्परा में श्रीमद् विजयवल्लभ सूरि जी के पौत्र शिष्य तप चक्रवर्ती श्री विजय वसन्तसूरिजी म. (शिष्य स्व. श्री विचारविजयजी म.) का अखंड 48 वां वर्षीतप चल रहा है, ज्ञात सूत्रों के अनुसार भारत वर्ष में होने वाला यह सबसे लम्बा वर्षीतप है।

जैनाचार्य विजय वल्लभ पर डाक टिकट

21 फरवरी 2001 को भारत सरकार के डाक विभाग द्वारा जारी किये गये डाक टिकट को शंख सामंत द्वारा डिजाईन किया गया था, टिकट के ऊपर श्री विजय वल्लभ की बैठी हुई मुद्रा में पूरा चित्र हाथ में पुस्तक ले कर बना हुआ है तथा पृष्ठभूमि में वल्लभ स्मारक दिल्ली का चित्र है, टिकट के नीचे जैनाचार्य वल्लभ सूरि हिन्दी तथा इंग्लिश में लिखा है। इस बहुरंगी डाक टिकट को वेट-आफसेट मुद्रण प्रक्रिया से 10 लाख संख्या में छपवा कर जारी किया गया था।

इसका मूल्य 500 पैसे है। इस डाक टिकट का विवरण इंग्लैंड से छपने वाले सटेनले गिबबनस केटालाग में एसजी नम्बर 2454 पर तथा कामनवेल्थ देशों के केटालाग में नम्बर 1871 पर दिया गया है।



क्षुल्लिका दीक्षा सम्पन्न

फिरोजाबाद (उ.प्र.)। आचार्यश्री चैत्यसागरजी महाराज के करकमलों से श्री दिगम्बर जैन रत्नत्रय मंदिर नसिया जी फिरोजाबाद (उ.प्र.) में 83 वर्षीय गुलाबबाई, चौकीगेट, फिरोजाबाद को क्षुल्लिका दीक्षा दिनांक 28 सितम्बर 2017 को दी गई। जिनका नाम क्षुल्लिकाश्री समकितश्री माताजी रखा गया।

इसे भी जानिये

कुछ वैज्ञानिकों को जाने

डॉ. होमी जहांगीर भाभा - भारत में परमाणु ऊर्जा के जनक माने जाते हैं। आप परमाणु ऊर्जा आयोग के प्रथम चेयरमैन थे। कास्मिक किरणों तथा क्वान्टम् थ्योरी पर आपने महत्वपूर्ण शोध कार्य किया है। भारत के प्रथम परमाणु रिएक्टर ट्राम्बे में आप ही की देखरेख में स्थापित हुआ था। आपकी मृत्यु वायुयाम दुर्घटना में हो गई।

डॉ. एस. भगवन्तम् - आप भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिक में से एक थे। आप रेडियो खगोल-विज्ञान तथा कॉस्मिक किरणों पर महत्वपूर्ण कार्य किया था।

डॉ. शान्ति स्वरूप भटनागर - (1875-1955) आप विज्ञान के क्षेत्र में भारत के जाने माने व्यक्ति रहे हैं। आप वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान के परिषद के अध्यक्ष रहे हैं।

जगदीशचन्द्र बोस - (1858-1937) आप वनस्पति विज्ञान के ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक हुए हैं पौधों में चेतना शक्ति की खोज आपकी ही देन है तथा आपने क्रेस्कोग्राफ का आविष्कार किया था बोस ने बोस इंस्टीट्यूट की आधारशिला रखी थी।

एस.एन. बोस - आपने आइन्सटाइन के साथ मिलकर एक नई सांख्यिकी का प्रतिपादन किया है तथा 'बोसोन' नामक कण का आविष्कार किया है।

प्रो. सतीश धवन - आप प्रमुख भारतीय वैज्ञानिक है जिन्होंने अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भारतीय कृत्रिम उपग्रह आर्यभट्ट तथा रोहिणी का प्रक्षेपण आपके अथक प्रयासों का ही प्रतिफल है। इनके वर्ष 1999 में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

डॉ. ए.वी. जोशी - कृषि विज्ञान कि क्षेत्र में आपने महत्वपूर्ण योगदान किया है। आप इण्डियन एग्री कल्चरल रिसर्च इंस्टीट्यूट के निदेशक रहे हैं। कृषि के क्षेत्र में विशिष्ट सेवाओं के लिये आपको वोरलॉग पुरस्कार से 1975 में सम्मानित किया गया था।

डॉ. हरगोविन्द खुराना - भारत के मूल निवासी परन्तु बाद में अमेरिकी की नागरिकता प्राप्त करने वाले वैज्ञानिक है जिन्हें जेनेटिक कोट पर किये गये शोध पर एक नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। अपने कृत्रिम जीन का निर्माण भी किया था।

डॉ. के.एस. कृष्णन - (1898-1961) भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में आपने महत्वपूर्ण अनुसंधान कार्य किया है आपने रमन इफेक्ट की खोज में डॉ. सी.वी. रमन के सहयोगी के रूप में कार्य किया है आप राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला दिल्ली के निदेशक भी रहे हैं।

डॉ. बी.डी.नाग चौधरी - आपने परमाणु विज्ञान पर महत्वपूर्ण शोध कार्य किया है तथा साइक्लोट्रॉन के आविष्कार में डॉ. लारेन्स के सहयोगी रहे हैं आप शाह न्यूक्लियर इंस्टीट्यूट कलकत्ता के निदेशक भी रहे हैं।



दिशाबोध

परोपकार



1. महान् पुरुष जो उपकार करते हैं, उसका बदला नहीं चाहते। भला संसार जल बरसाने वाले बादलों का बदला किस भाँति चुका सकता है ?
2. योग्य पुरुष अपने हाथों से परिश्रम करके जो धन जमा करते हैं, वह सब जीवमात्र के उपकार के लिए ही होता है।
3. हार्दिक उपकार से बढ़कर न तो कोई चीज इस भूतल से मिल सकती है और न ही स्वर्ग में।
4. जिसे उचित-अनुचित का विचार है, वही वास्तव में जीवित है और जिसे योग्य-अयोग्य का ज्ञान नहीं हुआ, उसकी गणना मृतकों में की जायेगी।
5. लबाबल भरे तालाब को देखो। जो मनुष्य सृष्टि से प्रेम करता है, उसकी सम्पत्ति उसी तालाब के समान है।
6. सहृदय व्यक्ति का वैभव गाँव के बीचों बीच उगे हुए और फलों से लदे हुए वृक्ष के समान है।
7. परोपकारी के हाथ का धन उस वृक्ष के समान है, जो औषधियों का सामान देता है।
8. देखो, जिन लोगों को उचित और योग्य बातों का ज्ञान है, वे बुरे दिन आने पर भी दूसरों का उपकार करने से नहीं चूकते।
9. परोपकारी पुरुष उसी समय अपने को गरीब समझता है, जबकि वह सहायता माँगने वालों की इच्छा पूर्ण करने में असमर्थ होता है।
10. यदि परोपकार करने के फलस्वरूप सर्वनाश उपस्थित हो, तो भी दासत्व में फँसने के लिए आत्म-विक्रय करके भी उसका (परोपकार का) सम्पादन करना उचित है।

हर रोज अपने जीवन को नया अर्थ दे

• ललित गर्ग •

आज पूरी दुनिया में उथल-पुथल का दौर चल रहा होता है, ऐसी स्थितियों में अक्सर लोग लक्ष्य को पाने की आस छोड़ देते हैं। उनका सारा ध्यान महज अपने अस्तित्व को बचाए रखने में लग जाता है। लक्ष्य का होना जीवन को स्पष्टता देता है। अच्छी खबर यह है कि आप बंधी-बंधाई सुरक्षित राहों के इतर राह चुनते हैं तो उन अवसरों पर सोचना भी आसान हो जाता है, जो आपको मुश्किल लगती थीं।

परिवर्तन की इस संधि-बेला में इस भूमण्डलीकरण, आर्थिक आजादी और आक्रामकता के दौर में एक ऐसी मानवीय संरचना की आवश्यकता है जहां इंसान और उसकी इंसानियता दोनों बरकरार रहे। इसके लिये मनुष्य को भाग्य के भरोसे न रहकर पुरुषार्थ करते रहना चाहिए। पुरुषार्थ कभी व्यर्थ नहीं जाता बल्कि सफलता का सूत्रधार है पुरुषार्थ। इसके लिये जरूरी है आप हर रोज अपने सपनों के बारे में सोचें और उनको आका देने के लिये तत्पर हो।

इंसान अपना प्रिय जीवन-संगीत टूट रहा है। वह अपने से, अपने लोगों से और प्रकृति से अलग हो रहा है। उसका निजी एकांत खो रहा है और रात का खामोश अंधेरा भी। इलियट के शब्दों में, “**कहाँ है वह जीवन जिसे हमने जीने में ही खो दिया।**” फिर भी हमें उस जीवन को पाना है। जहां इंसान आज भी

अपनी पूरी ताकत, अभेद्य जिजीविषा और अथाह गरिमा और सतत पुरुषार्थ के साथ जिंदा है इसी जिजीविषा एवं पुरुषार्थ के बल पर वह चांद और मंगल ग्रह की यात्राएं करता रहा है। उसने महाद्वीपों के बीच की दूरी को खत्म किया है। वह अपनी कामयाबियों का जश्न मना रहा है फिर भी कहीं-न-कहीं इंसान के पुरुषार्थ की दिशा दिग्भ्रमित रही है कि मनुष्य के सामने हर समय अस्तित्व का संघर्ष कायम है। जब हम अपनी ही सोच और क्षमताओं पर संदेह करने लगते हैं तब अन्धेरा घना होता है। तभी लगता है कि अब कुछ नहीं हो सकता। लेखिका एलेक्जेंड्रा फेन्जन कहती हैं, **‘अगर दिल धड़क रहा है, फेफड़े सांस ले रहे हैं और आप जिंदा है तो कोई भी भला रचनात्मक और खुशी देने वाला काम करने में देरी नहीं हुई है।’**

हांलाकि इस संघर्ष और विश्वास से उसको नयी ताकत, नया विश्वास और नयी ऊर्जा मिलती है और इसी से संभवतः वह स्वार्थी बना तो परोपकारी भी बना। वह क्रूर बना तो दयालु भी बना, वह लोभी व लालची भी बना तो उदार व अपरिग्रह भी बना। वह हत्यारा और हिंसक हुआ तो रक्षक और जीवनदाता भी बना। आज उसकी चतुराई, उसकी बुद्धिमत्ता, उसके श्रम और मनोबल पर चकित हो जाना पड़ता है। इस सबके बावजूद जरूरत है कि इंसान का पुरुषार्थ उन

दिशाओं में अग्रसर हो जहां से उत्पन्न सदगुणों से इंसान का मानवीय चेहरा दमकने लगे। इंसान के सम्मुख खड़ी अशिक्षा, कुपोषण और अन्य जीने की सुविधाओं के अभाव की विभीषिका समाप्त हो। वह जीवन के उच्चतर मूल्यों की ओर अग्रसर हो। सत्य, अहिंसा, सादगी, सच्चाई और मनुष्यता के गुणों के बारे में उसकी आस्था कायम रहे।

कहते हैं एक बार इन्द्र किसी कारणवश पृथ्वीवासियों से नाराज हो गए और उन्होंने कहा कि बारह वर्ष तक वर्षा नहीं करनी है। किसी ने उनसे पूछा कि क्या सचमुच बारह वर्ष तक बरसात नहीं होगी। इन्द्र ने कहा- हाँ, यदि कहीं शिवजी डमरु बजा दें तो वर्षा हो सकती है। इन्द्र ने जाकर शिवजी से निवेदन किया कि भगवन्! आप बारह वर्ष तक डमरु न बजायें। शिवजी ने डमरु बजाना बंद कर दिया। तीन वर्ष बीत गए, एक बूंद पानी नहीं गिरा। सर्वत्र हाहाकार मच गया। एक दिन शिव-पार्वती कहीं जा रहे थे। उन्होंने देखा कि एक किसान हल-बैल लिए खेत जोत रहा है। उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। दोनों किसान के पास गए और कहने लगे - क्यों भाई! जब आपको पता है कि आने वाले नौ वर्षों में भी बरसात नहीं होगी तो तुम खेत की जुताई क्यों कर रहे हो? किसान ने कहा- **वर्षा का होना ना होना मेरे हाथ में नहीं है लेकिन मैंने यदि हल चलाना छोड़ दिया तो बारह साल बाद न तो मुझे और न ही मेरे बैलों को हल चलाने का अभ्यास रहे इसलिए हल**

चला रहा हूँ। किसान की बात सुनकर पार्वती ने शिवजी से कहा कि स्वामिन्! तीन साल हो गए आपने डमरु नहीं बजाया, अभी नौ साल और नहीं बजाना है देखो! कहीं आप भी डमरु बजाने का अभ्यास न भूल जाएं। शिवजी ने सोचा- बात तो सही है। डमरु बजाकर देख लेना चाहिए। वे डमरु बजाकर देखने लगे। उनका डमरु बजते ही पानी झर-झर बरसने लगा।

उक्त कथा का सार संदेश यही है कि मनुष्य को अपना प्रयास नहीं छोड़ना चाहिए। किसी काम में सफलता मिलेगी या नहीं, कहा नहीं जा सकता। भविष्य में क्या होने वाला है, सब अनिश्चित है। यदि कुछ निश्चित है तो वह है व्यक्ति का अपना पुरुषार्थ। सफलता मिलेगी या नहीं इसकी चिंता छोड़कर केवल अपना काम करता चले। सफलता मिल गई तो वाह-वाह यदि नहीं मिली तो भी मन को इतना संतोष तो रहेगा कि जितना मुझे करना था वह मैंने किया। यह संतोष भी एक प्रकार की सफलता ही है।

यह आवश्यक नहीं है कि सफलता प्रथम प्रयास में ही मिल जाए। जो आज शिखर पर पहुंचे हुए हैं वे भी कई बार गिरे हैं, ठोकर खाई हैं, उस शिशु को देखिए जो अभी चलना सीख रहा है। चलने के प्रयास में वह बार-बार गिरता है किन्तु उसका साहस कम नहीं होता। गिरने के बावजूद भी प्रसन्नता और उमंग उसके चेहरे की शोभा को बढ़ाती ही है। जरा विचार करें उस नन्हें से बीज के

बारे में जो अपने अंदर विशाल वृक्ष उत्पन्न करने की क्षमता समेटे हुए है। आज जो विशाल वृक्ष दूर-दूर तक अपनी शाखाएं फैलाएं खड़ा है, जरा सोचो कितने संघर्षों, झंझावतों को सहन करने के बाद इस स्थिति में पहुंचा है सर्वस्व समर्पण और अपार प्रसव पीड़ा सहन करने के बाद ही कोई नारी मातृत्व का गौरव प्राप्त करती है। यदि लक्ष्य स्पष्ट हो, उसके पाने की तीव्र उत्कंठा एवं अदम्य उत्साह हो तो अकेला व्यक्ति भी बहुत कुछ कर सकता है। विश्वकवि रविन्द्रनाथ टैगोर का यह कथन कितना सटीक है कि अस्त होने के पूर्व सूर्य ने पूछा - कि मेरे अस्त हो जाने के बाद दुनिया को प्रकाशित करने का काम कौन करेगा। तब एक छोटा सा दीपक सामने आया और कहा - प्रभु ! जितना मुझे हो सकेगा उतना प्रकाश करने का काम मैं करूंगा। हम देखते हैं कि आखिरी बूंद तक दीपक अपना प्रकाश फैलाता रहता है। जितना हम कर सकते हैं उतना करते चले। आगे का मार्ग प्रशस्त होता चला जाएगा। किसी ने कितना सुंदर कहा है- **जितना तुम कर सकते हो उतना करो, फिर जो तुम नहीं कर सको, उसे परमात्मा करेगा।** जो व्यक्ति आपत्ति-विपत्ति से घबराता नहीं, प्रतिकूलता के सामने झुकता नहीं और दुःख को भी प्रगति की सीढ़ी बना लेता है, उसकी सफलता निश्चित है। ऐसे धीर पुरुष के साहस को देखकर असफलता घुटने टेक देती है। इसीलिए तो कहा गया है - **“चरैवेति चरैवेति”** अर्थात् चलते रहो, चलते रहो, निरंतर श्रमशील रहो।

किसी महापुरुष ने कितना सुंदर कहा है - अंधकार की निन्दा करने की अपेक्षा एक छोटी-सी मोमबत्ती, एक छोटा-सा दिया जलाना कहीं ज्यादा अच्छा होता है। राबर्ट जे. कॉलियर कहते हैं, ‘सफलता छोटे-छोटे कई प्रयासों का नतीजा होती है, जिन्हें कई दिनों तक बार-बार दोहराया जाता है।’ अगर आप एक के बाद एक कदम उठाते रहें, जरूरत के हिसाब से बदलते रहें, तो मंजिल तक जरूर पहुंचेंगे।

महापुरुष समझाते हैं कि व्यक्ति सफलता प्राप्ति के लिए पुरुषार्थ अवश्य करे, लेकिन अति महत्वाकांक्षी न बने। अति महत्वाकांक्षा का भूत विनाश का कारण बनता है, असंतोष तथा अशांति की अग्नि में भस्म कर देता है। किसी के हृदय को पीड़ा पहुंचाकर, किसी के अधिकारों को छीनकर प्राप्त की गई सफलता न तो स्थायी होती है और न ही सुखद। ऐसी सफलता का कोई अर्थ नहीं होता। अति महत्वाकांक्षी व्यक्ति को हिटलर, नादिरशाह, चंगेज खां, तैमूरलंग, औरंगजेब इदी अमीन तो बना सकती है किन्तु सुख-चैन से जीने नहीं देती। दिन-रात भय और चिन्ता के वातावरण का निर्माण करती है और अंततः सर्वनाश का ही सबक बनती है।

किसी भी दशा में निरन्तर प्रयास करने के बाद भी यदि वांछित सफलता न मिले तो हताश, उदास एवं निराश नहीं होना है। इस जगत में सदैव मनचाही सफलता किसी को भी नहीं मिली है और न ही कभी मिल सकती है। लेकिन यह भी सत्य है कि किसी का पुरुषार्थ कभी निष्फल नहीं गया है। ■

अमरूद

शीतकालीन अवकाश चल रहा था। तभी मुझे सागर की यात्रा करने का अवसर मिला। माह अक्टूबर में उस समय शिक्षण संस्थाओं का अवकाश 24 दिन का रखा जाता था। सभी शिक्षण संस्थाएं इन दिनों में बंद रहती थी। सब मित्र अपने अपने रिश्तेदारों के यहाँ छुट्टियां बिताने अवश्य जाते थे। मैं भी अपनी मौसी के घर छुट्टी बिताने गया।

सागर का मुख्य मार्ग जो बस् स्टैण्ड से यूनिवर्सिटी तक गोपालगंज से होकर गुजरता था। वहाँ रुकते थे। हम कस्बे से जब सागर शहर जाते थे तो सागर जाने का उत्साह कुछ अलग ही होता था। अपनी मौसी का प्यार इतना मिलता था कि हम उसके दीवाने हो जाते थे। रोज नये-नये पकवान मिलना खेलने का पूरा मौका मिलना और रोज नये-नये आकर्षक वाहनों को देखने का मौका मिलता था। खेलने का मैदान तो नहीं था। मैदान के लिये कुछ दूर जाना पड़ता था। जनता हाई स्कूल के मैदान में जब पहली बार गया तो वहाँ एक झण्डा लहरा रहा था। भगवा रंग का झण्डा देखकर मैं उसके पास गया वहाँ देखा तो बहुत बच्चे खेल रहे थे। मेरा भी मन खेलने के लिये ललचा रहा था।



पर नया वातावरण, नई जगह सोचा कौन खिलायेगा मुझे ? इतने में एक गले में सीटी लटकाये खाकी हाफ पेन्ट पहने सफेद शर्ट एवं सिर पर काली टोपी थी उन्होंने आकर मेरे से पूछा - क्यों बेटे, तम्हें भी खेलना है। मैंने अपने चहकते हुए चेहरे से कहा- हाँ। उन्होंने कहा - एक काम करो तुम गोले में खड़े हो जाओ। मैं जाकर गोले में खड़ा हो गया। खेल था जहर की पुड़िया। एक पत्थर अपने आगे वाले खिलाड़ी को देना था। एक सन सन्ना की आवाज जब तक आती थी तब तक ही पत्थर आगे बढ़ाना था। जब आवाज बंद हो जाये तो फिर जिसके हाथ में पत्थर होता था वह बैठ

जाता था। खेल में भरपूर हमारा मनोरंजन हुआ। बिना खर्चे का यह खेल मुझे बहुत पसंद आया। खेल समाप्त होने के बाद सब बच्चों को बैठाने की आज्ञा मिली। सब बच्चे एक साथ बैठ गये। मैं थोड़ा सा विलम्ब से बैठा तो उन काली टोपी वाले अंकल ने मुझे बड़े प्यार से समझाया। बेटे यहाँ सब काम अनुशासन से होते हैं। मैंने अपने स्कूल में अनुशासन शब्द तो सुना था पर अनुशासन क्या होता है। मैं यह नहीं जानता था। मैंने उन काली टोपी वाले से पूछना चाहा कि काका अनुशासन क्या होता है पर संकोच वश नहीं पूछ पाया। खैर कुछ समय बाद वहाँ गीत गाया चंदन है इस देश की माटी तपो भूमि यह ग्राम है हर वाला देवी की प्रतिमा, बच्चा-बच्चा राम है। मुझे यह गीत बहुत पसंद आया गीत समाप्त होते ही टोपी वाले काका ने एक कहानी सुनाई। सुनकर मैंने तय किया जब तक सागर रहूँगा तब तक रोज मैं आऊँगा। फिर क्या था मैं और मेरी मौसी का लड़का निर्भय दोनों मिलकर रोज खेलने, कहानी सुनने और गीत गाने उस स्थान पर जाने लगे। 10 दिन के बाद मेरे अंदर राष्ट्र के प्रति अपूर्व भक्ति पैदा हुई।

हमारी मौसी के पड़ोसी एक जैन ही परिवार के थे। उनके आंगन में अमरुद के तीन-चार झाड़ लगे थे। कुछ हरे अमरुद थे तो कुछ पक कर के सफेद और पीले पड़

रहे थे। एक दिन छत पर खड़े होकर मैं उन अमरुदों को बड़ी गौर से देख रहा था। मेरे भीतर की ललक थी कि कैसे इनके घर पर जाऊँ और इन अमरुदों का मीठा-मीठा स्वाद लूँ। जब मैं अमरुद देख रहा था। तभी निर्भय ने आकर मुझसे पूछा - क्यों सुमन भैया, क्या देख रहे हो ? मैंने उससे कहा - मैं भी देखूँ, तुम भी देखो कितने सुन्दर कच्चे पके अमरुद लगे हैं। काश मुझे जाने का मौका मिल जाए तो मैं झाड़ पर चढ़कर 5 अमरुद से कम नहीं खाऊँगा, पर निर्भय ने कहा- उस तरफ मत देखो, तुम्हें पता नहीं है उनसे अपनी बाई की लड़ाई चल रही है। अगर बेटा वहाँ गये तो समझ लेना यहाँ से तुम्हारी छुट्टी हो जायेगी और बाई एक मिनट भी तुम्हें रुकने नहीं देगी और यह कह देगी कि या तो तुम वहाँ रहो या मेरे यहाँ रहो। मैं उधेड़बुन में उलझ गया जब उन पड़ोसी के आंगन में झांकत तो मेरी मौसी की पड़ोसन मेरी तरफ देखकर मुस्कुरा देती थी। पर फिर अमरुद के पेड़ पर लगे फलों को देखने लगती तो मैं भी कहता कि आंटी जी वो पीली हो रही है। वो फिर मुझसे पूछती कहाँ है ? मैं इशारे से उन्हें बता देता था उनका भी इशारा चलता था और मेरा भी यही क्रम चलता रहा। एक दिन उन्होंने मुझे अमरुद खाने के लिए दो अमरुद फेंक दिये। यद्यपि मैंने उन्हें इशारे से मना भी

किया पर उन्होंने तो फेंक ही दिये। मैंने दोनों अमरुद को झेलने की कोशिश की पर असफल रहा एक तो मेरे हाथों में आ गया किन्तु दूसरा लोहे की चादर पर गिरा। अब मुझे डल लगा कि भोजन बना रही मौसी तक यह आवाज जरूर पहुँच गई और वहाँ से आवाज भी आ गई की कौन है रे ? क्या कर रहा, मैं आऊँ क्या ?

मेरे सीने की धड़कन बढ़ गई अब क्या किया जाये मैंने तुरंत अपनी सूझबूझ से काम लिया दोनों अमरुदों पर अपना कब्जा कर ही रहा था कि मौसी का बेटा निर्भय ऊपर छत पर आ गया बोला, सुमन भैया तुम क्या कर रहे हो ? क्या गिरा दिया। मम्मी पूछ रही है क्या गिरा है ? देख के आओ कोई पड़ोसी ने पत्थर तो नहीं फेंका है। मैंने निर्भय की तरफ एक अमरुद बढ़ाया और कान में कहा चुपचाप हम दोनों मिलकर पहले अमरुद खाये। फिर बाद में जो होगा देखेंगे। निर्भय ने मेरी बात को मान ली और हम दोनों बैठ कर के अमरुद खाने लगे। सचमुच में अमरुद तो बहुत ही स्वादिष्ट थे। आज भी यदि उन अमरुदों का स्वाद याद आ जाये तो अलग ही वंदना हो सकती है। खैर जो भी हो हम दोनों मिलकर अमरुद का स्वाद चख रहे थे पर एक दूसरे से कुछ बोल नहीं रहे थे। फिर क्या था ? नीचे मौसी की बैचेनी बढ़ गई कि आखिर क्या गिरा और आवाज किस की आई है। मौसी

ने नीचे से किचन से ही आवाज लगाई- निर्भय, बेटा निर्भय, क्या गिरा, बताया नहीं तूने। निर्भय और हम दोनों चुप रहे, क्योंकि आधे आधे अमरुद तो हम दोनों चट कर गये थे और आधे शेष थे निर्भय भी कुछ नहीं बोला, मैं भी कुछ नहीं बोला। हम दोनों तो बस अमरुद खाने का आनंद ले रहे थे। जब कुछ देर तक मौसी को कोई जवाब नहीं मिला तो मौसी सीढ़ियों पर लाठी बजाती आ रही थी और हम दोनों का अमरुद का टुकड़ा छोटा-छोटा ही बचा था। मौसी के आने की आहट सुनते ही हम दोनों ने बहुत जल्दी ही टुकड़ा मुँह में डाल लिया और बहुत कुछ असलियत छुपाने की कोशिश में लग गये। जैसे ही मौसी छत पर आई कि हम दोनों ने दौड़ लगा दी और सीढ़ियों से नीचे उतर गये। मौसी एक इन्सपेक्टर की तरह मौका मुआयना कर रही थी कि टीन की चादर पर आखिर गिरा क्या है ? उनका मौका मुआयना पूरा हो चुका था और वो सीढ़ियों से नीचे लौट रही थी। हम दोनों नीचे अमरुद खाने का कार्य पूर्ण कर चुके थे। थोड़े से पानी से मुँह साफ करने के बाद ऊपर चढ़ ही रहे थे कि मौसी बीच में ही मिल गई उन्होंने सबसे पहले निर्भय से पूछा, क्यों रे बदमाश तू यहाँ क्या कर रहा था ? मैंने तुझे किस काम के लिये भेजा था ? निर्भय चुपचाप मासूमियत से बोला -मम्मी वहाँ कुछ भी

तो नहीं था मुझे तो कुछ भी दिखा नहीं। आपको क्या दिखा? मौसी बोली - बिना कुछ गिरे आवाज कैसे आ सकती है? मैंने कहा - मौसी हो सकता है पड़ोसी की दीन की चादर पर बच्चों ने गेंद फेंकी हो, मौसी बोली तो गेंद तो वहां होती? निर्भय के मुंह में अमरुद का एक बीज लग रहा था मौसी ने कहा निर्भय तेरे मुंह में क्या लगा है। निर्भय ने झट से मुंह पर हाथ फेरा-कहा कि कुछ तो नहीं। मौसी ने कहा मेरी आंखें है बटन नहीं, तू ये बता अमरुद कहाँ से खाया है। मैं धीरे से वहाँ से खिसक लिया आगे बढ़कर किचन के बाहर एक कोने में खड़ा हो गया। और कान लगाकर सुनने लगा कि कितने चांटे निर्भय में पड़ते बस थोड़ी देर बाद मैंने देखा मौसी मेरी ओर घूरती हुई अपने किचन में चली गई।

जान बची लाखों पाय की बात समझकर मैं वहीं बैठ गया। निर्भय भी अपने आंसू पोंछता सा मेरे बगल में आकर बैठ गया। हम दोनों चुपचाप बैठे रहे। थोड़ी देर बाद निर्भय फुसकते हुए बोला, सुमन भैया आज हम दोनों को खाना नहीं मिलना है। मम्मी का आदेश हो गया है कि तुम दोनों अब सिर्फ अमरुद खा लेना, रोटी-बोटी तुम लोगों को नहीं मिलेगी।

निर्भय की बात सुनकर मैं चिंतन करने लगा कि हमने कोई अमरुद मांग के तो खाये नहीं हैं और न ही हमने चोरी की है फिर दंड

किस बात का?

अपने दोनों घुटनों के बीच सिर को फंसाकर बैठ गया और सोचने लगा कि मेरा इसमें अपराध क्या है? हम दोनों जब सहमे-सहमे बैठे थे तभी मौसा जी मंदिर से लौटकर आये बोले क्या बात है? आज तो निर्भय और सुमन दोनों चुपचाप बैठे हैं। क्या इन पर किसी का मंत्र चल गया, ये दोनों मिल जाये और शैतानी न हो ऐसा कभी हो सकता है?

इन दोनों ने मेरे पड़ोसी दुश्मनों की दी हुई अमरुद खाई है। बस अब ये अमरुद ही खाये और मांग कर खालें और उन्हीं के घर जाकर रहें।

मौसी की बात गम्भीरता से न लेते हुए मौसाजी ने कहा, देखो पड़ोसी से लड़ाई तुम्हारी है न कि बच्चों की। बच्चों को बच्चे रहने दो, उन्हें अपनी बराबरी का मत बनाओं। अपना बैर विरोध बच्चों पर लागू करना अच्छी बात नहीं। बच्चे मन के सच्चे होते हैं। वे किसी से भी अनबोला नहीं रख सकते हैं। उन्हें ईर्ष्यालु, चुगलखोर हम बनाते हैं। अतः उन्होंने जो कुछ भी किया है कोई गलत नहीं है तुम किसी भी प्रकार से बच्चों को नहीं रोकोगी। मौसाजी का फैसला सुनकर हम लोगों की बांछें खुल गई और हम लोग अमरुद खाने पड़ोसी के आंगन तक जाने लगे। एक दिन ऐसा आया कि मौसी के पड़ोसी से मधुर संबंध बन गये।

अपने आसपास निःशुल्क पथरी दवाई प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें

सुलभ जैन, कुरवाई (म.प्र.)	9893486384
अशोक कंठाली, सुसमेर	98425935470
प्रदीप जैन, आरोन (म.प्र.)	9425720763
मीना चौधरी, भोपाल (म.प्र.)	9827335626
ज्ञानचंद जैन, आष्टा (म.प्र.)	9926546221
शिरखचंद जैन, टीकमगढ़ (म.प्र.)	9406756564
जय जिनेन्द्र किराना, कटनी (म.प्र.)	07622-504269
देवेन्द्रकुमार जैन, बीना (म.प्र.)	9425452825
राजेश मलैया, रहली (म.प्र.)	9303225656
देवेन्द्रसिंह, सिलवानी (म.प्र.)	7898846011
मनोज जैन, भानपुरा (म.प्र.)	9300383124
सतीश गोहिल, सिरौज (म.प्र.)	8978656675
देवेन्द्रकुमार जैन, बीना (म.प्र.)	9425452825
डॉ. प्रशांत कुमार जैन, राघौगढ़ (म.प्र.)	9425045179
डॉ. ए.के. जैन, विदिशा (म.प्र.)	9179127772
धनकुमार जैन, सीहोर (म.प्र.)	9425938201
डॉ. प्रदीप जैन, छतरपुर (म.प्र.)	9424923726
अरविंद जैन, मनासा (म.प्र.)	9425922233
कमल चौधरी, राहतगढ़ (म.प्र.)	9300004458
मनीष जैन, जबलपुर (म.प्र.)	9425382401
जवाहरलाल जैन, खडवा (म.प्र.)	9424526349
सुमेरचंद सिंह, तेंदूखेड़ा (म.प्र.)	9009527928
प्रेमनारायण जैन, बरेली (म.प्र.)	07486-230304
विद्या मूलचंद जैन, सोहागपुर (म.प्र.)	9993960266
प्रदीप कुमार जैन, आरोन (म.प्र.)	9425720763
शंभु कुमार बाकरीवाल, खोतागंज (म.प्र.)	9893155967
नीरज जैन, दिल्ली	9810035356
अशोकजी जमादार, दिल्ली	9810210357
अतुल जैन, दिल्ली	9910059332

इनके अलावा जिनके नाम अभी छूट गये हैं वह शीघ्र ही सूचित करें जिससे उनका नाम अगले अंक में प्रकाशित हो सके।

मुकेश जैन, ऋषभविहार दिल्ली	9350097678
अजितप्रसाद, सब्जीमंडी दिल्ली	11-35350324
गोपाल लोढ़ा, भीलवाड़ा (राज.)	9829604582
मुकेश जैन, गाजियाबाद (उ.प्र.)	8439570898
सुरेन्द्र जैन, मथुरा (उ.प्र.)	9412729442
ज्योति जैन, खतौली (उ.प्र.)	9412889449
छोटपहलवान, ललितपुर (उ.प्र.)	9451659168
डॉ. गरीब, कारजालाड़ (उ.प्र.)	9850366891
अनमोल टूडर्स, ललितपुर (उ.प्र.)	9450035330
रमेशचंद जैन, सहारनपुर (उ.प्र.)	9761225590
डॉ. प्रतिभा पोंडे, औरंगाबाद (महा.)	9860820784
मुनीश जैन एडवोकेट, मुंबई (महा.)	9323811455
सोमचंदजी, भुलेश्वर मुंबई (महा.)	022-22013113
नेन्द्रकुमार सा. शिरपुर (वाशिम)	8888117177
डॉ. नितिनजी, (परभणी) (महा.)	9552229680
धन्यकुमार जैन, साबरमती (गुज.)	7874530667
श्रेयास जैन, अहमदाबाद (गुज.)	9426544317
ओमप्रकाशजी, अहमदाबाद (गुज.)	9227411031
अशोक जैन, केकड़ी (गुज.)	9214528077
सुरेश जैन, हिममतनगर (गुज.)	0277-2240930
कनकमल जैन, परतापुर (राज.)	9929217250
सुमतिलाल जैन, निर्बाहेड़ा (राज.)	9414832352
विमलचंद कजौलिया, झालावाड़ा (राज.)	9251487922
जिनेन्द्र जैन, सुमेरपुर (राज.)	9414123025
कनकमल जैन, परतापुर (राज.)	9929217250
पारस जैन, जयपुर (राज.)	9414047506
संजय जैन, अम्बाला कैट (हरि.)	9215926605
राजकुमार चौधरी, नारनौल (हरि.)	9416704407
राजेन्द्र अजमेरा, धनबाद (बिहार)	9423180208
नवीन कुमार जैन, खड़गपुर (पं. बंगाल)	9474896686

भारतीय साहित्य की अनुपम कृति : मूकमाटी

• डॉ. रंजना पटोरिया, कटनी (म.प्र.) •

कुन्दकुन्द सम चर्या जिनकी, समन्तभद्र सी आन है ।

मानतुंग सम भक्ति जिनकी, जिन आगम श्रद्धान है ।

जिनके मुख से झरती रहती, सम्यक्ज्ञान की धारा है ।

ऐसे गुरुवर विद्या सिन्धु को, शत शत नमन हमारा है ।

आचार्य विद्यासागर द्वारा लिखित **मूकमाटी** महाकाव्य का सृजन आधुनिक भारतीय साहित्य की एक अनुपम उपलब्धि है। चार खंडों में विभजित यह काव्य लगभग 500 पृष्ठों में समाहित है। पहला खंड - माटी की उस प्राथमिक दशा के परिशोधन की प्रक्रिया को व्यक्त करता है जहाँ वह पिंड रूप में कंकर कणों से मिली जुली अवस्था में है। कवि कल्पना में मंगल घट अविरल है, लेकिन उसमें प्रकृति के विपरीत कंकर मिले हैं। दूसरे खंड में संत कवि ने साहित्य बोध को अनेक भाषाओं में अंकित किया है। तीसरे खंड में कुम्भकार के रूप में माटी के विकास कथा के माध्यम से पुण्य कर्म के सम्पादन से उपजी श्रेयकर उपलब्धि का चित्र है। चौथे खंड में ... घट को कुम्भकार ने घटाकर देकर साधु के लिए प्रस्तुत किया है।

मूकमाटी महाकाव्य में अनुपम मणिमाला के मोतियों को पिरोया गया है। जिसका दर्शन श्रमण संस्कृति पर आधारित है। इसके साथ ही रत्नत्रय की उपयोगिता स्त्री जीवन के लिए कितनी अनोखी है। ये दिखाकर स्त्री जीवन के हर मोड़ पर उसे जोड़ा है। यही उसकी आधुनिक कल की प्रासंगिकता है। यह ऐसा काव्य है जो त्रस्त, पीड़ित, दुखित, भ्रमित स्त्री को महापंथ का रास्ता दिखता है। स्त्री पददलित होकर भी दूसरों को दुखी नहीं देखना चाहती। मूकमाटी में सारी सफलतायें नारी रूप में प्रतिनिधि पात्रों में प्रतिबिम्बित हुई हैं।

नारी = न + अरि = वह जिसका कोई शत्रु नहीं।

महिला = मही = पृथ्वी या जननी, ल = जो जीवन में मंगलमय महोत्सव लाती है और पुरुष को गंतव्य मार्ग का निर्देश करती है। इधर महिला का एक अर्थ वह मठा-महेरी खिलाने वाली होती है, यह बुन्देलखण्ड का स्वादिष्ट व्यंजन है।

अबला = जो बला नहीं वो अबला - अर्थात् जो किसी प्रकार का संकट नहीं बनती, समस्या उत्पन्न नहीं करती, लेकिन उसके बिना पुरुष निर्बल बना रहता है।

कुमारी = 'कु' अर्थात् पृथ्वी माँ' अर्थात् लक्ष्मी 'री' अर्थात् देने वाली। पृथ्वी सम्पत्ति युक्त कुमारी होने तक ही रहेगा। तभी तक लोग कुमारियों को मंगलसूचक मानेंगे।

स्त्री - 'स' याने संयम शील, 'त्री' याने पुरुषार्थ, त्रय - धर्म-अर्थ-काम में पुरुष को कुशल संयम बनाना। काम पुरुषार्थ को निर्दोष बनाने के लिए गर्भधारण करती है। अर्जित सम्पत्ति को समुचित विसरण कर अपव्यय रोकती है। दया, दान, पुजादी सत्कर्मों में सहयोग कर धर्म परम्परा की रक्षा करती है।

सुता - 'सु' याने अच्छा 'ता' याने भाववाचक अर्थात् जो अच्छे का श्रोता है वह सुता है।

दुहिता - दूसरों के हित की भावना रखती है, इसलिए वह सबकी जननी है। उसके सामने दूसरा कोई पिता पितामह नहीं। वह पिता माता दोनों का हित करती है।

अंगना - अंग के अतिरिक्त वह चिरंजन शाश्वत निरंजन तत्व लिए घूमती है। नारी के सभी रूपों जैसे माता पत्नी कन्या की व्याख्या आचार्यश्री ने यथार्थ रूप से की है जो आज योग्य ही नहीं क्रांतिकारी भी है। प्राचीन ग्रन्थों से आज तक नारी को अनेक दूषण से युक्त, बाधा डालने वाली, तपस्या भंग करने वाली आदि रूपों से सम्बोधित किया गया है, लेकिन पहली बार इतना उदात्त रूप से आचार्य श्री द्वारा की हुई व्याख्याएं सिर्फ जैन धर्मियों को ही नहीं नारी मुक्ति के नारे बुलंद करने वालों को भी नया आदर्श देने वाली है।

कवि ने नारी के निन्दाव्यन्जक परम्परा को मोड़कर उसे नए आदर्शवादी और प्रशंसनात्मक और योगदान रूप में लाकर समाज के सामने प्रस्तुत किया ताकि समाज स्त्री के रूप को पहचान सके। नारी का संयम समता-सहयोग और समन्वय जो समाज के पारस्परिक व्यवहार को निर्मल स्पष्ट और प्रेममय बनता है।

स्वयं पतिता हूँ

और पातिता हूँ औरों से,

अधम पापियों से, पद दलिता हूँ माँ !

सुख मुक्ता हूँ

दुःख युक्ता हूँ

तिरस्कृत हूँ, त्यक्ता हूँ माँ !

इसकी पीढ़ी अव्यक्ता है

व्यक्त किसे सम्मुख करु !

आचार्यश्री जी ने कहा नारी में विकास की अनगिनत संभावना भरी हुई है। उसे यदि समुचित एवं समायोजित वातावरण मिले तो वह वट के रूप में विशालकाय धारण कर सकती है। धरती माँ ने भी उसकी शक्ति को पहचाना और उसमें क्षमता को पाया जो साधना की ऊंचाई पर चढ़कर परमात्म पद को प्राप्त कर सकती है। नारी के प्रति उदात्त दृष्टि समूचे महाकाव्य में दिखती है।

ज्ञातृ व्यापार मीमांसक प्रमाण लक्षण की समीक्षा

भारतीय दर्शनों में मीमांसक दर्शन का चिंतन भी काफी गहरा माना जाता है, और उन्होंने भी प्रमाण का लक्षण स्पष्ट करते हुए सन्निकर्ष प्रमाण के लक्षण को और कारक साकल्य न्याय दर्शन के प्रमाण लक्षण को नकारते हुए इन्द्रिय वृत्ति सांख्य प्रमाण लक्षण को सिरे से खारिज करते हुए अपना प्रमाण का लक्षण देखते हुए कहा कि ज्ञातृ व्यापार/ज्ञाता का व्यापार प्रमाण का लक्षण निर्दोष हो सकता है।

इस अपने कथन को आधार देते हुए मीमांसक दर्शन के विद्वानों ने कुछ अपने तर्क भी प्रस्तुत किये हैं जो निम्न है:-

1 - ज्ञाता के व्यापार बिना पदार्थ का ज्ञान नहीं हो सकता है।

2 - कारक तभी कारक कहा जा सकता है जब उसमें क्रिया हो इसलिये क्रिया से युक्त द्रव्य ही कारक कहा जाता है जिसमें क्रिया नहीं वह वस्तु मात्र है, उसे कारक नहीं माना जा सकता है। फलार्थी पुरुष केवल वस्तु मात्र को नहीं अपनाते किन्तु जो इष्ट प्रयोजन का साधक होता है उसे ही अपनाते हैं इसलिये भोजन बनाते समय चावल, पानी, आग, और बर्तन इन्हें कारक कहा जा सकता है जो पहले से तैयार है, इन्हें अपनाया जाता है किन्तु यदि भोजन न बनाया जाये तो यह सब वस्तुएँ भोजन के लिये कारक नहीं हो सकती हैं इसी तरह आत्मा, इन्द्रिय, मन और पदार्थ इन चारों का मेल होने पर जब ज्ञाता का व्यापार होता है तभी वह ज्ञान के लिये साधकतम हो सकते हैं इसलिये ज्ञाता का व्यापार प्रमाण कहा जा सकता है।

3 - ज्ञाता का व्यापार ही प्रमाण है क्योंकि पदार्थ का ज्ञान कराने रूप फल को प्राप्त कराने में ज्ञाता का व्यापार ही साधकतम है जो प्रमाण नहीं वह साधकतम भी नहीं होता है जैसे सन्निकर्ष, कारक साकल्य और इन्द्रिय व्यापार।

निष्कर्ष - उपरोक्त तर्कों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि कारक साकल्य सन्निकर्ष, इन्द्रिय व्यापार तो प्रमाण के रूप में नहीं माने जा सकते हैं किन्तु ज्ञाता का व्यापार प्रमाण रूप में सिद्ध होता है। (मीमांसा श्लोक-पृ० 151 शास्त्र दीपिका पृष्ठ 202)

मीमांसक दर्शन के अनुसार ज्ञाता का व्यापार प्रमाण मानने में भारतीय दर्शन के अनेक विचक्षण विद्वान सहमत नहीं हुए उन्होंने इस प्रमाण के लक्षण की खूब आलोचना की जिससे जैन आचार्यों ने इस मीमांसक प्रमाण के लक्षण को अमान्य करते हुए अपने ठोस तर्क सामने रखे, जो निम्न है :-

तर्क 1 - ज्ञाता का व्यापार अपनी सत्ता पृथक् रूप से नहीं रखता है क्योंकि वह प्रत्यक्ष और अनुमान किसी भी प्रमाण से सिद्ध नहीं होता है, अतः उसे प्रमाण नहीं माना जा सकता है।

तर्क 2 - ज्ञाता का व्यापार अपनी प्रत्यक्ष प्रमाण सिद्ध नहीं होता है क्योंकि इन्द्रिय और पदार्थ के सन्निकर्ष से होने वाले प्रत्यक्ष से आत्मा और मन के सन्निकर्ष से होने वाले प्रत्यक्ष से अथवा संवेदना प्रत्यक्ष से इस तरह इन तीनों प्रत्यक्षों में से किस प्रत्यक्ष के द्वारा ज्ञाता का व्यापार सिद्ध होता है यदि पहला पक्ष सामने रखा जाये तो उसके अनुसार भी इन्द्रियों के द्वारा पदार्थ का ज्ञान करती है जो पदार्थ उनसे संबद्ध होता है और जो उनके ग्रहण करने योग्य होता है। ज्ञाता का व्यापार इन्द्रियों के साथ संबंध स्थापित नहीं कर पाता है और न अत्यन्त परोक्ष होने के कारण वह इन्द्रियों के ग्रहण योग्य भी नहीं है।

दूसरे पक्ष आत्मा और मन के सन्निकर्ष से ज्ञाता का व्यापार प्रत्यक्ष रूप से सिद्ध नहीं होता है क्योंकि वह अपने योग्य सुख आदि को ही जान सकता है अन्य बाह्य पदार्थ को नहीं।

तीसरा पक्ष भी सिद्ध नहीं होता है क्योंकि मीमांसक स्वसंवेदन प्रत्यक्ष को नहीं मानते हैं साथ ही अत्यन्त परोक्ष वस्तु का स्वसंवेदन भी नहीं हो सकता है। अतः प्रत्यक्ष प्रमाण से ज्ञाता का व्यापार सिद्ध नहीं होता है।

तर्क 3 - अनुमान प्रमाण से भी ज्ञाता के व्यापार की सत्ता सिद्ध नहीं होती है, साध्य और साधन का संबंध जानकर साधन से साध्य के ज्ञान होने को अनुमान कहते हैं जैसे ज्ञातृ व्यापार है क्योंकि उसके बिना अर्थ का बोध नहीं हो सकता है, यहां पर ज्ञातृ व्यापार साधन है, और उसके बिना अर्थ का बोध नहीं हो सकता है यह साधन है तो साधन और साध्य से संबंध का ज्ञान जहां जहां अर्थ बोध होता है वहाँ वहाँ ज्ञातृ व्यापार होता है इस नियम का ज्ञान किस प्रमाण से होता है प्रत्यक्ष से या अनुमान से। प्रत्यक्ष से तो नहीं हो सकता क्योंकि धुंआ और अग्नि देखकर उनका संबंध जाना जाता है जहाँ-जहाँ धुंआ होता है वहाँ वहाँ अग्नि होती है, इसी तरह प्रत्यक्ष से ज्ञातृ व्यापार अर्थ और अर्थबोध को जानकर ही उनके संबंध ज्ञान हो सकता है किन्तु प्रत्यक्ष से ज्ञातृ व्यापार का बोध नहीं होता है। यदि होता है तो फिर उसके अस्तित्व को सिद्ध करने के लिये अनुमान की आवश्यकता क्या है और यदि साध्य, साधन के संबंध का ज्ञान अनुमान से माना जाये तो ज्ञातृ व्यापार है क्योंकि उसके बिना अर्थ का बोध नहीं हो सकता है इसी अनुमान से मानते हैं या कोई दूसरे अनुमान से। यदि इसी अनुमान से मानते हैं तो परस्पर आश्रय दोष आ जावेगा क्योंकि साध्य साधन के संबंध का ज्ञान हो तो अनुमान बने और अनुमान हो तो साध्य साधन के संबंध का ज्ञान होगा। यदि इस

अनुमान के साध्य साधन के संबंध का ज्ञान दूसरे अनुमान से मानते हे तो दूसरा अनुमान भी साध्य साधन के संबंध ज्ञान के बिना नहीं बन सकता है। अतः तीसरे अनुमान की आवश्यकता पड़ेगी, और तीसरे अनुमान का ज्ञान करने के लिये चौथे अनुमान की इस तरह अनवस्था नामक दोष आता है।

तर्क 4- अर्थापत्ति के प्रमाण से ज्ञाता के व्यापार का अस्तित्व सिद्ध नहीं होता है, जो अनुमान से सिद्ध करने में दोष आये वे ही दोष इस प्रमाण से सिद्ध करने में आते हैं क्योंकि अर्थापत्ति के उत्पादक अर्थ का अपने साध्य के साथ संबंध सिद्ध हो जाने पर ही अर्थापत्ति प्रमाणगमक हो सकता है अन्यथा नहीं।

निष्कर्ष – अतः ज्ञाता का व्यापार का अस्तित्व किसी भी प्रमाण से सिद्ध नहीं होता है।

तर्क 5 – यदि किसी भी प्रमाण से ज्ञाता का व्यापार सिद्ध नहीं होने पर भी उसका अस्तित्व माना जाये तो प्रश्न यह पैदा होगा कि उसका अस्तित्व कारकों से उत्पन्न है अथवा अनुत्पन्न तो हो नहीं सकता क्योंकि वह एक व्यापार है, व्यापार तो कारकों से ही उत्पन्न होता है वह अर्थ प्रकाशन रूप फल का जनक नहीं हो सकता, यदि अभाव रूप ज्ञात व्यापार से भी पदार्थों का बोध हो जाता है तो फिर उसके लिये कारकों की खोज करना ही व्यर्थ है। तो फिर अभाव से ही सबकी इष्ट सिद्धि हो जायेगी।

तर्क 6 – ज्ञाता का व्यापार भाव रूप है तो वह नित्य है या अनित्य, अनित्य तो हो नहीं सकता क्योंकि जो अजन्य है और भावरूप है उसको अनित्य नहीं माना जा सकता है, यदि ज्ञाता के व्यापार को नित्य माना जाये तो सबको सब पदार्थों का ज्ञान होने का प्रसंग आ जायेगा और ज्ञाता के व्यापार की उत्पत्ति के लिए दीपक आदि कारकों को खोजना व्यर्थ होगा।

तर्क 7 – यदि ज्ञाता व्यापार कारकों से उत्पन्न है तो क्रिया रूप है या अक्रिया रूप। यदि क्रिया रूप है तो व्यापक आत्मा हलन चलन रूप क्रिया का आश्रय नहीं हो सकता है, क्योंकि मीमांसक दर्शन में आत्मा को व्यापक माना गया है यदि वह अक्रिया रूप है तो फिर प्रश्न पैदा होता है कि ज्ञानरूप है या अज्ञान रूप। यदि वह ज्ञान रूप है तो अत्यन्त परोक्ष नहीं हो सकता जैसा कि मीमांसक दर्शन मानता है, और यदि अज्ञान रूप है तो घटपट की तरह प्रमाण रूप नहीं हो सकता है क्योंकि, जो अज्ञान रूप है वह प्रमाण नहीं हो सकता है।

निष्कर्ष – उपरोक्त सभी तर्कों के आधार पर यह परिणाम निकलता है कि ज्ञाता का व्यापार प्रमाण का लक्षण उचित प्रतीत नहीं होता है।

जैन जगत के मूर्धन्य विद्वान डॉ. श्रेयांस जैन बड़ौत का राष्ट्रीय विद्वत सम्मेलन में अभूतपूर्व सम्मान



श्रवणबेलगोला, कर्नाटक में 1 से 5 अक्टूबर 2017 तक राष्ट्रीय जैन विद्वत सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन का सर्वाध्यक्ष अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद के यशस्वी अध्यक्ष डॉ. श्रेयांस जैन जी बड़ौत को बनाया गया था। उन्हीं की अध्यक्षता में देश भर से उपस्थित 578 विद्वानों और उनके परिवार की उपस्थिति में परम पूज्य वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री 108 वर्द्धमान सागर जी महाराज सहित 85 पिच्छी के सान्निध्य में कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारुकीर्ति जी भट्टारक स्वामी के नेतृत्व में अभूतपूर्व ढंग से सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद के गौरव को आदरणीय डॉ. श्रेयांस जी ने वृद्धिगत किया। इस सम्मेलन में उपस्थित विद्वानों को पूरा सम्मान-बहुमान, यात्राएं मिली, जो सभी विद्वानों के लिए यादगार क्षण थे, जिसे वे हमेशा संजोकर रखेंगे। डॉ. श्रेयांस जी ने मुम्बई, श्रवणबेलगोला, बेंगलूर, दिल्ली आदि महानगरों में अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद के विशाल अधिवेशन और प्रशिक्षण शिविर आयोजित कराने में महती भूमिका का निर्वाह किया है। युवा विद्वान भी डॉ. साहब से विशेष प्रभावित हैं। आप आगम के गहन अध्येता हैं, आगम की बात करते हैं। आप पंथवाद, संतवाद से दूर रहकर आगमपंथ की बात करते हैं। सरल-सहज आपकी विशेषता है। ऐसे श्रुताराधक मूर्धन्य विद्वान का श्रवणबेलगोला में जो अभूतपूर्व सम्मान और बहुमान हुआ वह सम्पूर्ण विद्वानों के लिए आदर्श और गौरवशाली है। श्रवणबेलगोला में विद्वत सम्मेलन में भारत सरकार के पूर्व प्रधानमंत्री माननीय एच. डी. देवगौड़ा ने सर्वाध्यक्ष डॉ. श्रेयांस जी का आत्मीय अभिनंदन किया, स्वस्ति श्री भट्टारक चारुकीर्ति जी स्वामी ने रजत रथ पर विशाल शोभायात्रा कराकर सर्वाध्यक्ष जी का जो बहुमान किया वह अपने आप में देखने योग्य था। कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारुकीर्ति जी स्वामी जी ने डॉ. श्रेयांसजी को सम्मान देकर गौरवान्वित किया और डॉ. साहब की विद्वत्ता की खूब प्रशंसा की। डॉ. हुकुमचंद जी भारिल्ल जयपुर ने भी उनका बहुमान किया। महासभा अध्यक्ष निर्मल जी सेठी ने उनकी विद्वत्ता को अनुकरणीय बताया।

सम्मेलन के संचालक और शास्त्री परिषद महामंत्री आदरणीय ब्र. जय निशांत जी का योगदान भी महत्वपूर्ण रहा, जिन्होंने आयोजन की सफलता के लिए अपना पूरा समय अर्पित किया। शास्त्री परिषद ऐसे महा मनीषी विद्वानों को पाकर गौरवान्वित है। हम उनके दीर्घायु की कामना करते हैं। आप ऐसे ही जैन धर्म के सिद्धांतों को आकाश के समान उचाईयों पर पहुँचाते रहें।

वीरांगना सावियव्वे

यह वीर महिलारत्न प्रसिद्ध एवं पराक्रमी वीर वायिक तथा उसकी धर्मपत्नी जाबरशे की पुत्री थी और घोर के पुत्र लोक विद्याधर अपरनाम उदय विद्याधर की भार्या थी। सम्भव है कि रक्सगंग का भाजना एवं पोण्यपुर विद्याधर ही यह लोक विद्याधर हो। यह वीरबाला अपने पति के साथ युद्ध में गयी थी और रणभूमि में युद्ध करते हुए ही उसने वीरगति पायी थी। श्रवण बेलगोला की बाहुबली वसति के पूर्व की ओर एक पाषाण पर इस युद्धप्रिय महिला की वीरगति लेखांकित है लेख के ऊपर एक प्रस्तरांकित दृश्य है जिसमें यह वीर नारी घोड़े पर सवार है और हाथ में तलवार उठाते हुए अपने सम्मुख योद्धा पर प्रहार करती चिन्हित

है। हाथी पर चढ़ा हुआ पुरुष भी इस वीरबाला पर जबानी प्रहार कर रहा है। घटनास्थल का नाम बगेयूर लिखा है, जो सम्भवतया वही दुर्ग है जिस पर आक्रमण करके सेनापति चामुण्डराय ने त्रिभुवन वीर को युद्ध में मारकर और गोविन्दर को दुर्ग में प्रविष्ट कराके 'वैरिकुल कालदण्ड' के विरुद्ध प्राप्त किया था। लोकविद्याधर और उसकी वीर पत्नी सावियव्वे भी उस युद्ध में चामुण्डराय की ओर से सम्मिलित हुए लगते हैं। लेख में इस महिला रत्न को रेवतीरानी- जैसी पक्षी श्राविका, सीता जैसी पतिव्रता, देवकी जैसी रूपवती, अरुन्धती जैसी धर्मप्रिया और शासन देवता जैसी जिनेन्द्र भक्त बताया है। ■

पथरीधन चूर्ण

सेवन विधि-

पथरी की अचूक दवा

- 1) यह चूर्ण सुबह भोजन के बीच में लिया जायें।
- 2) पानी दिनभर अधिक मात्रा में लें, पेट खाली न हो।
- 3) प्रथम खुराक लेने के बाद, दूसरी खुराक एक दिन छोड़कर ही ली जाये।

नोट-यह औषधि निःशुल्क दी जाती है। ठीक होने पर औषधि निर्माण हेतु सहयोग कर सकते हैं।

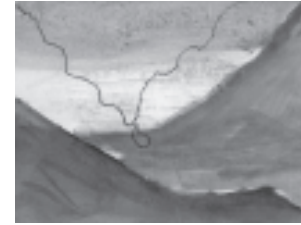
प्राप्ति स्थान -**ब्र. जिनेश मलैया, संस्कार सागर**

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मन्दिर, बॉम्बे हास्पिटल के पास, इन्दौर (म.प्र.)

फोन: 0731-4003506 मो.: 8989505108, 8989121008

दवा देने के विभिन्न स्थानों पर केन्द्र है आप भी अपने यहां केन्द्र चाहते हैं तो सम्पर्क करें

देश सुहाना



भारत अपना देश सुहाना
मौसम रंग-बिरंगे है।
नील गगन में लहराते हैं
ऊंचे झंडे तिरंगे हैं
भारत की पावन भूमि है
गंगा यमुना नदियां है
तुंग हिमालय पर्वत प्रहरी
साक्षी इसकी सदियों है
जन जन इसका अभिनेता है
वीर सिपाही चंगे है
राम और गौतम महावीरों
इसके पुरुष तीर्थंकर है
सत्य अहिंसा धर्म है इसका
कर्म सदा शुभंकर है
अनेकता में एक मंत्र बस
स्याद्वाद ही संज्ञेय है
मानवता पहचान है इसकी
जीवन दर्शन सत्य हैं
विश्वगुरु यह भारत अपना
दया धर्म ही नित्य है
देश के रक्षक सैनिक अपने
सदा ही जयवंते है

जीवन अपना सरल बनाये

जीवन अपना सरल बनाये
कपट कालिमा दूर हटाये
प्रीति वृक्ष का दीमक है यह
चिंता का कारण बनता यह
कपटी के मन भय रहता है
रात दिवस वह बस हरता है
कपटी सोचे तो गंदी होती
झूठा भरा रहता व्यवहार
जीवन में होता लाचार
कपटी से सब बच के रहते
कोई मित्र न उसके रहते



पर्यावरण रक्षक अहिंसा

मेघदत्त नाम का राजा राज्य करता था। वह प्रजापालक एवं न्यायप्रिय था। एक बार उसके राज्य में चारों ओर लहलहाती फसल खड़ी थी। जैसे ही फसल में दाने पकने लगे कि



फसल धीरे-धीरे लहलहाने लगी, किन्तु फसल में धीरे-धीरे कीड़े पड़ने लगे। इन कीड़ों को नष्ट करने वाले पक्षियों को तो राजा पहले ही मरवा

चुका था। परेशान जनता पुनः राजा के पास पहुँची और अपनी चौपट होती फसल का सारा वृत्तांत सुनाया। राजा चिन्ता में पड़ गया। तभी राजा को पता चला कि राज्य में अवधिज्ञानी मुनिराज आये हैं। राजा मुनिभक्त एवं धर्म को मानने वाला तो था ही अतः वह मुनिराज के दर्शन करने हेतु अपने महल से चला। राजा चलते हुए मुनिराज की धर्मसभा में पहुँचा और मुनिराज को नमोस्तु कर धर्मसभा में बैठ गया। धर्मसभा उपरान्त राजा ने मुनिराज से विनयपूर्वक निवेदन किया कि हे मुनिराज इस राज्य की फसल क्यों नष्ट हो रही है, कोई उपाय बताने की कृपा करें।

मुनिराज ने अपने अवधिज्ञान से जान लिया कि राजा ने राज्य के पक्षियों को मरवाने जैसा जघन्य पाप किया है इसलिए उन पक्षियों की कभी व हिंसा के पाप के कारण ये स्थिति

चुका था। परेशान जनता पुनः राजा के पास पहुँची और अपनी चौपट होती फसल का सारा वृत्तांत सुनाया। राजा चिन्ता में पड़ गया। तभी राजा को पता चला कि राज्य में अवधिज्ञानी मुनिराज आये हैं। राजा मुनिभक्त एवं धर्म को मानने वाला तो था ही अतः वह मुनिराज के दर्शन करने हेतु अपने महल से चला। राजा चलते हुए मुनिराज की धर्मसभा में पहुँचा और मुनिराज को नमोस्तु कर धर्मसभा में बैठ गया। धर्मसभा उपरान्त राजा ने मुनिराज से विनयपूर्वक निवेदन किया कि हे मुनिराज इस राज्य की फसल क्यों नष्ट हो रही है, कोई उपाय बताने की कृपा करें।

बनी है। अतः मुनिराज ने राजा से कहा कि राजन हिंसा से कभी भी समृद्धि नहीं आ सकती है, जो पक्षी इन कीटों को नष्ट कर फसल को बचाते हैं ऐसे पक्षियों को मारने का जघन्य पाप किया है अतः राजन अब अपने पाप का प्रायश्चित्त कर पुनः पूर्व स्थिति को प्राप्त करने का प्रयत्न करें। मुनिराज की देशना से राजा की करुणा जाग उठी। उसे अपनी गलती का एहसास हुआ। राजा ने

अपने कृत्य की खूब आलोचना की व पश्चाताप किया और मन ही मन सभी मूक प्राणियों से क्षमा मांगी। कुछ समय बाद राज्य में पुण्य बढ़ा और राज्य में सुख समृद्धि छा गई।

शिक्षा - इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें हिंसा का मार्ग नहीं अपनाना चाहिए। अपने स्वार्थ के लिए मूक प्राणियों का वध नहीं करना चाहिए।

जय बोलो विद्यासागर जी की...

पावन पद पखारे पल पल चंचल लहरें सागर की
चिन्तन चरण आस्था नायक गुरुवर विद्यासागर की ॥
समता क्षमता शुचिता की निर्मल धारा के जो संगम
युगदृष्ट साधक महायति जय बोलो विद्यासागर की।

पथ से भटके दुखी जनों को राह दिखायी
सागर से जिन श्रुत सूत्रों की गहराई पायी
सत्य समझकर विश्व मैत्री का जो देता आह्वान
ऐसे गुरु विद्यासागर को देते सभी बधाई ॥

कांच और कंचन में जिनका है समता का नाता।
घोर तपस्वी राग शून्य जो निज चेतन का ध्याना।
निज अंतर अनुभूति में ही जो सदा लगाये डूबकी।
ऐसे गुरुवर विद्यासागर ही हम सबके भाग्य विधाता ॥

दीप बन अंधेरी रातों में जो हमें मिल गये।
हम भटकते पथिक को सहारा बन गये।
जगमगाती ज्ञान चरण की दिव्य ज्योति
विद्यासागर....



■ शिक्षक छात्र से - पहले फटाका जलाने पर आग की चमक दिखाई देती है, बाद में आवाज सुनाई देती हैं।

छात्र - हमारी आंखें सामने होने से आग की चमक पहले दिखाई देती है व कान पीछे होने से आवाज बाद में सुनाई देती हैं।

■ सेठीजी - अरे क्या कमाल है, आप मेरे बेटे की शादी में दहेज में शतरंज क्यों दे रहे हैं।

समथीजी - क्योंकि मैंने अपने दादाजी की आज्ञा का पालन करते हुए अपनी बेटी की विदाई हाथी घोड़े के साथ करूंगा।

■ भावित - स्कूल से देर से आने पर मम्मी ने पूछा इतनी देर क्यों कर दी।

भावित - आज स्कूल बहुत देर तक लगा रहा। मम्मी - क्यों ?

भावित - क्योंकि स्कूल की घंटी कोई चुराकर ले गया था।

■ लड़का अपनी प्रेमिका से - देखों मैं गरीब हूँ, बड़ा बंगला नहीं है, मेरे पास कार भी नहीं है, फिर भी मैं तुम्हें शादी के बाद दिल में रखूंगा, आंखों में बिठाऊंगा, रुखा-सूखा प्रेम से खिलाऊंगा मेरे दोस्त को देखो अपार धन, दौलत, बंगला करा है। प्रेमिका - एक काम तो मेरा कर दो, दोस्त का मोबाइल नम्बर दे दो।

■ प्रॉपर्टी ब्रोकर (दोस्त से) आज शाम तक बीस लाख रुपयों की व्यवस्था नहीं हुई तो बेइज्जती से बचने के लिए जहर पीना पड़ेगा। क्या तुम मेरी मदद नहीं करोगे।

दोस्त - जरूर, ये लो बीस रूपये।

- जिनेन्द्रकुमार जैन,
बाकल वाले, इन्दौर

गजब पिच्छिका परिवर्तन, गजब विहार

रामटेक ।



आचार्यश्री 108 विद्यासागरजी महाराज ससंघ का पिच्छिका परिवर्तन मात्र 25 मिनट में सम्पन्न हो गया। गुरुजी के मंच पर विराजमान होते ही बिना औपचारिकता के सीधे पिच्छिका परिवर्तन प्रारम्भ हो गया। जबकि पिच्छिका परिवर्तन के संकत भी सुबह 10 बजे प्राप्त हुये थे। मात्र 25 मिनट के अंतराल में कार्यक्रम सम्पन्न होते ही पूज्य गुरुदेव ने रामटेक से विहार कर दिया लोग आश्चर्यचकित रह गये क्योंकि शारीरिक स्वास्थ्य की असमर्थता के कारण विहार की दूर-दूर तक संभावना भी नहीं थी। आचार्यश्री की पिच्छि प्राप्त करने का सौभाग्य भरतेश जैन, नागपुर को मिला।

मुनिश्री अनशनसागर महाराज का समाधिमरण हुआ

शिरड शाहपुर (महा.) । श्री 1008 मल्लिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र शिरड शाहपुर तह. औंढा जिला हिंगोली महाराष्ट्र में चातुर्मास रत परम पूज्य गणाचार्य श्री 108 विरागसागरजी महाराज के शिष्य परम पूज्य श्रमणाचार्य विभवसागरजी महाराज के शिष्य मुनिश्री 108 अनशनसागरजी महाराज का निराकुल समाधि मरण 8 अक्टूबर 2017, रविवार को प्रातः 7.40 पर ससंघ सानिध्य में हुआ।

समाचार

कुण्डलपुर में निःशुल्क चिकित्सा शिविर हुआ सानंद सम्पन्न

दमोह (कुण्डलपुर) । कुण्डलपुर में संत शिरोमणि 108 आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के 50 वें संयम स्वर्ण जयंती के उपलक्ष्य में कुण्डलपुर कमेटी के द्वारा निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन विद्या भवन में किया गया। उपरोक्त जानकारी कुण्डलपुर क्षेत्र कमेटी प्रचार मंत्री सुनील वेजीटेरियन ने बताया कि 500 से अधिक मरीजों ने शिविर में आकर स्वास्थ्य लाभ लिया। शिविर में नगर एवं भाग्योदय तीर्थ सुप्रतिष्ठित चिकित्सकों ने सहभागिता करते हुये अपना बहुल्य योगदान दिया। मरीजों को क्षेत्र की ओर से आवश्यक दवाईयां प्रदान की गई। कार्यक्रम के समापन पर भी चिकित्सकों को स्मृति चिन्ह भेंट कर कमेटी की ओर से सम्मान किया गया।

श्री दिगम्बर जैन महिला आश्रम, सागर को राष्ट्रीय सम्मान

सागर। विगत 78 वर्षों से संचालित श्री दिगम्बर जैन महिला आश्रम सागर जहाँ ग्रामीण क्षेत्रों की लगभग 150 छात्राएं छात्रावास में रहकर अध्ययन करती हैं उनके भोजन एवं आवास की व्यवस्था संस्था में रहती डहै। लगभग प्रतिवर्ष परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहता है। संस्था को श्रीक्षेत्र श्रवणबेलगोला में गोम्पटेश्वर श्री बाहुबली स्वामी महामस्तकाभिषेक महोत्सव में सम्पन्न राष्ट्रीय जैन महिला सम्मेलन के सुअवसर पर आयोजन समिति द्वारा आदर्श जैन महिला संस्था के रूप में प्रशस्ति पत्र एवं एक लाख रुपये की निधि के साथ गौरव सम्मान से सम्मानित किया। यह सम्मान स्वस्ति श्री चारुकीर्ति स्वामी महाराज श्रवणबेलगोला

के सानिध्य में प्राप्त हुआ।

दीक्षाएं

महावीरजी (राज.) । परम पूज्य सन्मति रत्न मुनिश्री सुबलसागरजी महाराज के द्वारा दिनांक 2 नवम्बर 2017 को श्री अतिशयक्षेत्र महावीर जी में भव्य जैनेश्वरी दीक्षा होने जा रही हैं। जिसमें ब्र. शीलचंद भैया (सागर), ब्र. मुन्नालाल भैया (सागर), ब्र. देवचंद भैया (अहमदाबाद) को दीक्षाएं दी जायेगी।

इन्दौर । परम पूज्य आचार्यश्री शिवसागरजी महाराज ने ब्र. विजय भैया (मनावर) को शुल्लक दीक्षा 22 अक्टूबर 2017 को अंजलीनगर इन्दौर में दी गई। जिनका नाम शुल्लकश्री विचक्षणसागर रखा गया।

समाधिमरण हुआ

तेलीवाड़ा (उदयपुर) राज.।

आचार्यश्री सुनील सागरजी गुरुदेव के संघस्थ मुनि 108 श्री संभ्रातसागरजी महाराज की 21 अक्टूबर रात्रि 2 बजे समाधिमरण हो गया। जिनकी डोल यात्रा प्रातः 6.30 बजे हुम्मड भवन, तेलीवाड़ा, उदयपुर से निकाली गई।

गाजियाबाद। परम पूज्य गणाचार्यश्री 108 विरागसागरजी महाराज के संघस्थ मुनिश्री 108 विश्वविज्ञसागरजी महाराज की सल्लेखना समाधि 7 अक्टूबर को प्रातः 11:55 बजे गाजियाबाद के कविनगर में समाधि हो गई। जिनके अंतिम संस्कार हिण्डन नदी पर सम्पन्न किये गये।

स्वच्छता अभियान में देश की और अपने अंदर की स्वच्छता दोनों का ध्यान रखें

पूरे देश में स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है घर, नगर, प्रदेश और देश स्वच्छ हो रहा है। हमें भी चाहिए कि हम अपने अंदर के विकारों जैसे अहंकार, क्रोध, ईर्ष्या, लोभ आदि को हटाकर सुखकारी और स्वच्छ मानव समाज की स्थापना करें और अपने मानव जीवन को सार्थक करें। यह बात आचार्य श्री विशुद्ध सागर महाराज ने गुमास्ता नगर में आत्म देशना प्रवचन माला के अंतिम दिन मुकुट मांगलिक भवन में हजारों श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा धन, वैभव ईट के समान हैं, इस ईट को मंदिर बनवाने में लगा सकते हो और भोग विलास के साधन भी स्थापित कर सकते हो। वैराग्य वस्तुओं को छोड़ने का नाम नहीं, बल्कि वस्तुओं की उपस्थिति में भी उनके प्रति मन में जरा भी राग न रहे, उसका नाम है। जिनको धन से वैराग्य होता है तो वह दान देकर अपना जीवन सफल करते हैं। और जिनको संसार से वैराग्य होता है वह सब कुछ छोड़कर निर्ग्रन्थ साधु बन जाते हैं, तीसरे बैरागी वह होते हैं जो कुछ भी स्वीकार नहीं करते, ऐसे बाल ब्रह्मचारी को कुछ छोड़ना ही नहीं पड़ता। लोग धन कमाने में शरीर का ध्यान नहीं रखते और जब शरीर साथ छोड़ने लगता है तो उसको ठीक करने के लिए धन पानी की तरह बहाने तैयार हो जाते हैं। युवाओं अपने शरीर से उतना ही काम लेना कि अंतिम समय में यह शरीर परमात्मा की आराधना करने के लिए सुरक्षित रह सके।

प्रत्येक क्षेत्र में कार्य करने की सीमा देश का कानून तय करता है। व्यक्तियों को भी चाहिए कि वह अपने चरित्र से कितना नीचे गिरेंगे उसकी सीमा तय करें। आज सारे भारत में बाहुबली मस्तकाभिषेक की चर्चा हो रही है चामुंडराय ने अपने धन का उपयोग श्रवणबेलगोला में बाहुबली की प्रतिमा स्थापित कर किया था जिसके लिए आज भी उनका नाम लिया जाता है और उस प्रतिमा को देख कर सारा देश मुस्कुराता है।

समाज के नेता वोटों के लिए सभी के हाथ जोड़ते हैं ऐसे ही यदि भगवान के सामने हाथ जोड़े तो उनका कल्याण हो जाए।

आचार्य श्री के प्रवचन से पहले सभी श्रद्धालुओं द्वारा पूजा की गई एवं अर्घ्य ढ़ाए गए एवं छोटी नसिया जैन मंदिर में 22 तारीख से होने वाले पंचकल्याणक महोत्सव की पत्रिका भेंट की गई। सभा में आज श्री प्रदीप सिंह कासलीवाल, राजकुमार पाटौदी, टी के वैद, प्रदीप बड़जात्या, प्रतिपाल सिंह टोंगिया, आजाद जैन बीड़ी और हजारो श्रद्धालु उपस्थित थे।

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षा

माह : नवम्बर 2017

संक्षेप में उत्तर दीजिये :

1. आचार्यश्री विद्यासागर जी रात्रि में कितने घंटे विश्राम करते हैं ?
2. आचार्यश्री विद्यासागरजी ने अभी तक कुल कितनी दीक्षाएं दी ?
3. आचार्यश्रीविद्यासागरजी की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से स्वदेशी वस्त्रोद्योग के प्रोत्साहनार्थ जगह-जगह कौन-कौन से केन्द्र खोले गये हैं ?
4. बालक विद्याधर का जन्म कब हुआ था ?
5. बालक विद्याधर के दादा का नाम क्या था ?
6. बालक विद्याधर की मातृभाषा कौन सी थी ?
7. बालक विद्याधर से यह पूछने पर कि घर से मंदिर कितने दूर है इसका क्या उत्तर दिया ?
8. बालक विद्याधर का मंजूषा बंधन संस्कार किसके सानिध्य में हुआ ?
9. मल्लप्पा जी कुल कितनी संतान थी ?
10. मल्लप्पा जी के प्रथम पुत्र का नाम क्या था ?
11. श्रीकांत का जन्म कब हुआ था ?
12. मल्लप्पा जी के द्वितीय संतान का नाम क्या था ?
13. मल्लप्पा जी के द्वितीय संतान का जन्म कब हुआ था ?
14. मल्लप्पा जी के तृतीय संतान का नाम क्या था ?
15. मल्लप्पा जी के तृतीय संतान का जन्म कब हुआ था ?
16. मल्लप्पा जी के चतुर्थ संतान का नाम क्या था ?
17. मल्लप्पा जी के चतुर्थ संतान का जन्म कब हुआ था ?
18. मल्लप्पा जी के पांचवी संतान का नाम क्या था ?
19. मल्लप्पा जी के पांचवी संतान का जन्म कब हुआ था ?
20. बालक विद्याधर की कितने बहिनें थी ?
21. बालक विद्याधर के कितने भाई थे?
22. बालक विद्याधर के भाई अनंतनाथ ने मुनि दीक्षा आचार्यश्री विद्यासागरजी से ली तो उनका क्या नाम रखा गया ?
23. बालक विद्याधर के भाई शान्तिनाथ ने मुनि दीक्षा आचार्यश्री विद्यासागरजी से ली तो उनका क्या नाम रखा गया ?

24. श्री मल्लप्पा जी के कितने बेटों का जन्म शरद पूर्णिमा के दिन हुआ था ?
25. बालक विद्याधर की माताजी का नाम क्या था ।
26. मल्लप्पा जी शिक्षा 1 से 5 वीं तक किस भाषा में हुई ?
27. मल्लप्पा जी शिक्षा 6 से 7 वीं तक किस भाषा में हुई ?
28. मल्लप्पा जी के छठवीं संतान का नाम क्या था ?
29. मल्लप्पा जी के आठवीं संतान का नाम क्या था ?
30. मल्लप्पा जी के आठवीं संतान का जन्म कब हुआ था ?
31. मल्लप्पा जी के नवमी संतान का नाम क्या था ?
32. मल्लप्पा जी के नवमी संतान का जन्म कब हुआ था ?
33. श्रीमन्ति माता का जन्म कब हुआ था ?
34. मल्लप्पा जी का जन्म कब हुआ था ?
35. बालक विद्याधर के चाचा का नाम क्या था ?
36. बालक विद्याधर की दादी का नाम क्या था ?
37. बालक विद्याधर की बड़ी बुआ का नाम क्या था ?
38. आचार्य विद्यासागर शतक किसने लिखा था ।
39. शांतिधारा दुग्ध योजना कहाँ पर चल रही है ?
40. मुमुक्षुओं के आत्म कल्याणार्थ चिकित्सा सुविधा हेतु भाग्योदय तीर्थ का निर्माण कहाँ पर हुआ है ?
41. एक नए नक्षत्र का उदय शीर्षक से आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज पर लेख किसने लिखा था?
42. विद्याधर से विद्यासागर नाम से आचार्यश्री का जीवन वृत्ति किसने लिखा ?
43. मुक्तिपथ का राही लेख किसने लिखा है ?
44. ज्योतिर्मय निर्ग्रन्थ नामक पुस्तक किसने लिखी ?
45. युग पुरुष आचार्य विद्यासागर नामक लेख किसने लिखा है ?
46. अथक पथिक शीर्षक से तीन कविताएँ किसने लिखी ?
47. विद्यासागर गीत गंगा किसने लिखी है ?
48. विद्यासागर पंच विंशतिका किसने लिखी है ?
49. सदलगा के संत महाकाव्य किसने लिखा ?
50. आत्मानुवेषी उपन्यास किसने लिखा ?

(संस्कार सागर अक्टूबर 2017, आचार्यश्री विद्यासागर परिवार दर्शन विशेषांक से)

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षा : नवम्बर 2017

प्रश्नपत्र भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

नाम स्थान

उम्र सदस्यता क्र.

पूर्ण पता

पिन कोड फोन नं..... (एस.टी.डी.)

1	2	3	4	5
6	7	8	9	10
11	12	13	14	15
16	17	18	19	20
21	22	23	24	25
26	27	28	29	30
31	32	33	34	35
36	37	38	39	40
41	42	43	44	45
46	47	48	49	50

आपके नगर के संवाददाता का नाम हस्ताक्षर

नियम :- जब तक दूसरा प्रश्न-पत्र भरकर नहीं भेजते तब तक के लिए।

वर्ग पहेली : 2 2 3

1	2		3	4		5	6	7
8			9		10		11	
		12					13	
	14			15		16		
17				18				
19		20						
		21	22		23		24	25
26			27	28		29		
30				31				

बाएँ से दाएँ

- युगयुगत् तीन लोक तीन काल को जाने वाला ज्ञान (5)
- संतुलित जीवन का आधार, धर्म का लक्षण (3)
- शरीर, काया (2)
- प्रयास, उपाय, युक्ति (3)
- विचार, अभिमत (2)
- नासिका, स्वर्ग (2)
- आने वाला दिन, बीता हुआ दिन (2)
- शक्ति (3) 17. सरोवर (2)
- प्रयास, उपाय, तरकीब (3)
- धरोहर, नगदी, सोना-चाँदी (3)
- प्राण (2) 23. देखा-देखी (4)
- मीराबाई (2) 27. धूल (2)
- किस्मत (3)
- अंधकार, अंधेरा
- सैकड़ा, सौ की संख्या (3)

ऊपर से नीचे

- मकान, घर, भवन (3)
- जंगल (2)
- ज्ञान करने वाला तत्व (3)
- झुका हुआ (2)
- एक अलंकार, जोड़ा (3)
- अर्थ, तात्पर्य (4)
- परिस्थिति, हालत (4)
- रिश्ता, संबंध (2)
- लेखनी (3)
- काया (2)
- कालिमा (2)
- मनुष्य, पुरुष (2)
- रानी लक्ष्मीबाई का शहर (2)
- यश (2)

वर्ग पहेली : 2 2 2 का हल

1	स	मा	2	धि	3	श	त	4	क		5	वि	6	प्र
7	वो		7	क	र			8	म	त				व
9	य	म			11	द	ख	ल		13	प		च	
14	द	म			15	पू	र		16	जी	व	न		
17	श				17	र्ण		कः		18	न	शा		
19	त	र			20	मा	प		21	सः		र		
22	क		22	स्व		23	रि	पु		24	पा			
25		25	दो		26	रा	ज		27	ख	त	ना		
28	दो	हा	दो	ह	न	श	त	क						

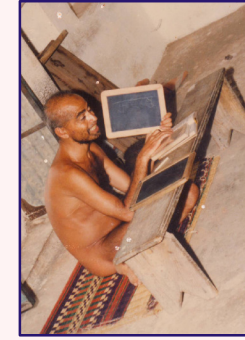
.....सदस्यता क्र.

पता :

वर्ग पहेली प्रतियोगिताओं के विजेताओं को हरसाहमल सत्येन्द्रकुमार जैन (गोकुल बाजार, रेवाड़ी, हरियाणा) की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। प्रथम पुरस्कार : 101 रु. द्वितीय पुरस्कार 51 रु., तृतीया पुरस्कार 41 रु.) प्रतियोगिता भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

समस्या पूर्ति
प्रतियोगिता

भाषा की परिभाषा सीखें



नियम

- आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।
- समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजे।
- पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार १५१ रु., द्वितीय ५१ रु., तृतीय २५ रु.
- पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की १५ तारीख है।



भारत की प्राचीनतम
संस्कृति पर आधारित
कार्यक्रमों का
सैटेलाइट टिवी चैनल



नवग्रह चैनल पर प्रमुख जैन संतो के प्रवचन



संत डियेज्जी
विवासागर महाराज
राशि: 10.30 बजे



नागार्जुन
कुशुसागर महाराज
राशि: 6.30 बजे



आचार्य
विरासागर महाराज
राशि: 9.30 बजे



आचार्य
शान्तसागर महाराज
राशि: 11.00 बजे



ज्योतिषी मुनिजी
प्रतिकसागर महाराज
राशि: 8.30 बजे

श्री नवग्रह चैनल लिमिटेड डी. टी. एच.
एवं केबलों पर देखीए।

765	495	702
733 828	465	805
702	552	502
031	616	65

श्री नवग्रह डी.टी. चैनल पर विज्ञापन, पंचकल्याण कार्यक्रम, प्रभू अभिषेक, एवं अन्य धार्मिक कार्यक्रमों के सीधा प्रसारण हेतु संपर्क करें।

NAVGRAH MEDIA NETWORK PVT. LTD.

NH-4, ROAD, VARUR - 581207 Dist. Hubali (Karnataka)
Mob. No. : 07536888870, 07996446847, 08362237108

■ R. C. Raina (C.O.) - 09999797340,
■ Hemlata - 08941888876,
■ Trilok Jain - 9654720200
■ Deepali r k Gandhi - 8422917190
e-mail : navgrahveertha@gmail.com www.navgrah.tv

श्री नवग्रह चैनल देखने के लिए सभी दर्शकों से निवेदन है की आपने केबल ऑपरेटर से संपर्क करें।

आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के
रवणिम संयम महोत्सव के उपलक्ष्य में
1008 कलशारोहण, जिनबिम्ब वेदी प्रतिष्ठा



तल मंजिल

**ध्वाजारोहण
महामस्तकाभिषेक एवं
आचार्य पदारोहणदिवस**



द्वितीय मंजिल



संत शिरोमणि आचार्य पदारोहण दिवस

संयम सानिध्य

आचार्य विद्यासागरजी महाराज 22 नवंबर, 2017, बुधवार



अर्थिका अद्वैत माताजी



डॉ. उ.के. भट्टा



डॉ. ज.र. भट्टा, टी.के. म.न.व.



पं. सनत कुमार रजवांस



पं. विनोद कुमार रजवांस

**19 नवम्बर
महामस्तकाभिषेक**

**20 नवम्बर
घटयात्रा, ध्वाजारोहण
इंद्र व मंडप प्रतिष्ठा
कलश एवं वेदी शुद्धि**

**21 नवम्बर
यागमंडल
विधान**

**23 नवम्बर
जिनबिम्ब विराजमान
कलशारोहण,
ध्वाजारोहण**

आयोजक-श्री दि. जैन पंचबालयति मंदिर, ए.बी. रोड, विजयनगर, इन्दौर

सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक Click पर

www.sanskarsagar.org